जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 43 संख्याः125 प्रभात बीकानेर, मंगलवार 30 नवम्बर, 2021 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 1.20 रू.

गर्म होते आर्कटिक के कारण स्थानीय वन्य जीवों के लिए खतरा बहुत बढ़ गया है, इनमें प्रमुख हैं मस्क ऑक्स (कस्तूरी बैल)। वैज्ञानिकों ने एक शोध में पाया कि मस्क ऑक्स जिंदा रहने के लिए जूझ रहे हैं और इनके लिए सबसे बड़ा संकट भोजन का है। हालांकि ये जीव बहुत थोड़े से भोजन पर भी जी लेते हैं, पर वो भी इन्हें नहीं मिल पा रहा है, कारण है ग्लोबल वॉर्मिंग। असल में सर्दी में जब उत्तरी ग्रीनलैण्ड में बर्फ होती है तो मस्क ऑक्स भोजन की तलाश में दक्षिणी भाग में चले जाते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण ग्रीनलैण्ड में गर्मियों में ज्यादा गर्मी, बरसात में ज्यादा बारिश और सर्दी में ठंड और ज्यादा पड़ने लगी है, जिसकी वजह से उत्तरी भाग में बर्फ ज्यादा हो गई है, खासकर ठोस बर्फ, जिसके कारण ये पशु दक्षिण में नहीं जा पा रहे हैं, ऐसे में उनके बच्चों के भूखे मर जाने का खतरा बढ़ रहा है। वहीं, गर्मी में मस्क ऑक्स उत्तर की तरफ जाते हैं, लेकिन ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण तापमान ज्यादा बढ़ रहा है, ऐसे में वे उत्तर दिशा में और आगे तक जा तो सकते हैं पर अन्ततः आर्कटिक के अंतिम उत्तरी छोर पर पहुँचने के बाद उनके पास जाने के लिए जगह नहीं बचेगी। डैनमार्क के वैज्ञानिकों की एक टीम ने मस्क ऑक्स का अध्ययन करने के लिए ग्रीनलैंड की यात्रा की थी, जिसमें उन्होंने मस्क ऑक्स को नाक से ठोस बर्फ को तोड़ने की असफल कोशिश करते देखा, ताकि बर्फ में दबी घास खा सकें। टीम के सदस्य कार्स्टन ग्रोन्डाल ने कहा कि ''ये बैल ढीली पाउडर जैसी बर्फ को तो हटा देते हैं पर उत्तरी ग्रीनलैंण्ड में ठोस बर्फ ज्यादा है जिसे वो हटा नहीं पाते।'' शोधकर्ताओं ने कहा कि ''हमारे जाकनबर्ग रिसर्च स्टेशन के आसपास ही गत 20 सालों में आर्कटिक की जलवायु में काफी बदलाव आया है। गर्मी के मौसम में तापमान तीन से छः डिग्री तक बढ़ गया है। तापमान बढ़ने का अर्थ है कि इस क्षेत्र में नए परजीवी पनप सकते हैं, बीमारियां फैल सकती हैं। कैनेडा में तो मस्क ऑक्स में एक नई बीमारी भी देखी गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण इस प्रजाति पर दबाव बढ़ता जा रहा है और यह विलुप्ति के कगार पर पहुंच रही है।

भाजपा ने कैसे त्रिपुरा में सूपड़ा साफ किया तृणमूल कांग्रेस का?

जो दवा तृणमूल ने भाजपा को दी थी बंगाल के चुनाव में, उसकी ही ''डोज़'' भाजपा ने दी तृणमूल को त्रिपुरा में

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। पूर्वोत्तर के छोटे से राज्य त्रिपुरा में पूरे देश का ध्यान आकर्षित करने और राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाली चुनावी स्थिति पहले कभी नहीं रही।

त्रिपुरा के नगरपालिका चुनावों में भाजपा की बड़ी जीत और जबरन राज्य में घुसपैठ करने वाली तृणमूल कांग्रेस और सी.पी.आई.(एम) को मिली पराजय ने ममता बनर्जी के एक राष्ट्रीय नेता बनने की सभी उम्मीदों को धूल-धूसरित कर दिया है।

ममता बनर्जी पिछले कुछ समय से राष्ट्रीय स्तर की नेता बनने का अभियान जोर शोर से चला रही हैं। बेलगाम एवं अन्य पार्टियों से ठुकराए गए नेता राष्ट्रीय राजनीति में प्रासंगिक बनने के लिए ममता बनर्जी की पार्टी में शामिल होने को एक अवसर के रूप में देख रहे हैं।

इनमें से प्रथम उम्मीदवार यशवंत सिन्हा थे। उनके बाद कई नेता तृणमूल में शामिल हुए। अंतिम थे हरियाणा के अशोक तंवर और पवन वर्मा।

त्रिपुरा के चुनाव वह मानदंड बन गए हैं जिनसे राष्ट्रीय राजनीति में ममता बनर्जी के रूतबे व स्थिति के दावे का आकलन किया जा सकता है। इसके परिणाम अब उसका खण्डन कर चुके हैं। कुछ अन्य तबाहियों ने बंगाल की इस सुपर स्टार के भविष्य पर प्रहार करना शुरू कर दिया है।

कलकत्ता हाई कोर्ट ने ममता के राइट हैण्ड एवं चुनाव एजेंट शेख सुफ़ीयान की हत्या के एक केस में जमानत याचिका रद्द कर दी है। कलकत्ता हाई कोर्ट ने आदेश दिया कि केस के तथ्यों और साक्ष्य को देखते हुए हत्या के संदिग्ध आरोपी की अग्रिम जमानत मंजूर नहीं की जा सकती।

ममता बनर्जी जिस नंदीग्राम निर्वाचन क्षेत्र में चुनाव लड़कर हार गईं थी, वहां के एक प्रमुख भाजपा कार्यकर्ता की चुनाव बाद हुई हिंसा में हत्या कर दी गई थी। सुफ़ीयान ने सी.बी.आई. जांच के लिए होने वाली अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिए अग्रिम जमानत मांगी थी और हाई कोर्ट ने अब ममता को परेशानी में डालते हुए जमानत मंजूर किए जाने से इंकार कर दिया है। त्रिपुरा के नगर पालिका चुनाव एक से अधिक कारणों को लेकर सुर्खियों में रहे हैं। ममता बनर्जी जो कि राष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य में अपने कद से भी अधिक बहु प्रचारित

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- तृणमूल ने बंगाल के चुनाव में जीत के बाद, हिंसा का खुला ताण्डव किया था। भाजपा कार्यकर्ता सैकड़ों की संख्या में मारे गये या भाग गये। भाजपा ने भी तृणमूल के साथ ऐसा ही बर्ताव किया त्रिपुरा में।
- बंगाल में जीत के बाद, ममता बनर्जी राष्ट्रीय राजनीति में निर्णायक भूमिका देखने लगी थीं तथा तृणमूल के नेता डैरेक ओ'ब्रायन कहने लगे थे, अब बंगाली प्रधानमंत्री का समय आ गया है।
- कई बुझे कारतूस जिनकी शुरूआत हुई थी, यशवंत सिन्हा से, व हरियाणा के अशोक तंवर एवं लेखक व विचारक पवन वर्मा भी ''लेटैस्ट आगमन'' थे, जिनके तृणमूल में शामिल होने से ममता के राष्ट्रीय नेता होने की महत्वकांक्षा को काफी हवा मिली थी।
- इस महत्वकांक्षा की उड़ान में पहला पड़ाव त्रिपुरा को होना था। परन्तु त्रिपुरा में तृणमूल एवं मार्क्सवादी पार्टी की हार ने महत्वकांक्षा को कुचल दिया।
- बंगाल व त्रिपुरा में भाजपा की रणनीति में एक बड़ा फर्क था। बंगाल में भाजपा के चुनाव अभियान में केन्द्रीय नेता हावी थे, पर त्रिपुरा में चुनाव अभियान व संचालन पूर्णतया स्थानीय नेताओं के हाथ में रहा तथा केन्द्र से हस्तक्षेप नगण्य रहा।

महंगाई के खिलाफ होने वाली देशव्यापी रैली की तैयारियों को परखने माकन आएंगे जयपुर

मंगलवार दोपहर 2 बजे प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर बैठक होगी

जयपुर, 29 नवम्बर (का.प्र.)। महंगाई के खिलाफ़ अभियान को गति देने के लिए कांग्रेस पार्टी 12 दिसंबर को दिल्ली में देशव्यापी विशाल रैली करने जा रही है। रैली में जहां देश भर से कांग्रेस कार्यकर्ता और नेता शामिल होंगे तो इसे सफल बनाने के लिए राजस्थान को भीड़ जुटाने की अहम जिम्मेदारी सौंपी गई है। वैसे भी मंत्री पद से हटने के बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा के पास अब संगठन की जिम्मेदारी बची है। अत: अब वे दिल्ली रैली को सफल बनाने के लिए पूरा समय दे रहे हैं।

राजस्थान की सीमाएं दिल्ली से जुड़ी हैं। ऐसे में इस महंगाई के खिलाफ होने वाली रैली में प्रदेश से कांग्रेस पार्टी को सबसे ज्यादा उम्मीद है। यही कारण है कि कांग्रेस पार्टी इसे लेकर सक्रिय हो गई है और इस रैली को सफल बनाने के लिए राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद डोटासरा कांग्रेस पदाधिकारियों के साथ ही मुख्यमंत्री और मंत्री परिषद के साथ चर्चा कर चुके हैं।

रैली की तैयारियों को परखने के लिए राजस्थान के प्रभारी महासचिव अजय माकन भी मंगलवार को जयपुर आ रहे हैं। वे इसे लेकर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर बैठक लेंगे।

इस रैली की सफलता सरकार और संगठन के लिए कितनी महत्वपूर्ण है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रैली के 2 सप्ताह पहले मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में बैठकर रैली को सफल बनाने का आव्हान मीडिया के जरिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं से कर चुके हैं। अब इसी कड़ी में राजस्थान प्रदेश प्रभारी अजय माकन, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा मंगलवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में दिल्ली में होने वाली बैठक को सफल बनाने के लिए मंत्रियों, विधायको, विधायक प्रत्याशियों, सांसद प्रत्याशियों, पीसीसी पदाधिकारियों और निवर्तमान जिला अध्यक्षों को बुलाया गया है। मंगलवार को दोपहर 2 बजे होने वाली इस बैठक के जरिए इन सभी नेताओं के साथ राजस्थान कांग्रेस के तीनों प्रमुख नेता ज्यादा से ज्यादा कार्यकर्ताओं को ले जाने का रोड मैप तैयार करेंगे।

वैसे भी दिल्ली में होने वाली कांग्रेस की रैलियों में राजस्थान हरियाणा उत्तर प्रदेश और पंजाब पर ही सबसे ज्यादा भीड़ ले जाने का दारोमदार रहता आया है क्योंकि यह तमाम प्रदेश दिल्ली से नजदीक पड़ते हैं। यही कारण है कि राजस्थान से रैली में 30 -35 हजार लोगों को ले जाने की तैयारियां की जा रही हैं।

यू-टर्न से सभी खुश नहीं सरकार में

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। संसद सत्र का पहला दिन कृषि कानूनों को वापस लिये जाने तथा मोदी सरकार द्वारा हमला किये जाने के नाम रहा।

सरकार ने तीनों कृषि कानून बिना किसी चर्चा के वापस ले लिये तथा विपक्ष को जबरदस्ती खामोश कर दिया। विपक्ष इन कानूनों तथा उन किसानों की दुर्दशा पर बहस करना चाहता था, जो पिछले सवा साल से सड़कों पर संघर्ष कर रहे हैं।

- इन लोगों को शिकायत है कि, पहले तो पार्टी ने सभी भाजपा सांसदों को, इन विधेयकों के पक्ष में, ''डिफैन्स'' में पूरा जोर लगाने के लिये कहा और फिर बिना बहस के ही कानून वापस ले लिये गये।

इसके शीघ्र बाद ही, राज्यसभा के सभापति ने कांग्रेस, टी.एम.सी. तथा शिवसेना के 12 विपक्षी सांसदों को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया। शीतकालीन आज ही शुरू हुआ था। यह निलम्बन मानसून सत्र के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दोनों सदनों ने पांच-पांच मिनट दिये कृषि विधेयकों को

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। चार सप्ताह चलने वाला संसद का शीतकालीन बड़े हंगामे, उत्तेजना एवं क्षोभ में शुरु हुआ तथा पहले लोकसभा में तथा उसके बाद राज्यसभा में वह विधेयक, किसी तरह की चर्चा कराये बिना, पाँच-पाँच मिनट में पारित हो, जो

- खड़गे राज्यसभा में, विधेयकों के पक्ष में दिये गये धरनों में 700 किसानों की मृत्यु की बात शुरू कर ही रहे थे कि, राज्यसभा के उपसभापति ने टोक कर बहस को रूकवाया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान का ''साइड शो'' लखनऊ में

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। उत्तर प्रदेश की बड़ी चुनावी लड़ाई में राजस्थान का कोण भी जुड़ गया है। मरु-प्रदेश के बेरोजगार युवाओं के एक ग्रुप ने लखनऊ में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के बाहर धरना शुरु कर दिया है तथा कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा से भेंट करने की माँग की है।

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ के बैनर तले जयपुर में इस महीने के शुरु में 47 दिवसीय विरोध-प्रदर्शन कर चुका है। ग्रुप की माँग थी कि उन रिक्त पदों पर नियुक्तियाँ प्रदान की जायें, जिनकी भर्ती हेतु राजस्थान सरकार परीक्षाएं आयोजित कर चुकी है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विरोध प्रदर्शन कर रहे इन युवाओं से समझौता-वार्ता करने अपने नवनियुक्त सलाहकार दानिश अबरार को भेजा था, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला तथा इस ग्रुप ने 23 नवम्बर को अपना धरना-स्थल लखनऊ को बना लिया।

जाहिर है कि यह घटना मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के लिये परेशानी का कारण बन गई है, जो पार्टी की अंदरुनी खींचतान के कारण लम्बे समय से परेशान चल रहे हैं। मुख्यमंत्री इस कदम को उनके ''राजनैतिक विरोधियों द्वारा प्रेरित कदम'' मान रहे हैं। गहलोत का कहना है कि राजस्थान में सभी राज्यों से ज्यादा नौकरियाँ दी गई हैं। आंदोलन-स्थल के रुप में लखनऊ का चयन करने का उनका कदम आखिर क्या बताता है? गहलोत ने आगे कहा कि युवाओं के इस ग्रुप की रुचि नौकरियों से कहीं ज्यादा राजनीति में है। ''उन्होंने कहा, ''अगर उन्हें नौकरी दी भी जाती है तो ये नौकरी लेंगे नहीं, क्योंकि उनमें से कुछ लोग तो राजनीति में जाना चाहते हैं।''

प्रियंका गांधी वाड्रा को उत्तर प्रदेश के युवाओं में तवज्जो मिलती रही है। कांग्रेस ने सत्ता में आने की स्थिति में राज्य में 20 लाख नौकरियाँ देने का वादा भी किया है। उक्त महासंघ के आंदोलनकारियों का मानना है कि वाड्रा उनकी बात को ध्यान से सुनेंगी। इससे पूर्व यह ग्रुप विरोध-प्रदर्शन की अभिन्न रणनीतियाँ अपना चुका है, जिनमें शामिल हैं- कमीज़ उतारकर प्रदर्शन करना, राज्य के मंत्रियों को गुलाब के

- बेरोजगार युवकों ने लखनऊ में धरना दिया, प्रियंका गांधी से मिलने के लिये।
- अटपटी स्थिति बनती देख, मु.मंत्री ने सलाहकार दानिश अबरार को जिम्मेवारी सौंपी, इन युवकों से बातचीत करने के लिये।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिना बहस के कृषि कानून वापस लिये गये संसद में

साथ ही पिछले मानसून सत्र में सदन में हाथापाई, महिला मार्शल के साथ अभद्रता आदि ''अपराधों'' के कारण राज्यसभा के बारह सांसद निलंबित किये गये

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। संसदीय परम्पराओं के प्रतिघोर-असम्मान दर्शाते हुए अन्तर्गत, राज्यसभा के 12 विपक्षी सांसदों को मानसून सत्र के अंतिम दिन उनके कथित ''उद्दण्ड'' व्यवहार के परिणामस्वरुप आज शुरु हुये शीतकालीन सत्र से निलम्बित कर दिया गया।

पूरी दुनिया के संसदीय लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका को स्वीकार करने या उस पर ध्यान देने से इंकार करते हुये, सत्तापक्ष द्वारा पेश किये गये निलम्बन प्रस्ताव में कहा गया, ''इन सांसदों ने दुराचरण, तिरस्कारपूर्ण, उग्र तथा अनियंत्रित व्यवहार तथा सुरक्षाकर्मियों पर इरादतन हमलों के अभूतपूर्व कृत्य स्वैच्छया किया था।''

निलम्बित सांसदों की सूची में शमिल हैं- शिव सेना की प्रियंका चतुर्वेदी तथा अनिल देसाई, तृणमूल कांग्रेस की डोला सेन तथा शान्ता क्षेत्री, सी.पी.एम. के एलमा राम करीम तथा कांग्रेस के छः सांसद।

एक संयुक्त बयान में विपक्ष ने कहा है कि यह निलम्बन ''अनुचित, अकारण एवं अलोकतांत्रिक'' है। सभी विपक्षी दलों के राज्यसभा कल एक मीटिंग करके आगे की रणनीति बनायेंगे। लेकिन, इस पत्र पर तृणमूल कांग्रेस ने हस्ताक्षर नहीं किया, तृणमूल कांग्रेस विपक्ष की मीटिंग में भी शामिल नहीं हो रही है।

पूर्ववर्ती सत्र में किये गये काम के लिये, नए सत्र में सांसदों के खिलाफ कोई कार्यवाही करने का अब तक कोई पूर्वोदाहरण नहीं है। नियम 256, जिसके तहत वे निलम्बित किये गये हैं, कहता है कि किसी सांसद को ''उस अवधि के लिये निलम्बित किया जा सकता है, जो उस सत्र की शेष अवधि से ज्यादा न हो।''

इस नियम का उल्लेख करते हुये, राष्ट्रीय जनता दल के मनोज झा ने कहा कि अगर यह निलम्बन वापस नहीं लिया गया तो विपक्ष पूरे शीतकालीन सत्र का बहिष्कार करेगा। अस्त-व्यस्त स्थिति में चला मानसून सत्र, जिसमें ''पैगासस स्पाई वेअर'' के मुद्दे पर चर्चा की माँग को लेकर सरकार और विपक्ष में तनातनी चल रही थी, स्तब्ध कर देने वाली उग्रता तथा महिलाओं की हाथापायी के आरोपों के बीच 11 अगस्त को समाप्त हुआ था। सदन की स्थिति विस्फोटक हो गई थी, क्योंकि जनरल इन्श्योरेन्स बिजनैस (नैशनलाइजेशन) अमेंडमेंट बिल को प्रवर समिति को सौंपे जाने की मांगों के बावजूद, इस विधेयक को पारित कर दिया गया था। सदन की कार्यवाही की सी.सी.टी.वी. फुटेज, विपक्षी सदस्यों को राज्यसभा के अंदर सुरक्षाकर्मियों से हाथापाई करते हुये दिखा रही हैं। काले झंडे लिये हुये सांसद मेजों पर चढ़े हुये तथा फाइलों तथा कागज़ातों को बिखेरते हुये दिखाई दे रहे थे। जहाँ सरकार ने विपक्ष पर आरोप लगाया कि उसने महिला मार्शलों से हाथापाई की, वहीं विपक्ष ने एक संयुक्त बयान में आरोप लगाया कि ''विपक्षी नेताओं तथा सदस्यों, जिनमें महिला सांसद भी शामिल थीं, से हाथापायी करने के लिये'' बाहरी लोग ''अंदर लाये गये थे।''

सरकार ने विपक्ष के इन दावों का खंडन किया कि ''बाहरी लोग'' अंदर लाये गये थे, तथा अन्ततः इस मामले को जाँच के लिये सांसदों की एक विशेष कमेटी को सौंप दिया गया था। लेकिन कांग्रेस इस प्रकार की किसी भी कमेटी से अलग रही थी तथा उसने कहा था कि जाँच के जरिये सांसदों को डरा-धमका कर खामोश करने की कोशिश समाहित रहेगी।

राज्यसभा की सिक्योरिटी रिपोर्ट का कहना है कि एक सांसद ने हाथापाई की थी तथा ''एक पुरुष मार्शल का गला बुरी तरह दबा दिया था तथा सुरक्षा घेरे को तोड़ने के उद्देश्य से उसे अंदर घसीट लाया गया था।'' रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि महिला सांसदों ने एक महिला मार्शल को ''खींचा तथा घसीटा'' था तथा सदन के ''वैल'' में उस पर हमला बोला था।

किसान पिछले एक वर्ष से जिन तीन कृषि बिलों को लेकर दिल्ली की सीमा पर प्रदर्शन करते आ रहे थे, उन्हें रद्द करने के प्रति बहुत कम आदरभाव दर्शाया गया। संसद के सोमवार के मिनिट्स पर गौर कीजिए। लोकसभा में सुबह पारित किए गए विधेयक को दोपहर के भोजन के बाद राज्यसभा की कार्यवाही शुरु होते ही पारित कर दिया गया। विपक्ष ने सरकार की कटघरे में खड़ा करने की कोशिश में जो कि इन विधेयकों को वापस लेकर पहले ही बैकफुट पर है, बहस की मांग की थी।

- विपक्ष ने भी पलटवार में सरकार पर आरोप लगाया कि, चुनाव की दृष्टि से चयन करके सांसदों को निलंबित किया गया है। उदाहरण के लिये आप पार्टी के संजय सिंह को निलंबित नहीं किया गया, हालांकि हंगामे के वीडियो में संजय सिंह को हाथ में काला झण्डा लेकर राज्यसभा सचिवालय के स्टाफ की टेबलों पर चढ़कर नाचते हुए साफ देखा जा सकता है। सरकार आप पार्टी के सांसद को हीरो नहीं बनाना चाहती थी, पंजाब के चुनाव में।
- यहां यह भी उल्लेखनीय है कि, तृणमूल कांग्रेस ने संयुक्त विपक्ष के उस पत्र पर हस्ताक्षर करने से इन्कार कर दिया, जिसमें विपक्ष की पार्टियों का, कल बैठक कर, सांसदों के निलंबन पर रणनीति तय करने के लिये मंथन करने का आव्हान किया गया है।
- विपक्ष में यह भी चर्चा का विषय है कि, जिस रूल के तहत इन सांसदों को निलंबित किया गया है, उसमें साफ लिखा है कि, सांसद का निलंबन केवल संसद के शेष ''पीरियड'' के लिये ही हो सकता है और हंगामे की घटना पिछले सत्र की है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सैन्ट्रल विस्टा का निर्माण क्यों'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 नवम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को केन्द्र सरकार से कहा कि वह देश की राजधानी में निर्माण कार्यों पर 24 नवम्बर को लगाए गए प्रतिबन्ध के बावजूद सैन्ट्रल विस्टा में जोर-शोर से चल रहे निर्माण कार्यों के बारे में अगली सुनवाई तिथि 2 दिसम्बर तक स्थिति स्पष्ट करे।

यह मामला चीफ जस्टिस ऑफ इण्डिया (सी.जे.आई.) एन.वी. रमन्ना की अध्यक्षता वाली एक विशेष बैंच के समक्ष दायर एक याचिका की सुनवाई के दौरान सामने आया। यह याचिका दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में वायु प्रदूषण को लेकर दिल्ली के एक 17 वर्षीय छात्र ने दायर की थी। कोर्ट

- सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से दो दिसम्बर तक जवाब मांगा कि, सुप्रीम कोर्ट द्वारा कन्स्ट्रक्शन पर लगाये गये प्रतिबंध के बावजूद निर्माण कार्य कैसे जारी है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

श्वास की क्रिया के समान हमारे चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता होनी चाहिए। जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है वह अनायास ग्रहण कर लें और जो त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्याग सकें। –टैगोर

और अब कोरोना के नए अवतार ओमिक्रान की दहशत

कोरोना के दो साल होने के बावजूद यह नए नए अवतार लेकर सामने आ रहा है। अब अफ्रीका से यह नया अवतार ओमिक्रान के रुप में दुनिया को हिलाने आ गया है। कोरोना के नए वैरियंट ओमिक्रान को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बैरियट ऑफ कंसर्ट घोषित करने से ही इसकी गंभीरता को समझा जा सकता है।

विषेषज्ञों द्वारा माना जा रहा है कि कोरोना के डेल्टा अवतार से भी यह सात गुणा तेजी से फैलने वाला वैरियंट है। यह भी साफ हो जाना चाहिए कि वैरियंट की गंभीरता को देखते हुए उसे कंसर्ट ऑफ वैरियंट घोषित किया गया है अन्यथा स्थिति में तो सामान्यत: वैरियंट ऑफ इंटरेस्ट की श्रेणी में ही रखा जाता है। कंसर्ट की श्रेणी में गंभीरता को देखते हुए ही डाला जाता है।

विषेषज्ञों द्वारा माना जा रहा है कि यह वैरियंट डेल्टा से भी ज्यादा तेजी से फैलने वाला वैरियंट है। एक अनुमान के अनुसार डेल्टा से सात गुणा अधिक तेजी से यह फैलता है। गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि न्यूयार्क में 15 जनवरी, 2022 तक के लिए आपातकाल की घोषणा कर दी है तो दुनिया के देश दक्षिण अफ्रीका की यात्रा पर रोक लगा रहे हैं।

गौरतलब है कि कोरोना के ही वैरियंट डेल्टा ने अक्टूबर 2020 में भारत में प्रवेश किया और जबरदस्त तरीके से प्रभावित करने के साथ ही जानलेवा साबित हुआ। ओमिक्रान को गंभीरता से लेने का एक कारण यह भी है कि जहां एक और यह वैरियंट तेजी से फैल रहा है वहीं यह भी माना जा रहा है कि वैक्सीन इस पर अधिक असरकारक नहीं है। अफ्रीका में करीब दो माह से प्रभावित कर रहा यह वैरियंट ओमिक्रान पिछले चार से पांच दिनों में ही दक्षिण अफ्रीका के साथ ही हांगकांग, बोत्सवाना, बेल्जियम, जर्मनी, चेक गणराज्य, इजराइल और ब्रिटेन पहुंच गया है। भारत में भी बैंगलोर उतरे अफ्रीका से आए दो मरीज कोरोना संक्रमित मिलने से हडकंप मच गया है पर अभी यह पुष्ट नहीं हो पाया है कि वे ओमिक्रान से ही संक्रमित है या अन्य किसी वैरियंट से। इसी तरह से पुष्कर में तीन फ्रांसिसी महिला पर्यटकों के कोरोना संक्रमित मिलना चिंता का सबब बन गया है।

वर्तमान परिदृश्य में हम सबकी जिम्मेदारी हो जाती है कि लोगों को कोरोना प्रोटोकाल की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए। लोगों को यह समझना होगा कि जीवन है तो सबकुछ है नहीं तो कुछ भी नहीं। ऐसे में अभी सतर्कता जरुरी है और इसे समझना व समझाना होगा।

ओमिक्रान की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि शुक्रवार को देश में शेयर बाजार धड़ाम से गिर गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात में चिंता व्यक्त की तो राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उच्चस्तरीय बैठक कर आवश्यक निर्देश दिए और बूस्टर डोज की तैयारी करने को कहा। हांलाकि देश में कोरोना की चिंता के बीच ही 15 दिसंबर से अंतरराष्ट्रीय उड़ाने शुरु करने की घोषणा की गई है पर इसकी नए सिरे से समीक्षा की आवश्यकता हो गई है। योरोपीय संघ सहित दुनिया के देश अफ्रीका से हवाई उड़ानों पर रोक लगा रहे हैं। अब तक 1200 से अधिक संक्रमित मिलने से दुनिया दहशत में आ गई है। भारत सहित दुनिया के देश स्थितियों पर गंभीरता से नजर रखे हुए है और आवश्यक एहतियाती तैयारी में जुट गए हैं।

दरअसल यह माना जा रहा था कि कोरोना का अभिशाप अधिक दिन नहीं चलेगा पर देखते देखते दो सालों में ही दुनिया के देश इसके पांच वैरियंट से रुबरु हो चुके हैं। सितंबर 2020 में इंग्लैण्ड में अल्फा, मई, 2020 में दक्षिण अफ्रीका में बीटा, नवंबर, 2020 में ब्राजील में गामा, अक्टूबर, 2020 में भारत में डेल्टा और अब ओमिक्रान ने असर दिखाना शुरु कर दिया है। दरअसल वायरस की जीनोमिक संरचना में बदलाव होकर के यह नए वैरियंट का रुप ले लेता है। कोरोना ने वैसे तो पूरी दुनिया में अपना असर दिखाया है पर अमेरिका, ब्राजील, भारत संक्रमण और मौत के मामलों में सबसे अधिक प्रभावित देश रहे हैं।

दरअसल कोरोना जैसी महामारी से जुझने का दुनिया के देशों के सामने यह पहला अवसर आया है। इससे पहले प्लेग, कोलेरा, फ्लू, काला ज्वर, तपेदिक, पोलियो, एड्स, खसरा, चेचक जैसी कई महामारियों से जूझ चुका है। समय के साथ इनका ईलाज भी खोजा गया। पर मजे की बात यह है कि कोरोना के चलते तपेदिक वापिस अपना असर दिखाने लगी है और पिछले दिनों में तपेदिक के कारण मौत के मामलें लगातार बढ़ रहे हैं। सवाल यह है कि कोरोना प्रोटोकाल की बावजूद जिस तरह से कोरोना का थोड़ा असर कम दिखते ही प्रतिबंधों में छूट और शिथिलता बरती जाने लगी तो कोरोना नए अवतार में सामने आने लगा। नो मास्क नो एंट्रीऔर दो गज की दूरी के संदेश के बावजूद धीरे-धीरे इनका असर कागजी रहने से तबाही का मंजर जारी है। लापरवाही के चलते कोरोना है कि थोड़ी राहत देकर वापिस पूरी तेजी से आक्रामक हो रहा है। अभी वैक्सीनेशन भी पूरी तरह से नहीं हो पाया है। वैक्सीनेशन के कम असर के आए दिन आने वाले समाचारों से लोग हतोत्साहित हो रहे हैं सो अलग। दरअसल लोगों में निराशा अधिक व्याप्त होने लगी है। ऐसे में इस सबके साथ ही आशा और विश्वास की बूस्टर डोज ज्यादा जरुरी हो जाती है। मजे की बात यह है कि एक और वापिस कोरोना के मामलें बढ़ने लगे हैं तो दूसरी और शिथिलता भी बढ़ती जा रही है। योरोपीय देशों में पाबंदियों को हटानें को लेकर बड़े प्रदर्शन हो रहे हैं। ऐसे में सबकी जिम्मेदारी हो जाती है कि लोगों को कोरोना प्रोटोकाल की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए। लोगों को यह समझना होगा कि जीवन है तो सब कुछ है नहीं तो कुछ भी नहीं। ऐसे में अभी सतर्कता जरुरी है और इसे समझना व समझाना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

उदयपुर के एम.ए.हुसैन की पेंटिंग को दुबई में मिला सर्वश्रेष्ठ कलाकृति का खिताब

हुसैन की पेंटिंग सवा लाख दिरहम भारतीय मूल्य 25 लाख रूपए में बिक्री

उदयपुर,(कासं)। दुबई के इंडियन कॉन्स्युलेट स्थित यूएई टॉलरेंस वीक -2021 के तहत डॉ. रोमित पुरोहित और पेंट ब्रश आर्ट कम्युनिटी की संस्थापक व सीईओ सोनल पुरोहित द्वारा आयोजित इंद्रधनुष एंड इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ आर्ट एग्जिबिशन एंड वर्क शॉप में उदयपुर के आर्टिस्ट एम.ए. हुसैन की पेंटिंग इस साल दुबई में बिकी सबसे महंगी पेंटिंग्स में अपनी जगह बनाने में कामयाब हुई। सोनल पुरोहित ने बताया कि प्रदर्शनी में सात देशों के कलाकारों ने अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। एग्जीबिशन में कलाकारों की 50 कलाकृतियों का प्रदर्शन किया। प्रदर्शनी में उदयपुर के जाने-माने पेंटर एम. ए. हुसैन की हुसैन बनाम हुसैन कलाकृति को सर्वश्रेष्ठ चुना गया। हुसैन की कलाकृति को सवा लाख दिरहम में खरीदा गया जिस का भारतीय मूल्य 25 लाख रुपए हैं।

- **प्रदर्शनी में सात देशों के कलाकारों ने कलाकृतियों का प्रदर्शन किया**
- **यह पेंटिंग इस साल बिकने वाली सबसे महंगी पेंटिंग्स में से एक है**

उदयपुर के एम.ए.हुसैन द्वारा कलाकृति।

यह पेंटिंग इस साल बिकने वाली सबसे महंगी पेंटिंग्स में से एक है। एग्जिबिशन को और आकर्षक बनाने के लिए इसमें फैशन शो का भी आयोजन किया गया जिसमें 46 कलाकारों ने ब्लू टीशर्ट पहन कर अपनी कलाकृति को प्रदर्शित किया।

इतिहास में पहली बार जाखम बांध नवम्बर माह में छलका

1986 के बाद 20 वीं बार चली चादर

धरियावद,(निसं)। धरियावद से 32 किमी दूर सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण्य की गोद में स्थित राजस्थान का सर्वोच्च ऊंचाई वाला जाखम परियोजना सिचाई बांध लंबे इंतजार के बाद 29 नवम्बर को छलका। जाखम बांध की ऊचाई 31 मीटर (102 फिट) और भराव क्षमता 5 हजार 15 एमसीएफटी है। 1986 में प्रथम बार चादर चली तब से अब तक 20वी बार जाखम बांध लबालब होकर चादर चली है। अधिशाषी अभियंता भगवानसिंह करदम ने बताया कि पश्चिमी हवाओं का दबाव व मानसून रह रहकर उठ रहे है। विगत 10 दिन पूर्व बरसात होने के कारण पानी रिसता हुआ जाखम बांध में आ रहा था जिसके चलते अब जाकर इतिहास में पहली बार जाखम बनने के पश्चात नवम्बर माह में छलका। वही अब जाखम बांध की एलएमसी की नहर छोड़ दी गई है और आरएमसी नहर भी शीघ्र सिचाई हेतु छोड़ी जाएगी जिससे अब तक भराव क्षमता धीरे धीरे कम हो जाएगी जिसके चलते अब जाखम बांध की चादर नही बढ़ सकेगी।

- **जाखम बांध की ऊचाई 31 मीटर (102 फिट) और भराव क्षमता 5 हजार 15 एमसीएफटी है**

धरियावद के जाखम बांध की चादर चलने का नजारा।

अधिशाषी अभियंता रामाधार मीना ने बताया कि जाखम बांध की नहरों से 28 हजार 319 हेक्टर सिचित क्षेत्र में सिचाई की जाती है। क्षेत्र में असिचित सहित 58 हजार हेक्टर भूमि में पैदावार होती है। जाखम बांध बनने के पश्चात अब तक 19 बार चादर चली जिसमें सन 1986 में 2 मीटर 55 सेंटीमीटर, वर्ष 1988 में 15 सेंटीमीटर, 1989 में 85 सेंटीमीटर, 1990 में 1 मीटर 70 सेंटीमीटर, 1991 में 1 मीटर, 1994 में 1 मीटर 80 सेंटीमीटर, 1996 में 1 मीटर 20 सेंटीमीटर, 2001 में आधा मीटर, 2004 में 1 मीटर 85 सेंटीमीटर, 2006 में 3.5 मीटर, 2012 में सवार चार फिट, 2013 में 2 फिट, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019 में 1 मीटर 52 सेंटीमीटर के, वर्ष 2020 में 14 सितम्बर तथा इस सत्र 2021 में इतिहास में पहली बार नवम्बर माह में 29 नवम्बर को चादर चली।

17 मिनट में अनोखी शादी

श्रीमाधोपुर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम लापुंआ में रविवार को मुनीन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट, कुरुक्षेत्र हरियाणा के तत्वावधान में आध्यात्मिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग में समाज में फैली बुराइयों नशा, मृत्यु-भोज, दहेज प्रथा, पाखंडवाद, हिंसा, रिश्वतखोरी आदि को दूर कर एक सभ्य नागरिक बनने व स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान को घर-घर व गांव-गांव पहुंचाने का आग्रह किया।

- **सत्संग के दौरान हुई इस शादी में न घोड़ी, न बैंड-बाजा, न दहेज, ना ही कोई पकवान था**

संत रामपाल जी महाराज की प्रेरणा से सुशीला पुत्री भोमाराम निवासी भवानीपुरा का विवाह हरिपुरा, रेनवाल निवासी पूरणमल पुत्र सोहन के साथ सादगी से हुआ।

दूल्हा-दुल्हन साधारण कपड़ो में गुरु संत रामपाल जी महाराज की तस्वीर के सामने बैठे और मात्र 17 मिनट की गुरुवाणी सुनकर एक दूसरे के साथ वैवाहिक बंधन में बंध गए। सेवादार महेंद्र दास ने बताया कि सत्संग के दौरान हुई इस शादी में न घोड़ी, न बैंड-बाजा, न दहेज, ना ही कोई पकवान था। दोनों तरफ से परिवारों की सहमति से शादी हुई।

हैडकांस्टेबल के निधन के बाद बेटियों की शादी के लिए साथियों ने जुटाए दो लाख रूपये

स्वयं के साथ ही जनसहयोग से एकत्रित दो लाख 121 रुपए की राशि सौंपी

राजसमंद, (निसं)। आमजन की सुरक्षा में 24 घण्टे तत्पर रहने वाले पुलिसकर्मी अपने साथ जवान के लिए भी उतने ही सजग है। कांकरोली थाने में हेडकांस्टेबल पदस्थापित मांगीलाल की बीमारी के चलते पिछले सप्ताह निधन हो गया। हैडकांस्टेबल के घर में उनकी दो पुत्रियों के विवाह होने व परिवार की आर्थिक स्थिति को समझते हुए कांकरोली थाने के पुलिस जवानों ने सहयोग राशि भेंट कर आर्थिक सहयोग दिया। कांकरोली थानाधिकारी योगेन्द्र व्यास की पहल पर कांकरोली थाने के पुलिस अधिकारियों एवं जवानों ने स्वयं की मदद के साथ कुछ सहयोग राशि भी एकत्रित की।

गौरतलब है कि कांकरोली थाने में तैनात देसूरी जिला पाली निवासी हैड कांस्टेबल मांगीलाल की दो बेटियों की 28 नवम्बर को शादी आ गई। बीमारी के चलते मांगीलाल का परिवार पहले से ही काफी आर्थिक संकटों से जूझ रहा था। यह देखते हुए कांकरोली थाना प्रभारी योगेन्द्र व्यास के निर्देशन में सभी जवानों व जन सहयोग से 2 लाख 121 रुपए एकत्र किए गए। इसके बाद सहायक उप निरीक्षक जसवंतसिंह, सूचना अधिकारी सहित कई जवानों ने राशि सुपूर्द की।

- **पुलिसकर्मियों ने दिया सामाजिक सरोकार का अनूठा उदाहरण**
- **लम्बी बीमारी के चलते कांकरोली हेडकांस्टेबल का हो गया था निधन**

राजसमंद में हैडकांस्टेबल मांगीलाल की पुत्रियों व परिजनों को सहायता राशि भेंट करते पुलिसकर्मी।

राशिफल मंगलवार 30 नवम्बर, 2021

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2078, हस्त नक्षत्र रात्रि 8:34 तक, आयुष्मान योग रात्रि 12:02 तक, बव करण दिन 3:14 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-तुला, बुध-वृश्चिक, गुरू-कुम्भ, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-वृष, केतु-वृश्चिक राशि में।

कुमार योग रात्रि 8:34 तक है। द्विपुष्कर योग रात्रि 2:14 से सूर्योदय तक है। राजयोग रात्रि 2:14 तक रहेगा। आज उत्पन्न (वैतरणी) एकादशी व्रत और पदम प्रभु मोक्ष दिन (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:39 से 10:57 तक, लाभ-अमृत 10:57 से 1:34 तक, शुभ 2:52 से 4:11 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 5:29

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन का व्यय हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

वृष
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि हो सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर
धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि हो सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मीन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

आठ दिनों में 1500 किमी की दूरी तय करेगी स्वर्णिम विजय बाइक रैली

जयपुर, (कासं.)। कोटेश्वर, गुजरात से स्वर्णिम विजय वर्ष बाइक रैली को लेफ्टिनेंट जनरल पी एस मन्हास, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, डेजर्ट कोर ने हरी झंडी दिखाकर 29 नवंबर को रवाना किया।

रैली में भारतीय सेना, भारतीय वायु सेना, भारतीय नौसेना, बीएसएफ, तटरक्षक बल, मीडियाकर्मी और मोटरसाइकिल के कुल 60 सवार भाग ले रहे हैं। वे भुज, अहमदाबाद, उदयपुर, जोधपुर, जैसलमेर से गुजरेंगे और अंत में 05 दिसंबर 2021 को लोंगेवाला में लोंगेवाला दिवस समारोह के साथ समापन होगा और आठ दिनों की अवधि में लगभग 1500 किलोमीटर की दूरी तय करेंगे।

रैली को हरी झंडी दिखाते हुए डेजर्ट कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग ने कहा कि हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अपनी सीमाओं की रक्षा करने वाले और दुश्मन के नापाक इरादों से अपने क्षेत्र की रक्षा करने वाले हमारे दिग्गजों के द्वारा दिये गए सर्वोच्च बलिदान को याद करें।

उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन लोगों से जुड़ने और उन्हें सशस्त्र बलों की वीरता और बलिदान की याद दिलाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जावा मोटरसाइकिल के सहयोग से आयोजित की जा रही यह रैली, 1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर हमारे राष्ट्र की जीत के 50 वें वर्ष को चिन्हित करने के लिए देश भर में आयोजित होने वाले समारोहों का एक हिस्सा है।

गुजरात से स्वर्णिम विजय वर्ष बाइक रैली को लेफ्टिनेंट जनरल पी एस मन्हास, जनरल ऑफिसर कमांडिंग, डेजर्ट कोर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

नीति आयोग ने मंजूर किया तनोट-लोंगेवाला- बबलियान पर्यटन परिपथ

जैसलमेर, (नि.सं.)। अन्तर्राष्ट्रीय सरहद पर अवस्थित जैसलमेर जिले में सीमावर्ती पर्यटन को बढावा देने को लेकर जिला कलक्टर आशीष मोदी की पहल जबरदस्त रंग लायी है। इस संबंध में जिला कलक्टर के निर्देश पर बनाए गए प्रोजेक्ट को नीति आयोग द्वारा मंजूर कर लिया गया है।

इस प्रोजेक्ट के अन्तर्गत सरहदी पर्यटन को बढ़ावा दिए जाने के साथ ही सीमा सुरक्षा बल की कार्य शैली के बारे में पर्यटकों में जागरूकता लाने तथा रोजगार के नये अवगसर सृजित करने के उद्धेश्य से तनोट-लोंगेवाला-बबलियान परिपथ को विकसित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि जैसलमेर जिला आकांक्षी कार्यक्रम में शामिल है, जिसके अन्तर्गत जिला कलक्टर आशीष मोदी के प्रयासों से नीति आयोग ने सीमावर्ती पर्यटन को बढावा देने के इस प्रोजेक्ट को स्वीकृति प्रदान की है।

अधिकारी संवेदनशीलता के साथ आमजन की समस्याएं सुने : मेघवाल

बीकानेर, (कासं)। आपदा प्रबन्धन एवं सहायता विभाग मंत्री गोविन्द राम मेघवाल ने कहा कि प्रशासन गांवों के संग अभियान राज्य सरकार का महत्वकांक्षी अभियान है। अधिकारी राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप काम करते हुए शिविरों में पहुंचने वाले ग्रामीणों की समस्याओं का संवेदनशीलता के साथ निराकरण करें।

मेघवाल ने सोमवार को ग्राम पंचायत 1 के.एम. में प्रशासन गांवों के संग अभियान के तहत आयोजित शिविर का अवलोकन करते हुए अधिकारियों को ये निर्देश दिए। आपदा प्रबंधन मंत्री ने शिविर में लगे 22 विभागों के काउंटर का निरीक्षण किया और विभागों को प्राप्त आवेदनों की जानकारी ली। मौके पर ही प्रकरणों के निस्तारण के निर्देश भी दिए।

मंत्री मेघवाल ने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीणों की तकलीफों को दूर करने के लिए गांवों में पहुंच रही है। उन्होंने आम लोगों से भी अधिक से अधिक संख्या में शिविरों में पहुंचकर अपनी समस्याओं का निराकरण करवाने की अपील की। शिविर में उपखण्ड अधिकारी, विकास अधिकारी राजेन्द्र जोईया, तहसीलदार कुलदीप कस्वां सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, जनप्रतिनिधिगण एवं ग्रामवासी मौजूद थे।

शिविर प्रभारी ने बताया कि शिविर में राजस्व विभाग द्वारा नामान्तरण के 83, दुरूस्ती के 100, खाता विभाजन के 56, रास्ते के 2, सीमाज्ञान के 3, सार्वजनिक प्रयोजनार्थ आरक्षण-

ग्राम पंचायत 1 के. एम. में प्रशासन गांवों के संग शिविर में लाभार्थियों को कैबिनेट मंत्री गोविन्द राम मेघवाल ने पट्टे वितरित किए।

- नामान्तरण के 83, दुरूस्ती के 100, खाता विभाजन के 56 मामलों का निस्तारण किया, 154 पट्टे जारी

आवंटन के 3, आबादी विस्तार के 2 प्रकरणों सहित जाति व मूल निवास प्रमाण पत्र 70 प्रकरण निस्तारित किये गए। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा पीएम आवास योजना के लाभार्थियों को द्वितीय किश्त के भुगतान के 2 व तृतीय किश्त के 3 लोगों को लाभान्वित किया गया। वहीं 154 लोगों को आवासीय पट्टे, नवीन जॉब कार्ड 190 जारी किए गए तथा 712 जॉब कार्ड सत्यापित किये गए तथा जन्म-मृत्यु के 32 प्रमाण पत्र जारी किये गए। उन्होंने बताया कि कृषि विभाग द्वारा मृदा के 20 नमूनों का संग्रहण, 20 मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित, 12 डिग्गी की प्रशासनिक स्वीकृति, 45 फसल बीमा पॉलिसी वितरण एवं 1 पौध संरक्षण उपकरणों के आवेदन निस्तारित किए।

ऊर्जा विभाग द्वारा विद्युत सप्लाई में व्यवधान संबंधी 6 प्रकरण, त्रुटिपूर्ण मीटर शिकायत निस्तारण के 6, ढीले तारों को व्यवस्थित करने के 3 प्रकरणों का निस्तारण किया गया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा पेंशन योजना के 75, मुख्यमंत्री पालनहार योजना के 5 प्रकरण निस्तारित किये गए। आयुर्वेद विभाग द्वारा 222 एवं चिकित्सा विभाग द्वारा 168 लोगों का उपचार किया गया। आयोजना विभाग द्वारा जन आधार संशोधन के 2 प्रकरणों, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के 8 प्रकरणों का निस्तारण किया गया। पशुपालन विभाग द्वारा 364 पशुओं का उपचार, 1000 पशुओं का टीकाकरण कर 304 पशुपालकों को लाभान्वित किया गया।

श्रम विभाग द्वारा 364 लोगों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई। सहकारिता विभाग द्वारा पीएम किसान सम्मान निधि के 6 लाभार्थियों का भौतिक सत्यापन किया गया। पैक्स/लैम्पस में 15 नए सदस्य बनाये गए। डेयरी 31 नए सदस्य जोड़े गए 2 नए दुग्ध संकलन केन्द्र खोलने के आवेदन प्राप्त हुए। रोड़वेज द्वारा विशेष योग्यजन के 2 पास एवं अन्य 34 व्यक्तियों के पास बनाये गए। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा 350 लोगों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदन योजना के 20 आवेदन व पूरक पोषाहार के 277 लाभार्थियों की सूची का पठन का सत्यापन किया गया।

कन्यादान योजना का लाभ मिला : प्रशासन गांवों के संग अभियान के तहत सोमवार को ग्राम पंचायत मनाफसर में आयोजित शिविर में एक परिवादी को कन्यादान योजना के तहत लाभान्वित किया। लाभार्थी भागीरथ ने बताया कि उन्हें शिविर के दौरान ही कन्यादान योजना के बारे में जानकारी मिली तो उन्होंने आवेदन किया। भागीरथ पुत्र मुखराम निवासी धीरदान ने बताया कि वे एक बीपीएल परिवार से है। शिविर में उन्हें अधिकारियों द्वारा इस योजना का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद आवेदन पर तत्काल कार्यवाही करते हुए मौके पर ही उनकी स्वीकृति भी जारी कर दी गई। योजना का लाभ पाक भागीरथ बेहद प्रसन्न थे।

रात को सर्दी तेज हुई

श्रीगंगानगर, (कासं)। इलाके में अगले दो दिन में सर्दी का असर तेज हो सकता है। असल में इलाके में नॉर्थ से ईस्ट की तरफ एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस असर दिखा रहा है। यह अगले दो दिन में बूंदाबांदी का कारण बन सकता है। इससे सर्दी में तेजी आयेगी। इस बीच इलाके में अब भी मिनिमम तापमान दस डिग्री सेल्सियस के आसपास बना हुआ है। मैक्सिमम तापमान से कमी के कारण सर्दी तेज महसूस हो रही है।

इलाके में पिछले एक सप्ताह से मिनिमम तापमान दस डिग्री सेल्सियस के आसपास बना होने से रातें ठंडी है। वहीं अलसुबह भी इसका असर बना रहता है। आलम यह है कि सोमवार को भी सुबह सड़कों पर निकले दूध और सब्जी बेचने वाले सर्दी से परेशान नजर आये। शहर की सब्जी मंडी में अल सुबह पहुंचे लोग चाय की चुस्कियां लेते दिखाई दिए। वहीं मजदूर लोग ऊनी कपड़ों में नजर आये। पिछले सात दिन के तापमान का अंतर देखें तो मैक्सिमम तापमान में कमी सर्दी बढ़ने का एक कारण नजर आती है। 22 नवम्बर को मैक्सिमम तापमान 28.1 डिग्री सेल्सियस था। वहीं 28 नवम्बर को यह 26.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इसी कमी के असर से रातों को ठंडक ज्यादा महसूस होने लगी। वहीं 22 नवम्बर को मिनिमम तापमान 10.3 डिग्री सेल्सियस था। यह पिछले सात दिन में लगभग इसी स्तर पर बना हुआ है। 28 नवम्बर को यह 10.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि अगले दो दिन में तापमान में गिरावट आयेगी। एक दिसम्बर के आसपास जब जम्मू-कश्मीर में बना एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस इलाके से गुजरेगा तो यह हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से होते हुए हमारे इलाके को भी इफेक्ट करेगा।

सार-समाचार

80 लोगों ने रक्तदान किया

बीकानेर, (कासं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट-गाइड स्थानीय संघ बीकानेर के तत्वावधान में स्व. सुभाष चंद्र सुथार, स्व. कैलाश कुमार सुथार एवं स्व. डूंगरमल सुथार की स्मृति में सोमवार को पीबीएम नया ब्लड सेंटर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 80 लोगों ने रक्तदान किया। संघ के पूर्व सचिव स्व. बृजमोहन पुरोहित को समर्पित रक्तदान शिविर में स्काउट गाइड राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली एवं राज्य मुख्यालय, जयपुर की उप प्रधान डॉ. विमला डुकवाल ने रक्तदान कर शिविर का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में पूर्व मंडल सचिव अशोक कुमार खन्ना, मंडल चीफ कमिश्नर विजयशंकर आचार्य, वरिष्ठ बैंक कर्मचारी नेता वाई. के. शर्मा योगी, सहायक राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) मान महेंद्र सिंह भाटी, सहायक राज्य संगठन आयुक्त गाइड सुयश लोढ़ा, सीओ (गाइड) ज्योतिरानी महात्मा, स्थानीय संघ सचिव घनश्याम स्वामी, मंडल उप प्रधान के. सी. सुथार, आयोजन सचिव मांगीलाल सुथार, रोवर लीडर पंकज भटनागर, कन्हैयालाल पुरोहित, वरिष्ठ लेखक अशफाक कादरी ने अपने विचार रखे। शिविर में गोपाल सुथार एवं श्रीप्रकाश सुथार ने कहा कि युवाओं द्वारा अधिकाधिक संख्या में रक्तदान करना सुथार बंधुओं ओर स्व. पुरोहित को सच्ची श्रद्धांजलि है।

घोड़ी पर बेटी का बिनोरा निकाला

हनुमानगढ़, (कासं)। वार्ड 51 के सेक्टर 6 निवासी राजेन्द्र नाथ खत्री ने अपनी बेटी को घोड़े पर बिठाकर धूमधाम से बिनोरा निकाला। घोड़ी पर बैठी युवती का ढोल व बैंड-बाजे के साथ बिनोरा निकलते देख आमजन माता-पिता की बेटियों के प्रति अच्छी सोच की तारीफ करते दिखाई दिए। राजेन्द्र नाथ खत्री ने बताया कि हमने इकलौती बेटी शिखा को हमेशा बेटों की तरह ही पाला है। उन्होंने बताया कि शिखा की शादी गुजरात निवासी छगनलाल खत्री के पुत्र रेडियोलॉजिस्ट डॉ जगदीश खत्री के साथ एक दिसम्बर को है। इससे पहले धार्मिक रीति-रिवाज के अनुसार शादी से दो दिन पहले बिनोरा निकाला गया है। शिखा ने बताया कि सबको ऐसे माता पिता मिले जो बेटियों को भी बेटों की तरह मान सम्मान दें। शिखा ने बताया कि अपने आपको मैं आज प्रिंसेज महसूस कर रही हूं। इस दौरान पार्षद प्रतिनिधि जगदीप सिंह विक्की, पंडित जसवीर शर्मा, पप्पू गिल, पार्षद राजेन्द्र चौधरी, राकेश निवाद आदि मौजूद थे।

अस्पतालों का निरीक्षण किया

बीकानेर, (कासं)। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन का निरीक्षण करने योजना के संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी आईएएस सौरभ स्वामी दलबल सहित दो दिवसीय सघन निरीक्षण अभियान में बीकानेर पहुंचे। दल द्वारा पहले दिन डॉ तनवीर मलावत अस्पताल तथा एमएन हॉस्पिटल का निरीक्षण किया गया। अस्पताल में भर्ती समस्त मरीजों से चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत मिल रही पूर्णत: निशुल्क व कैशलेस सेवाओं की पड़ताल की गई। उन्होंने अस्पताल के प्रबंधन के साथ बैठक कर आवश्यक सुधार के निर्देश दिए। जेसीईओ सौरभ स्वामी ने अधिकाधिक आमजन को मुख्यमंत्री की महत्वकांक्षी योजना का लाभ देने के लिए व्यवस्था को सुगम व सुलभ बनाने के लिए योजना से संबंधित आईईसी व ब्रांडिंग को निर्धारित प्रोटोकॉल अनुसार करवाने के निर्देश दिए। निरीक्षण दल में शामिल योजना के संभाग नोडल अधिकारी नवल किशोर व्यास, कार्यक्रम अधिकारी बुद्धि वर्धन आजाद व डॉ. आयुष वर्मा ने भर्ती रहकर इलाज ले रहे प्रत्येक मरीज की फाइल खंगाली। प्रत्येक लाभार्थी से गहन पूछताछ की और उपस्थित आमजन को योजना की जानकारी भी दी।

राजू चानी ने शतक जड़ा

बीकानेर, (कासं)। रेलवे ग्राउंड में लगातार चल रहे गुर्जर गौड़ प्रिमियर लीग में तीन टीमों के मैच खेले गए आयोजन सीमित के मीडिया प्रभारी प्रहलाद जोशी ने बताया कि पहली पारी में बीकाणा रॉयल व मां चामुण्डा मेघासर के बीच खेला गया, जिसमें बीकाणा टीम विजयी रही। दूसरी पारी में बेलासर फाईटर व रॉयल स्ट्राइकर के बीच खेला गया जिसमें रॉयल स्ट्राइकर विजेता रही। मैन ऑफ द मैच पंकज जोशी रहे और उन्होंने बेलासर फाईटर के युवा खिलाड़ी देवेन्द्र जोशी को अपना मैन ऑफ द मैच गिफ्ट किया। तीसरी पारी में संकट मोचन मेघासर व मां हरसिद्धि ढाढरवाला के बीच खेला गया जिसमें मेघासर टीम विजेता रही और राजू चानी ने 20 चौके व 5 छक्के लगाकर शतक पूरी कर मैन ऑफ द मैच राजू चानी रहे। टूर्नामेंट संयोजक बिरजू उपाध्याय ने बताया कि मुख्य अतिथि भाजपा नेता दीपक पारीक, उर्मिला जोशी, मुकेश जोशी, भाजपा देहात जिलाध्यक्ष जसराज सिंवर व महामंत्री प्रदीप सारस्वत आदि मौजूद थे। गोविन्द सारस्वत (जीजीवाला ग्रुप), पत्रकार सुनिल शर्मा, टूर्नामेंट प्रभारी धीरज पंचारिया, नेमीचंद पाणेचा, वासुदेव जोशी, दिनेश जोशी, प्रकाश जोशी, शिवशंकर जोशी के साथ आयोजन सीमित के पदाधिकारी मौजूद थे।

कोर्ट स्टे के बाद भी दुकानों में तोड़फोड़

हनुमानगढ़, (कासं)। जिले के जंक्शन में रेलवे स्टेशन रोड स्थित 50 साल पुराने कटला बैजनाथ सागरमल बिहाणी मार्केट की दुकानों को लेकर हुआ विवाद बढ़ता जा रहा है। यहां दुकानों पर नगर परिषद की ओर से लाल निशान लगा उन्हें तोड़ने के लिए चिन्हित किया गया था। अब मार्केट के दुकानदारों ने हाईकोर्ट की ओर से स्टे के आदेशों के बावजूद ट्रस्टी व भूमाफियाओं पर दुकानों में तोड़फोड़ करने का आरोप लगाया है।

सोमवार को मार्केट के दुकानदार अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रतिभा देवठिया से मिले। ट्रस्ट की इमारत को तोड़ने वाले लोगों के खिलाफ नियमानुसार कानूनी कार्रवाई कर हाईकोर्ट के आदेशों की पालना करवाने की मांग की। कटला बैजनाथ सागरमल बिहाणी मार्केट के दुकानदार अनिल गक्खड़ का कहना है कि नगर परिषद की ओर से कटला की दुकानों पर लाल निशान लगा उन्हें तोड़ने के लिए चिन्हित करने की कार्रवाई षडयंत्र के तहत की गई है।

- ट्रस्ट की बिल्डिंग तोड़ने वाले लोगों पर कार्रवाई की मांग, एडीएम से दुकानदार मिले
- स्टे के आदेश की पालना करवाने की मांग

कटला की दुकाने न तो जर्जर हैं और न ही ध्वस्त करने योग्य है। इसके बावजूद इसके भूस्वामियों ने शहर के भूमाफिया के साथ सांठगांठ कर दुकाने तोड़ने के आदेश जारी करवा दिए ताकि दुकानदारों को बेदखल किया जा सके। अब हाईकोर्ट के स्टे के बावजूद ट्रस्टी व भूमाफियाओं की ओर से मिलकर दुकानों में तोड़फोड़ की जा रही है। हाईकोर्ट का निर्णय न आने तक उक्त दुकानों में किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं की जा सकती। सम्पत्ति को खुर्द-बुर्द करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने स्टे के आदेशों की पालना करवाने की मांग की।

नगर कर्मचारियों ने 19 अगस्त को जंक्शन में भगत सिंह चौक से रेलवे स्टेशन रोड स्थित 50 वर्ष पुराने कटला बैजनाथ सागरमल बिहाणी मार्केट की दुकानों को लाल निशान लगा चिन्हित किया। परिषद की इस कार्रवाई से दुकानदारों में हड़कम्प मचा हुआ है।

इस संबंध में जिला स्तरीय सतर्कता समिति में परिवाद दायर किया गया था कि कटला बैजनाथ सागरमल बिहाणी मार्केट पूरी तरह से जर्जर हो चुकी है।

किसान गन्ना अनुबंध पत्र भरें

श्रीगंगानगर, (कासं)। राजस्थान स्टेट गंगानगर शुगर मिल लिमिटेड़ के गन्ना पिराई सत्र 2021-22 के लिए गन्ना फाइनल सर्वे एवं गन्ना अनुबंध पत्र भरे जा रहे हैं। शुगर मिल के महाप्रबन्धक मुकेश बारेठ ने बताया कि जिन किसानों द्वारा अभी तक गन्ना अनुबंध पत्र नहीं भरे हैं, वो किसान संबंधित गन्ना फील्ड सुपरवाइजर से सम्पर्क कर या गन्ना कार्यालय में आकर अपना अनुबंध पत्र 4 दिसम्बर तक भरवा सकते हैं। यदि किसी किसान द्वारा गन्ना अनुबंध पत्र 4 दिसम्बर तक नहीं भरा जायेगा, तो उस गन्ना किसान को गन्ना मांग पर्ची जारी करना संभव नहीं होगा। किसान गन्ना अनुबंध करवाते समय सुपरवाइजर को अपना एक परिचय पत्र देवें। अन्यथा परिचय पत्र के अभाव में काश्तकार का अनुबंध नहीं किया जायेगा, जिसकी समस्त जिम्मेदारी किसान की होगी। गन्ना पिराई में मोढी गन्ने की बॉण्ड 150 क्विंटल एवं बीजू गन्ने का बॉण्ड 200 क्विंटल से किया जायेगा।

शिविर में दादी ने अपने हक की जमीन बेटों-पोतों को सौंपी

बीकानेर, (कासं)। प्रशासन गांवों के संग अभियान के तहत जिले में लग रहे शिविर बरसों से खाता विभाजन के लम्बित प्रकरणों के निस्तारण का अवसर प्रदान कर ग्रामीणों के लिए राहत लेकर आ रहे हैं। दादी ने शिविर में ही खाता विभाजन करवाया।

- मनाफरसर में आयोजित शिविर में 92 वर्षीय दादी ने खाता विभाजन कराया

मनाफरसर में सोमवार को आयोजित शिविर एक परिवार के लिए बेहद संतोषजनक रहा जहां 92 वर्षीय केसर कंवर पत्नी स्व. हिम्मत सिंह ने शिविर प्रभारी के समक्ष उपस्थित होकर निवेदन किया कि उनके हक की जमीन उनके बेटों व पोतों को सौंप दी जाए। केसर कंवर ने बताया कि उनकी उम्र 92 वर्ष हो चुकी है। रोही मनाफरसर की 7.77 व रोही धीरदान की 9.44 भूमि में से अपना हक वह पुत्रों व पोत्रों को देना चाहती है ताकि मेरे पुत्र व पोत्र आपसी सहमति से खाता विभाजन करवा सके। शिविर प्रभारी ने तहसीलदार लूणकरनसर को हक त्याग डीड तैयार करवाकर पंजीयन करने व साथ ही खाता विभाजन के निर्देश दिए।

तहसीलदार द्वारका प्रसाद शर्मा ने हक त्याग पंजीयन कर शिविर स्थल पर ही नामांतरण दर्ज किया तथा खाता विभाजन प्रस्ताव पारित कर सम्बल प्रदान किया। एक ही दिन में हक त्याग व सहमति से हुए खाता विभाजन पर सह खातेदार बहुत खुश हुए और सरकार के अभियान व प्रशासन का धन्यवाद दिया।

ट्रोले की चपेट में आने से बाइक सवार दो युवक घायल

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर से करीब दस किलोमीटर दूर सोमवार को एक बड़ा हादसा टल गया। एक ट्रोले की चपेट में आने से मोटरसाइकिल पर सवार दो युवक घायल हो गए। दोनों को पीबीएम अस्पताल के ट्रोमा सेंटर पहुंचाया गया है, जहां इलाज चल रहा है। हालांकि पुलिस के पास ये मामला सोमवार शाम तक नहीं पहुंचा था।

सोमवार दोपहर नाल में ट्रोले मुख्य रोड से जा रहा था। तभी एक मोटरसाइकिल इसकी चपेट में आ गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि ट्रोले ने तेज गति से चलते हुए मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। बाइक पर सवार दोनों युवक दूर गिरे, जिससे दोनों युवक गंभीर घायल हो गये है। इसी रास्ते से निकल रहे लोगों ने अपने वाहन से पीबीएम अस्पताल ले गए। जहां ट्रोमा सेंटर में भर्ती किया गया है। बताया जा रहा है कि सुनील व महेन्द्र नामक युवक मोटरसाइकिल से गजनेर की ओर जा रहे थे।

ये दोनों दोस्त हैं और किसी काम से नाल से गजनेर जा रहे थे। नाल से गजनेर की ओर जाने वाले नेशनल हाईवे पर लगातार सड़क हादसे हो रहे हैं। नेशनल हाईवे की सड़क टोल में है। इसके बाद भी जगह-जगह ये सड़क टूटी हुई है, जिससे आमतौर पर दुपहिया वाहनों का संतुलन बिगड़ जाता है।

लाईसेंसी शस्त्र जमा किए जायेंगे

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिला कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जाकिर हुसैन ने पंचायती राज आम चुनाव 2021 के दौरान जिले में स्वतंत्र व निष्पक्ष एवं शान्तिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक मतदाता अपने मत का उपयोग स्वतंत्र व निर्भिक होकर कर सकें। इसके लिए अनुज्ञा पत्रधारी व्यक्तियों के शस्त्र जमा किए जायेंगे। उन्होंने बताया कि कानून व्यवस्था मशीनरी को चुनाव संबंधित अपराधों की रोकथाम व नियंत्रण के निर्देश दिए गए हैं कि आवश्यक कानूनी प्रावधानों के अनुसार प्रभावी कार्यवाही करने का श्रम करें। जिनकी पृष्टभूमि अपराधिक रही हो, जो किसी निर्वाचन के दौरान या अन्य किसी समय दंगा फसाद में सम्मलित रहे हो, कमजोर तबके के लोग डराने धमकाने की शिकायत करें।

जिला परिषद व पंचायत समिति चुनाव, नामांकन प्रकिया शुरू

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिला परिषद और पंचायत समिति चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया सोमवार को शुरू हुई। कलेक्ट्रेट में जिला परिषद के 31 जोन के नामांकन जमा करने के लिए तीन अलग-अलग स्थान निर्धारित किये गए थे।

दोपहर तक संभावित प्रत्याशियों ने नामांकन फार्म लेकर इसे जमा करवाने की तैयारी शुरू की। कलेक्ट्रेट के रूम नंबर दस में सहायक प्रशासनिक अधिकारी नीरज शर्मा ने ये फार्म दिए। वहीं जिला परिषद के 31 जोन के फार्म जमा करने के लिए तीन एआरओ लगाये गए। नामांकन फार्म जमा करने के लिए तीन एआरओ यानी सहायक रिटर्निंग ऑफिसर को लगाया गया है।

- प्रत्याशियों ने जिला परिषद चुनाव के नामांकन फार्म लिए, उपखंड स्तर पर जमा होंगे पंचायत चुनाव के आवेदन

एडीएम भवानीसिंह पंवार और एडीएम (सिटी) कमला अलारिया के ऑफिस में पूरा दिन नामांकन से जुड़े लोग आते रहे। यूआईटी सैक्रेट्री डॉ. हरितिमा ने भी कलेक्ट्रेट कैम्पस में ही एक रूम में नामांकन संबंधी प्रक्रिया शुरू की।

उनके साथ ही कुछ स्टाफ के सदस्य सहयोग कर रहे थे। पहले दिन दोपहर तक तो केवल नामांकन फार्म लेने वालों के पहुंचने का क्रम चलता रहा। एडीएम के यहां जोन संख्या एक से ग्यारह, एडीएम सिटी के यहां जोन संख्या 12 से 21 तथा यूआईटी सैक्रेट्री के यहां जोन संख्या 22 से 31 के नामांकन जमा करने की व्यवस्था की गई है।

पंचायत समिति के लिए प्रत्येक उपखंड लेवल पर नामांकन लिए जा रहे हैं। श्रीगंगानगर उपखंड में सोमवार को पंचायत समिति के लिए कोई नामांकन जमा नहीं हुआ। एसडीएम उम्मेदसिंह रतनू ने बताया कि हर दिन पंचायत समिति के लिए नामांकन प्रत्येक उपखंड स्तर पर लिए जायेंगे।

कोरोना वैक्सीन की दूसरी डोज से वंचितों के लिए घर-घर सर्वे होगा : एडीएम

बीकानेर, (कासं)। अतिरिक्त जिला कलेक्टर (प्रशासन) बलदेव राम धोजक ने कहा कि कोविड वैक्सीन की दूसरी डोज से वंचित लोगों के वैक्सीनेशन के लिए प्रभावी कार्रवाई की जाए। दूसरी डोज से वंचित लोगों की चिकित्सा केन्द्र वार सूची तैयार करते हुए शत-प्रतिशत वैक्सीनेशन सुनिश्चित किया जाए।

धोजक ने सोमवार को साप्ताहिक समीक्षा बैठक में यह बात कही। उन्होंने बताया कि जिले में अब तक 14 लाख 80 हजार लोगों को पहली तथा 8 लाख 15 हजार लोगों को दोनों डोज लगाई जा चुकी है। जिन लोगों को दूसरी डोज ड्यू हो गई है। उनके वैक्सीनेशन के लिए घर-घर सर्वे करते हुए कार्रवाई की जाए। उन्होंने डेंगू एवं अन्य मौसमी बीमारियों की स्थिति की समीक्षा की।

उन्होंने कहा कि एंटी लार्वल गतिविधियां सतत रूप से की जाए। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा

कलेक्ट्रेट सभागार में एडीएम प्रशासन बलदेव राम धोजक ने साप्ताहिक समीक्षा बैठक ली।

- साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित

योजना के तहत पंजीकरण बढ़ाने के निर्देश दिए। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने अवैध खनन के खिलाफ जिले में सतत कार्रवाई करने के निर्देश दिए। धोजक ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत खाद्यान्न के उठाव एवं वितरण, बिजली कनेक्शन से वंचित स्कूलों में कनेक्शन की प्रगति की स्थिति की समीक्षा की। बैठक में महात्मा गांधी अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने, जनाधार पंजीयन एवं वितरण, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना एवं मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना आदि की समीक्षा की गई। बैठक के दौरान संपर्क पोर्टल पर लम्बित प्रकरणों को अविलम्ब निस्तारित करने के निर्देश दिए। इस दौरान सहायक निदेशक (लोक सेवाएं) सवीना बिश्नोई, उप निदेशक कृषि (विस्तार) कैलाश चौधरी, जिला रसद अधिकारी भागूराम महला, आरसीएचओ डॉ रमेश गुप्ता, मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी डॉ राजकुमार शर्मा, सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के संयुक्त निदेशक सत्येंद्र सिंह राठौड़, उपनिदेशक सांख्यिकी रमेश व्यास, मुख्य आयोजना अधिकारी नरेंद्र खीचड़, खन्नी अभियंता राजेंद्र बलारा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

2100 दीयों से दीपदान किया

बीकानेर, (कासं)। दीपदान करने से अनेक कष्टों का निवारण होता है। मां का स्मरण कर दीपदान करने वाला व्यक्ति कभी दरिद्र नहीं रहता उसे सुख व शांति दोनों प्राप्त होती हैं। उक्त प्रवचन गंगाशहर स्थित रामझरोखा कैलाश धाम के महंत महामंडलेश्वर सरजूदास महाराज ने सोमवार शाम दीपदान अवसर पर दिए।

सरजूदास महाराज ने बताया कि धाम में ओम व श्रीराम आदि आकृति को करीब 2100 दीपों से सजाया गया। सरजूदास महाराज ने बताया कि आज कार्यक्रम में दीपक पारीक, सोनू चड्ढा व जेलर मुकेश त्यागी का सम्मान किया गया। मंगलवार को दोपहर एक बजे आयोजन की पूर्णाहुति की जायेगी। इस दौरान भगवान सत्यनारायण की कथा, विशाल भंडारा एवं संतों की विदाई की जायेगी। श्री नर्मदा महायज्ञ एवं संगीतमय श्री नर्मदा पुराण आयोजन के पांचवें दिन कथा वाचक पं. नितेश बिल्लौरे ने 233 घाटों का वर्णन करते हुए हर घाट के बारे में जानकारी दी।

कार्यालय नगर विकास न्यास श्रीगंगानगर, राजस्थान

क्रमांक: नियमन/2021/1173 दिनांक :-26/11/2021

सार्वजनिक आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमति सुखपाल कौर जौहल पत्नी श्री कुलवन्त सिंह निवासी 2-एच छोटी हॉल मं.न.सी-18, खालसानगर, श्रीगंगानगर के द्वारा न्यास क्षेत्र में स्थित आवासीय भूखण्ड चक 3 ए छोटी मुरब्बा नं. 03 किला नं.24,25 माप 40 इन्दु 70 फीट भूखण्ड संख्या सी-18, खालसा नगर, श्रीगंगानगर का न्यास रिकार्ड में नामान्तरण हेतु आवेदन किया गया है। उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में न्यास रिकार्ड एवं आवेदक के द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज की स्थिति निम्नानुसार है:-

न्यास रिकार्ड के अनुसार भूखण्ड का विवरण आवेदक के द्वारा भूखण्ड के नामान्तरण हेतु प्रस्तुत दस्तावेजों का विवरण

भूखण्ड का विवरण	मूल भूखण्डधारी	मृत्यु प्रमाण पत्र एवं विवरण	जायज वारिसो का विवरण	दस्तावेजों का विवरण
चक 3ए छोटी मुरब्बा नं 03 किला नं.24,25 माप 40 इन्दु 70 फीट, भूखण्ड संख्या सी-18, खालसा नगर	उक्त भूखण्ड का पट्टा संख्या 2949 दिनांक 04.08.2004 को श्री कुलवंत सिंह पुत्र श्री खेहर सिंह के नाम से जारी किया हुआ है।	श्री कुलवन्त सिह जौहल की मृत्यु दिनांक 15.07.2011 को हो चुकी है।	1.सुखपाल कौर-पत्नी 2.कंचनदीप-पुत्री 3.अनुप्रीत-पुत्री	श्रीमति सुखपाल कौर जौहल द्वारा श्री कुलवन्त सिंह की मृत्यु उपरान्त पंजीकृत हक परित्याग पत्र दिनांक 14.09.2020 की प्रति प्रस्तुत कर नामान्तरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार उक्त भूखण्ड के सम्बन्ध में उपर्युक्तानुसार दस्तावेजों की प्रति इस कार्यालय में प्रस्तुत कर नामान्तरण चाहा गयाहैइस सम्बन्ध में कि श्रीमति सुखपाल कौर जौहल पत्नी श्री कुलवन्त सिंह जौहले द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज/नामान्तरण के सम्बन्ध में कोई आपत्ति है तो सूचना प्रकाशन के 07 दिवस में पुख्ता दस्तावेजों सहित अपनी आपत्ति/उजर/दावा निम्न हस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत कर सकते है। उक्त अवधि के दौरान इस भूखण्ड से सम्बन्धित समस्त दस्तावेजों को आमखास/हितबद्ध व्यक्ति के देखने व पढ़ने के लिए कार्यालय समय में खुला रखा गया है। बाद मियाद प्रकरण का निस्तारण कर दिया जावेगा एवंकोई आपत्ति/उजर स्वीकार नही होगा।

सचिव
नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

किशनगढ़बास थाना क्षेत्र में अवैध हथियारों का जखीरा बरामद, चार तस्कर गिरफ्तार

5 देशी पिस्टल व 13 देशी कट्टे के अलावा 41 जिंदा कारतूस बरामद

किशनगढबास, (निसं)। थाने में एसपी राममूर्ति जोशी ने बताया कि 28 नवम्बर को स्पेशल पुलिस टीम के कांस्टेबल सत्यपाल, राकेश व महेश को सूचना मिली थी कि मुबारिकपुर नौगांवा की तरफ से स्कॉर्पियो कार में हथियार तस्कर आ रहे हैं। उनके पास हथियार भी हैं। जो आगे कोटपूतली व बहरोड की तरफ जाएंगे।

इसके बाद पुलिस ने राबका बिदरका गांव की पहाडी के पास नाकाबंदी शुरू की और कार को रुकवा लिया गया। कार की तलाशी ली तो उसमें 5 देशी पिस्टल व 13 देशी कट्टे के अलावा 41 जिंदा कारतूस मिले। इसके बाद पुलिस ने अवैध हथियार रखने के जुर्म में आर्म्स एक्ट के तहत चार जनों को गिरफ्तार कर लिया। आगे की जांच जारी है।

एसपी की सूचना पर कार रूकवाकर हथियारों की बरामदगी की।

गैंग का मुखिया पिता की हत्या का आरोपी :- हथियार तस्कर गैंग का मुखिया मुख्तयार अपने पिता की हत्या का आरोपी है। जिनके साथ जावेद, ताहिर व जितेंद्र भी तस्करी में शामिल हैं। ये लोग मथुरा के बरसाना में हाथयाका, भरतपुर के कामां, पहाडी से अवैध हथियार लाते हैं। इसके बाद बहरोड, नीमराणा, नारनौल, भिवाडी, कोटपूतली, महेंद्रगढ , सीकर व खेतडी सहित अनेक जगहों पर सक्रिय गैंग के बदमाशों को हथियार सप्लाई करते हैं।

■ गैंग मथुरा, भरतपुर के कामां व पहाडी से हथियार खरीदती है और कोटपूतली, बहरोड व हरियाणा में बेचती है

मुखत्यार सिंह उर्फ मुक्की पुत्र मंजीत सिंह निवासी फैजपुर किशगढ बास, जावेद पुत्र इकबाल निवासी खटीका मोहल्ला टपूकडा, ताहिर उर्फ सुल्ली पुत्र इलियास निवासी बाघोडा किशनगढ बास, जितेंद्र उर्फ जीतू पुत्र राम सिंह निवासी खेडा कोटकासिम को पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

बरामद :- पुलिस ने 5 अवैध 32 बोर देशी पिस्टल, 315 बोर के 9 देशी कट्टे, 41 जिंदा कारतूस, एक कार बरामद की है।

कोटा उत्तर नगर निगम के दो पार्षदों को यूडीएच विभाग ने निलंबित किया

दोनों पार्षदों पर अवैध खनन और अतिक्रमण करने के आरोप लगाए गए थे

कोटा, (निसं)। कोटा उत्तर के दो पार्षदों को यूडीएच विभाग ने कार्रवाई करते हुए निलंबित कर दिया है। दोनों पार्षदों में राकेश पुटरा और बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू बालिता पर अवैध खनन और अतिक्रमण करने के आरोप लगाए गए थे।

आरोपों को स्वायत शासन विभाग के निदेशक दीपक नंदी दोनों पर लगे आरोप प्रमाणित माने हैं जिनके आधार पर ही उन्हें निलंबित करने के आदेश दिए गए हैं। हाल ही में पार्षद बिल्लू बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू को बूंदी जिले की तालेड़ा पुलिस ने गिरफ्तार किया थास इससे पहले कोटा शहर की कुन्हाड़ी थाना पुलिस भी उनके खिलाफ कार्रवाई कर चुकी है। राकेश सुमन पुटरा 2014 में भी पार्षद रहे है। तब भारतीय

■ स्वायत शासन विभाग के निदेशक दीपक नंदी ने दोनों पर लगे आरोप प्रमाणित माने

जनता पार्टी से जीते थे लेकिन 2020 के चुनाव में उनका टिकट काट दिया। इसके बाद उन्होंने निर्दलीय हुंकार भरते हुए जीत दर्ज की थीस उनके खिलाफ लैंडमार्क सिटी के नजदीक कमला उद्यान में एक पार्क पर अवैध कब्जा करने जमाने और पक्का निर्माण करने का आरोप लगा था। जिसमें पार्क को खुर्द-बुर्द करने के भी आरोप लगाए गए।

इसी तरह से बलविंदर सिंह उर्फ बिल्लू बालिता खिलाफ भी नगर विकास न्यास की जमीन पर से मिट्टी की अवैध रूप से खुदाई कर उस मिट्टी को खुर्द-बुर्द करने के आरोप लगे थे। इस संबंध में यूआईटी ने मुकदमा भी कुन्हाड़ी थाने में दर्ज करवाया था। जिस पर बिल्लू को पुलिस ने गिरफ्तार की भी किया था साथ ही बिल्लू के घर से मिट्टी बरामद भी की गई थी। दोनों मामलों में यूआईटी ने कुन्हाड़ी थाने में मुकदमा दर्ज करवाया था, बाद में राज्य सरकार ने इस मामले को विधि विभाग को भिजवाया था जिसके बाद ही उन्हें निलंबित किया गया है। निलंबित किए गए दोनों पार्षद पूर्व विधायक प्रहलाद गुंजल की बैठकों और मीटिंग में अक्सर नजर आते हैं। वर्तमान में दोनों निर्दलीय पार्षद हैं।

हाईकोर्ट ने एक सप्ताह में इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर से मांगी रिपोर्ट

सादुलपुर, (निसं)। लगभग चार वर्ष पूर्व नोहर के जसाना में स्थित राजीव गाँधी सेवा केन्द्र में पवन व्यास की धारदार हथियार से निर्मम हत्या के आरोप के मामले में पुलिस द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं देने के कारण हाईकोर्ट के माननीय न्यायधीश ने सख्त आदेश देते हुए 1 सप्ताह में प्रोग्रेस रिपोर्ट के साथ फाइल पेश करने के लिए इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर को निर्देशित किया है।

गौरतलब है कि 17 अक्टूबर 2017 को बहुचर्चित पवन व्यास हत्याकांड में पुलिस द्वारा आज तक खुलासा नहीं कर पाने पर विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ द्वारा समय-समय पर प्रदर्शन किए गये थे। वहीं

■ पवन व्यास हत्याकांड में मांगी प्रोग्रेस रिपोर्ट

2019 में नोहर से जयपुर पैदल यात्रा पीड़ित को साथ लेकर जयपुर में विधानसभा घेराव भी किया गया था। इसी दौरान विधानसभा में गृह मंत्री से वार्ता कर हत्या के खुलासे की मांग की गई । आरोप है कि पुलिस राजनीतिक दबाव में रहने के कारण हत्या का खुलासा नहीं कर पाई। जिस पर विप्र फाउंडेशन युवा प्रकोष्ठ के प्रदेश विधिक सलाहकार एडवोकेट कुलदीप शर्मा हाई कोर्ट जोधपुर द्वारा सीबीआई जांच की मांग हेतु हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की। याचिका में कोर्ट में इन्वेस्टिगेशन ऑफीसर को तलब कर 4 सप्ताह का समय दिया था लेकिन पुलिस द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं देने के कारण हाईकोर्ट के माननीय न्यायधीश ने सख्त आदेश देते हुए 1 सप्ताह में प्रोग्रेस रिपोर्ट के साथ फाइल पेश करने के लिए इंस्पेक्टर जनरल आफ पुलिस बीकानेर को निर्देशित किया गया है। वहीं हाई कोर्ट ने अपने आदेश में यह भी कहा कि पुलिस की खराब कार्रवाई है। ज्ञातव्य है कि मृतक के पीड़ित पिता रामस्वरूप व्यास एवं विप्र फाउंडेशन के युवा प्रदेश अध्यक्ष मुकेश रामपुरा ने कोर्ट द्वारा न्याय मिलने की उम्मीद जताई है।

बीकानेर में दो दिन बाद फिर एक पॉजिटिव मिला

बीकानेर, (कासं)। जिले में कोरोना धीरे -धीरे अपना दायरा बढ़ाता जा रहा है। सोमवार सुबह की रिपोर्ट में एक और पॉजिटिव आने के साथ ही बीकानेर में कोरोना के एक्टिव केस बढ़ कर 15 हो गए हैं। इसके बाद भी हेल्थ डिपार्टमेंट कोरोना टेस्ट की संख्या नहीं बढ़ा रहा है। जिला कलक्टर नमित मेहता के आदेश के भी टेस्ट का आंकड़ा पांच सौ ऊपर नहीं जा रहा। कोरोना के नोडल अधिकारी डॉ. बी एल. मीणा ने रविवार के टेस्ट में एक पॉजिटिव बताया है। पिछले दो दिन से विभाग ने एक भी पॉजिटिव नहीं बताया था। अब न सिर्फ पॉजिटिव बढ़ रहे हैं बल्कि अस्पताल में भी भर्ती व गंभीर रूप से भर्ती रोगियों की संख्या भी बढ़ रही है।

■ कलेक्टर के आदेश के बाद भी जांच का आंकड़ा पांच सौ के आस-पास ही अटका

फिलहाल हैल्थ डिपार्टमेंट ने बाहर से आने वाले यात्रियों का टेस्ट करना शुरू कर दिया है। बीकानेर रेलवे स्टेशन पर रविवार को सर्वाधिक टेस्ट हुए। यहां 153 यात्रियों के सेंपल लिए गए। शुक्र है कि ये सभी नेगेटिव ही पाए गए । लालगढ़ रेलवे स्टेशन पर रविवार को 19 टेस्ट किए गए, ये सभी नेगेटिव रहे। इसके अलावा पीबीएम अस्पताल के कोविड ओपीडी में जांच हो रही है। यहां कुछ जांच बढ़ी है। सोमवार को यहां सत्तर टेस्ट लिए गए। ये सभी भी नेगेटिव रहे।

गैंगरेप के मुख्य आरोपी की गिरफ्तारी की मांग

मालपुरा, (निसं)। शहर की एक आवासीय कॉलोनी में 13 नवम्बर को एक नाबालिग छात्रा से हुए गैंगरेप के नामजद मुख्य आरोपी की जल्द गिरफ्तारी की मांग को लेकर सोमवार को बीएसपी व बुधिष्ठ महासभा के बैनर तले बड़ी संख्या में एसडीएम कार्यालय पहुंचे महिला पुरूषों ने एसडीएम के नाम नायब तहसीलदार हंसराज तोगडा सहित पुलिस उपाधिक्षक चक्रवर्ती सिंह राठौड़ को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अवगत करवाया कि 13 नवम्बर को हुए गैंगरेप की 15 नवम्बर को मालपुरा थाने में पीड़िता की ओर से नामजद पुलिस प्राथमिकी दर्ज करवाने तथा 20 नवम्बर को बीएसपी व बुधिष्ठ महासभा द्वारा ज्ञापन सौंप एक सप्ताह का अल्टीमेटम देने के बावजूद पुलिस द्वारा तीसरे व नामजद मुख्य आरोपी धारा सिंह चौधरी की आज तक गिरफ्तारी नहीं किये जाने से समाज में गहरा रोष व्याप्त है। साथ ही ज्ञापन में अवगत करवाया कि मुख्यआरोपी की 15 दिवस में गिरफ्तारी नहीं होने पर मजबूरन उन्हें उपखण्ड अधिकारी कार्यालय के सामने अनशन शुरू कर उग्र आन्दोलन करना पड़ेगा।

रीट परीक्षा के डमी परीक्षार्थी मामले का 2 माह से फरार आरोपी गिरफ्तार

राजसमंद, (निसं)। गत 26 नवम्बर को आयोजित राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा में सेठ रंगलाल कोठारी राजकीय महाविद्यालय परीक्षा केन्द्र में परीक्षा में अभ्यर्थी की जगह डमी के रूप में परीक्षा देने के मामले में पिछले दो माह से फरार आरोपी को राजनगर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया है।

■ पूर्व में पुलिस ने आरोपी की जगह परीक्षा देते जीजा को किया था गिरफ्तार

जबकि इस मामले में पुलिस द्वारा एसआरके कोलेज परीक्षा केन्द्र में द्वितीय पारी की परीक्षा के दौरान लेवल प्रथम के परीक्षार्थी हितेश विश्नोई (22) पुत्र पूनमाराम निवासी सहारणों की ढाणी थाना चितलवाना जिला जालौर की जगह डमी परीक्षार्थी के रूप में परीक्षा दे रहे हाडेतर थाना सांचोर जिला जालौर में तृतीय क्षेणी

परीक्षार्थी आरोपी हितेश कुमार।

शिक्षक के पद पर कार्यरत आरोपी श्रवण कुमार पुत्र भेराराम विश्नोई निवासी करावडी थाना झाव जिला जालौर पूर्व में गिरफ्तार किया जा चुका है। इसके बाद से ही आरोपी हितेश विश्नोई पिछले दो माह से फरार था।

बिजली लाइन के शॉर्ट सर्किट से छप्पर में लगी आग

पावटा, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम पंचायत पाथरेडी के डाबडों की ढाणी में बद्री प्रसाद पुत्र गणपतराम यादव के छप्पर में रविवार रात अज्ञात कारणों से लगी आग से 3 भैंस व 2 गायों की जलकर मौत हो गई वहीं घरेलू सामान सहित आवश्यक सामान जलकर राख हो गये।

जानकारी के अनुसार छप्पर के ऊपर से विद्युत लाइन गुजर रही थी जिसमें शॉर्ट सर्किट होने से छप्पर में आग लग गई। उपस्थित लोगों ने बड़ी मशक्कत के बाद ट्यूबवेल के माध्यम से आग पर 2 घण्टों में काबू पाने की कोशिश की। वही मौके पर पावटा उपखंड अधिकारी राजवीर सिंह के निर्देशों पर तहसीलदार मुकेश अग्रवाल ने पटवारी मनोज यादव द्वारा मौके पर ही फर्द रिपोर्ट तैयार करवाई। आगजनी में हुए नुकसान की फर्द रिपोर्ट व मवेशियों की पोस्टमार्टम रिपोर्ट के साथ उचित सहायता के लिए प्रस्ताव भेजा जायेगा। इस मौके पर ग्राम पंचायत सरपंच रामस्वरूप, पूर्व सरपंच शिभूदयाल, पूर्व सरपंच लाडाकाबास मदनलाल यादव, सहित जनप्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद रहे।

अमित शाह का बॉर्डर पर नाइट स्टे पाक को देगा कड़ा संदेश

जैसलमेर, (नि.सं.)। गृह मंत्री अमित शाह भारत - पाकिस्तान बॉर्डर पर एक रात बिताएंगे। पाकिस्तान की तारबंदी के एकदम सटे हुए इलाके शाहगढ़ बल्ज की रोहिताश चौकी पर गृह मंत्री के नाइट स्टे की खबर पाकिस्तान को एक पैगाम के तौर पर देखी जा रही है । दरअसल हाल ही के दिनों में भारतीय सेना ने सीमा पर सबसे बड़ा युद्धाभ्यास का आयोजन किया था । उसके तुरंत बाद गृह मंत्री का पाकिस्तान की सीमा के निकट ही रात्रि विश्राम करना पड़ोसी मुल्क को संदेश के तौर पर देखा जा रहा है।

अमित शाह 4 दिसम्बर को जैसलमेर की यात्रा पर आ रहे हैं । वे 5 दिसम्बर को जैसलमेर में पहली बार आयोजित होने जा रहे बीएसएफ के राइजिंग डे में शिरकत करने आ रहे हैं । शाह 4 दिसंबर को जैसलमेर पहुंच जाएंगे । इसके बाद वे तनोट माता मंदिर के दर्शन करेंगे और सीमा पर जवानों से मुलाकात करेंगे । गृह मंत्री अमित शाह की जैसलमेर यात्रा की तैयारियों के लिए पश्चिमी कमान चंडीगढ़ के एडीजी एन एस जामवाल जैसलमेर पहुंच गए हैं । उन्होंने व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया । इसके साथ ही उन्होंने बीएसएफ के अधिकारियों को दिशा निर्देश भी दिए । जामवाल ने बताया कि गृहमंत्री 4 को जैसलमेर पहुंचेंगे । तनोट माता के दर्शन करने के बाद वे जवानों से मिलेंगे । इसके बाद रोहिताश चौकी पर वे रात्रि विश्राम करेंगे।

5 दिसंबर को शहीद पूनमसिंह स्टेडियम में बीएसएफ के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में अमित शाह शिरकत करेंगे । इसके बाद वे जयपुर के लिए रवाना हो वे जाएंगे । सीमा सुरक्षा बल के स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को लेकर बीएसएएफ पिछले एक महीने से लगातार तैयारियां कर रहा है । स्टेडियम को इस कार्यक्रम के लिए विशेष तौर पर तैयार करवाया गया है । सीमा सुरक्षा बल के 57 वें स्थापना दिवस का कार्यक्रम पहली बार दिल्ली से बाहर जैसलमेर में आयोजित किया जा रहा है।

पपला गुर्जर के नाम पर रंगदारी मांगने वाला गिरफ्तार

दौसा, (निसं)। पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनिवाल के निर्देश पर जिला विशेष टीम ने भीलवाड़ा में दबिश देकर महवा के एक निजी चिकित्सालय के संचालक को गैंगस्टर पपला गुर्जर के नाम पर रंगदारी मांगने एवं जान से मारने की धमकी देने वाले युवक को गिरफ्तार किया है। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि 26 नवंबर को महवा कस्बे में मंडावर रोड पर चाइल्ड हॉस्पिटल संचालक डॉ. अशोक जैन ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसमें बताया कि उसके मोबाइल पर एक अज्ञात युवक का फोन आया, जिसने स्वयं का नाम पपला गुर्जर बताते हुए 5 लाख की रंगदारी मांगी।

बाद में युवक ने खुद का नाम कालू गुर्जर निवासी केसरी बताते हुए पैसे की मांग की थी। मामले में महवा कस्बे के डॉक्टरों ने थाने पहुंचकर आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने की मांग की थी। इस घटना को गंभीरता से लेते हुये पुलिस अधीक्षक अनिल कुमार बेनिवाल के निर्देश पर एक विशेष टीम का गठन किया गया। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि डॉक्टर द्वारा इसकी शिकायत पुलिस को देने पर धमकी मिलने वाले मोबाइल नंबर पर फोन किया गया तो युवक ने पुलिस के हैड कांस्टेबल को भी धमकी दे डाली थी। जहां पुलिस की पड़ताल में सामने आया कि धमकी देने वाला युवक महुवा थाना क्षेत्र के ही रहने वाला है। एएसपी डॉ. लालचंद कायल ने बताया कि टीम ने मुल्जिम को मात्र 48 घण्टों में रात्रि के दौरान जिला भीलवाड़ा के करेडा कस्बे से गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि टीम ने नंद राम उर्फ कालू गुर्जर पुत्र कैलाश गुर्जर जाति गुर्जर निवासी केसरी थाना मण्डावर जिला दौसा को गिरफ्तार कर मौके से एक एन्ड्रोयड मोबाइल बरामद किया है।

स्पा सेन्टर पर पीटा एक्ट के तहत नौ जने गिरफ्तार

मुखबिर की सूचना पर बाड़मेर पुलिस ने स्पा सेंटर से नौ जनों को गिरफ्तार किया।

बाड़मेर, (निसं)। स्पा सेंटर की आड़ में चल रहे अनैतिक कारोबार पर सोमवार को बाड़मेर पुलिस ने पीटा एक्ट के तहत सोमवार को दबिश देकर चार युवतियों समेत नौ लोगो को गिरफ्तार किया है।

पुलिस वृताधिकारी आनंद सिंह ने बताया कि शहर के एक स्पा सेंटर में जिस्म फरोशी का अनैतिक कारोबार किये जाने की सूचना मुखबिर के जरिये पुलिस को मिली थी। जिस पर पुलिस द्वारा उक्त स्पा सेन्टर पर बोगस ग्राहक भेजकर सूचना की तस्दीक करवाई । सूचना सही पाए जाने पर पुलिस ने सदर थानाक्षेत्र में स्थित उक्त स्पा सेंटर पर पीटा एक्ट के तहत दबिश देकर चार युवतियों व पांच युवकों को गिरफ्तार कर मामला दर्ज किया।

फर्नीचर शोरूम व इलेक्ट्रिक दुकान में लगी आग

पावटा में हुई आगजनी में लाखों का सामान जल गया।

पावटा, (निसं)। उपखंड पावटा के पुराना रोड पर स्थित फर्नीचर के शोरूम व इलेक्ट्रिक की दुकान में आग लगने से लाखों रुपए का फर्नीचर व सामान जल कर राख हो गया। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की कई गाड़ियों ने मौके पर पहुंच कर कई घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। पावटा पुराना रोड पर स्थित जगदीशम इलेक्ट्रिक व सुमंगलम फर्नीचर शोरूम में अज्ञात कारणों के चलते सोमवार की शाम करीब 7.15 बजे आग लग गई। देखते ही देखते आग ने गंभीर रूप धारण कर लिया। आस-पास के लोगों ने पानी के टैंकरों से आग पर काबू पाने का भी प्रयास किया मगर वे सफल नहीं हो पाए।

सूचना मिलते ही शाहपुरा, कोटपूतली, बहरोड से दमकल विभाग की 7-8 गाडियों ने मौके पर पहुंच कर घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। गनीमत यह रही कि आग की चपेट में आस-पास की दुकानें नहीं आई। मौके पर पावटा प्रधान प्रति निधि जगन चौधरी, भाजपा पूर्व प्रदेश महामंत्री कुलदीप धनकड, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि गोपाल अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता निर्मल पंसारी, एससी मोर्चा प्रदेश महामंत्री बद्री प्रसाद चौहान, विनोद यादव सहित ग्रामीणों ने आग बुझाने में पुलिस प्रशासन का सहयोग किया।

चालक को बंधक बना मजिस्ट्रेट की कार लूटी

कोटपूतली, (निसं)। कोटपूतली थाना क्षेत्र में अपराधियों के हौंसले कितने बुलंद हैं इस बात का अंदाजा बीती रात हुई एक मजिस्ट्रेट की कार लूट की घटना से सहजता से लगाया जा सकता है। पुलिस सूत्रों के हवाले से खबर है कि कोटपूतली एमजेएम ऋषभ अग्रवाल का चालक विजेंद्र यादव विगत रात्रि

■ बोलेरो में आए आधा दर्जन बदमाशों ने की वारदात

करीब 10:30 से 11 के बीच ग्राम चतुर्भुज से कोटपूतली आ रहा था। इसी दौरान बानसूर रोड स्थित पेट्रोल पंप के निकट एक बोलेरो में सवार होकर आए करीब आधा दर्जन बदमाशों ने चालक को बंधक बना लिया और गाडी लूटकर बहरोड की ओर ले गए।

बदमाश बहरोड थाना क्षेत्र में चालक को डालकर गाडी लेकर फरार हो गए। घटनाक्रम की सूचना के बाद पुलिस ने जहां नाकाबंदी करवाई है वहीं पुलिस की अलग-अलग टीमें अलवर ,बानसूर व मुंडावर सहित अन्य जगहों के टोल नाकों पर सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। समाचार लिखे जाने तक मामले में पुलिस के हाथ कोई अहम सबूत नहीं लगा है।

हमारा प्रयास है कि भर्तियां समय पर पूर्ण हों, नियुक्ति के लिए इंतजार नहीं करना पड़े : गहलोत

तीन साल में दी 97 हजार नियुक्तियां, भर्तियों की बाधाओं को दूर किया

जयपुर, (कासं) । सीएम अशोक गहलोत ने कहा प्रदेश के सरकारी विभागों में भर्ती परीक्षाओं को त्वरित, वादरहित एवं पारदर्शी बनाने की दिशा में राज्य सरकार मजबूत इच्छाशक्ति एवं संकल्प के साथ काम कर रही है। बीते तीन साल से भी कम समय में करीब 97 हजार पदों पर नियुक्तियां दी गई है। इसके लिए जहां आवश्यक हुआ नियमों में संशोधन और उनका सरलीकरण किया गया। न्यायिक अड़चनों को दूर किया गया। हमारा पुरजोर प्रयास है कि भर्तियां समय पर पूर्ण हों, विधिक या अन्य किसी प्रकार की बाधाओं के कारण वे अटकें नहीं और सफल अभ्यर्थियों को नियुक्ति के लिए इंतजार नहीं करना पडे।

सीएम ने समस्याओं के निराकरण के लिए आरपीएससी वेबपोर्टल के मॉड्यूल को भी लॉन्च किया।

गहलोत सोमवार को मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कांन्फ्रेंस के जरिए राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) के नवीन भवन के शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर आयोग की आंतरिक कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए तैयार किए गए संशोधित मैनुअल के पहले एवं दूसरे खंड का विमोचन किया। उन्होंने अभ्यर्थियों की समस्याओं के प्रभावी निराकरण के लिए आरपीएससी वेबपोर्टल के मॉड्यूल को भी लॉन्च किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान समय में भर्ती एजेंसियों के लिए परीक्षाओं की विश्वसनीयता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। ऐसे में आरपीएससी तथा राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड जैसी संस्थाएं परीक्षाओं के आयोजन में निरन्तर नवाचारों को अपनाएं। उन्होंने कहा कि भर्तियों के अटकने से अभ्यर्थियों में असंतोष एवं निराशा के भाव उत्पन्न होते हैं। हमारी सरकार यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है कि भर्तियों में किसी प्रकार के विवाद की नौबत ही न आए।

गहलोत ने कहा कि आरपीएससी में रिक्त पदों को भरने तथा अन्य आवश्यक संसाधनों को उपलब्ध कराने में सरकार कोई कमी नहीं रखेगी। उन्होंने कहा कि सरकारी विभागों में नियमित पदोन्नति (डीपीसी) प्रक्रिया को शीघ्र संपादित करने के लिए शासन सचिवालय परिसर में आरपीएससी की एक विंग स्थापित करने की दिशा में जल्द उचित निर्णय किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी विभाग रिक्त पदों की अभ्यर्थना को निर्धारित समय पर आयोग के समक्ष भिजवाना सुनिश्चित करें, ताकि कैलेण्डर के अनुरूप भर्तियों का समयबद्ध आयोजन किया जा सके।

■ सभी विभाग रिक्त पदों की सूचना सही समय पर आयोग को भिजवाएं : मुख्यमंत्री अशोक गहलोत

■ राजस्थान लोक सेवा आयोग के नवीन भवन का शिलान्यास

मुख्य सचिव निरंजन आर्य ने कहा कि राजस्थान लोक सेवा आयोग ने पारदर्शिता एवं गुणवत्ता के साथ परीक्षाओं के आयोजन के मामले में देश के अन्य राज्य लोक सेवा आयोगों के बीच अपनी एक अलग पहचान को हमेशा बनाए रखा है। आरपीएससी के अध्यक्ष डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि 3 करोड़ 73 लाख रूपए की लागत से इंटरव्यू एवं गोपनीय कार्य के लिए नए भवन का निर्माण किया जा रहा है।

प्रदेश में लगातार दूसरे दिन भी करोना संक्रमितों की संख्या में कमी आई

राज्य में सोमवार को 12 नए संक्रमित मिले, इससे पहले रविवार को 17 रोगी पाए गए थे

- पिछले चौबीस घंटों में सबसे ज्यादा 8 संक्रमित जयपुर जिले में मिले हैं। इनमें एक स्कूली छात्र भी शामिल है।
- प्रदेश में कई दिनों बाद नए संक्रमितों के मुकाबले दोगुनी रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं।
- इस बीच राज्य में केवल 7 हजार 268 ही जांच के लिए नमूने लिए गए हैं।

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में लगातार दूसरे दिन भी करोना संक्रमण के नए मामलों में कमी आई है। इस दौरान सोमवार को राज्य में 12 नए संक्रमित मिले हैं। हालाकि इनमें सबसे ज्यादा जयपुर में 8 रोगी मिले हैं। वहीं इस बीच कई दिन बाद नए संक्रमितों के मुकाबले दोगुनी रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं।

प्रदेश में सोमवार को पांच जिलों में करोना संक्रमण के 12 नए मामले सामने आए हैं। इससे पहले रविवार को 17 रोगी पाए गए थे। हालाकि आज राज्य में केवल 7268 ही जांच के लिए नमूने लिए गए। इससे पहले रोजाना 20 से 25 हजार के बीच जांचें की जा रही थी।

इधर राजधानी जयपुर में पिछले चौबीस घंटों में रविवार के बराबर ही 8 नए संक्रमित मिले हैं। इसके अलावा अजमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़ और उदयपुर में 1-1 नया रोगी मिला है। इस बीच राजधानी जयपुर में आदर्श नगर और वैशाली नगर में 2-2 और अंबाबाडी, जवाहर नगर, सोडाला तथा मानसरोवर इलाके में 1-1 नया संक्रमित मिला है। मानसरोवर में मिला मरीज स्कूली छात्र है। वह 15 नवंबर से स्कूल नहीं जा रहा है। उसके माता-पिता 4-5 दिन पहले संक्रमित मिले थे।

उधर प्रदेश के 28 जिलों में संक्रमण का कोई भी नया मामला सामने नहीं आया है। इनमें 20 जिलों में अब न कोई नया संक्रमित है और न ही कोई एक्टिव केस बचा है। प्रदेश में सोमवार को 24 मरीज ठीक हुए हैं। इसके साथ ही अब तक इस बीमारी से 9 लाख 45 हजार 628 लोग स्वस्थ हो चुके है। सोमवार को कई दिनों बाद नए संक्रमितों की तुलना में दोगुना रिकवरी होने से एक्टिव केस घटकर 187 रह गए हैं। हालाकि इनमें अभी सर्वाधिक 100 मामले जयपुर में तथा 22 केस अजमेर में हैं। इसके अलावा 11 जिले अलवर, बाड़मेर, बीकानेर, दौसा, हनुमानगढ़, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, पाली, राजसमंद और उदयपुर में 20 से कम एक्टिव केस हैं। प्रदेश में रविवार को भी करोना से किसी भी मरीज की मौत नहीं हुई है। राज्य में इस बीमारी से अब तक 8955 लोगों की मौत हो चुकी है।

अदालती आदेश की पालना क्यों नहीं की?

जयपुर। हाईकोर्ट ने बदरवास स्थित अस्सी फीट रोड के अतिक्रमण के मामले में अदालती आदेश की पालना नहीं होने पर नाराजगी जताई है। अदालत ने कहा कि मामले में अवमानना कर्ता अफसर को दंडित करने से पहले जरूरी है कि जेडीसी 17 दिसंबर को अदालत में पेश हों। अदालत ने जेडीसी को कहा है कि वे शपथ पत्र पेश कर बताए कि करीब 26 माह बीतने के बाद भी अदालती आदेश की पालना क्यों नहीं की गई। न्यायाधीश एमएम श्रीवास्तव और न्यायाधीश विनोद कुमार भारवानी की खंडपीठ ने यह आदेश बदरवास विकास समिति की अवमानना याचिका पर दिए।

अवमानना याचिका में अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने बताया कि बदरवास और धर्म नगर से गुजर रही अस्सी फीट रोड का ले आउट प्लान तैयार करने और अतिक्रमण के संबंध में हाईकोर्ट ने 16 अगस्त 2019 को जेडीए को दो माह में पालना करने को कहा था। इसके बावजूद अब तक अदालती आदेश की पालना नहीं की गई। याचिका में जेडीसी गौरव गोयल को पक्षकार बताने हुए कहा कि अदालती आदेश की अवमानना करने पर दोषी अधिकारी को दंडित किया जाए।

शाह के जयपुर दौरे को भव्य और ऐतिहासिक बनाने में जुटी भाजपा

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के दौरे को लेकर भाजपा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनिया और प्रदेश प्रभारी चन्द्रशेखर ने पदाधिकारियों की बैठक लेकर महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिये।

जयपुर। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के 5 दिसंबर को जयपुर दौरे को लेकर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ.सतीश पूनिया एवं प्रदेश संगठन महामंत्री चन्द्रशेखर ने भाजपा प्रदेश कार्यालय में पदाधिकारियों की बैठक लेकर तैयारियों के बारे में संवाद कर दिशा-निर्देश दिए।

बैठक में अमित शाह के दौरे को भव्य व ऐतिहासिक बनाने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई। स्वागत, प्रदेश कार्यसमिति, जनप्रतिनिधि सम्मेलन के लिए गठित की गई टीमों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए गए। अमित शाह के स्वागत में प्रदेश के मेवाड़, मारवाड़, शेखावटी, हाडौती, ब्रज, ढूंढाड़ इत्यादि संस्कृतियों का ऐतिहासिक संगम देखने को मिलेगा, वहीं सम्पूर्ण राजस्थान की संस्कृति की भव्यता के दर्शन भी होंगे। जयपुर के जेईसीसी सभागार में 5 दिसंबर को अमित शाह प्रदेश कार्यसमिति बैठक को संबोधित करने के बाद जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करेंगे जिसमें नगर निकाय, पंचायतीराज, सहकारिता, सांसद, विधायक इत्यादि जनप्रतिनिधियों को अमित शाह मार्गदर्शन देंगे। बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष सरदार अजय पाल सिंह, प्रदेश महामंत्री भजनलाल शर्मा, सुशील कटारा, प्रदेश मंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, अल्पसंख्यक मोर्चा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हुसैन खान, जयपुर शहर जिला अध्यक्ष राघव शर्मा, युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष हिमांशु शर्मा, जयपुर ग्रेटर नगर निगम डिप्टी मेयर पुनीत कर्नावत, अजमेर डिप्टी मेयर नीरज जैन, सहकारिता प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक प्रमोद सामर, इत्यादि प्रमुख पदाधिकारी एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

- शाह के स्वागत में प्रदेश के मेवाड़, मारवाड़, शेखावटी, हाडौती, ब्रज, ढूंढाड़ इत्यादि संस्कृतियों का ऐतिहासिक संगम देखने को मिलेगा, वहीं सम्पूर्ण राजस्थान की संस्कृति की भव्यता के दर्शन भी होंगे

गहलोत युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार के उपाय कीजिए : शेखावत

जयपुर। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने बेरोजगारों को लेकर ट्वीट कर कहा कि प्रदेश के युवा बेरोजगार अपनी फरियाद लेकर आखिर जाएं तो जाएं कहाँ, यहां के मुखिया ने कानों में रूई लगाई हुई है। लखनऊ आस लेकर गए तो, वहाँ भी निराशा, क्योंकि प्रियंका गांधी जी पर्यटन पर हैं। स्पष्ट रूप से यह इन युवाओं से धोखा है। वहीं बेरोजगारी के मुद्दे पर केंद्रीय जलशक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने एक बार फिर कांग्रेस पार्टी को घेरा है। सीएमआईई की रिपोर्ट का हवाला देते हुए शेखावत ने कहा कि गहलोत युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार उत्पन्न करने के उपाय कीजिए। सोमवार को शेखावत ने कहा कि बेरोजगारी के मुद्दे पर घिरी राजस्थान की कांग्रेस सरकार गुजरात का वीडियो वायरल कर झूठ फैला रही है, लेकिन आंकड़े झूठ नहीं बोलते। सीएमआईई की 27 नवंबर 2021 की रिपोर्ट के अनुसार गुजरात में बेरोजगारी दर 2.4 प्रतिशत तो राजस्थान में बेरोजगारी दर 29.6 प्रतिशत, ये जमीन-आसमान का अंतर है। तुलना ही नहीं है। केंद्रीय मंत्री ने सवाल किया कि अब क्या कहेगी कांग्रेस? क्या राजस्थान से लखनऊ जाकर प्रियंका वॉड्रा से रोजगार मांग रहे युवा गुजरात से आए हैं? गहलोत जी युवाओं को भरमाने के बजाय रोजगार उत्पन्न करने के उपाय कीजिए। केंद्रीय मंत्री शेखावत ने कांग्रेस सांसदों के संसद परिसर में कृषि कानून वापस लेने की मांग वाले प्रदर्शन पर तंज कसा।

विकलांग शिविर लगाने के लिए जयपुर फुट की सराहना की सोनिया गांधी ने

जयपुर, (का.सं.)। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सांसद और कांग्रेस के कोषाध्यक्ष की पुण्यतिथि पर गुजरात के अंकलेश्वर नगर में आयोजित विकलांग शिविर के लिए जयपुर फुट निर्माता भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) की प्रशंसा की हैं। इस शिविर का सोमवार को समापन हुआ।

सोनिया गांधी ने अपने संदेश में कहा की स्वर्गीय अहमद पटेल की पहली पुण्यतिथि के अवसर पर बी.एम.वी.एस.एस.ने दिव्यांगों को बैसाखी, ट्राई साईकिल, व्हील चेयर और कृत्रिम पैर जयपुर फुट लगाकर विकलांगों की सेवा की हैं। सोनिया गांधी ने कहा कि अहमद भाई का पूरा राजनीतिक जीवन गरीबों की सेवा और उनके उत्थान के लिए बीता। वह निर्धन और निर्बल दोनों की मदद करते रहे और ऐसे लोगों को जिन्हें बीमारी आदि के कारण जीवन में अवसर नहीं मिले उन्होंने अवसर प्रदान करने में कसर नहीं रखी।

सोनिया गाँधी ने कहा कि ऐसे विकलांग दुखिया और निर्बल लोगों की सेवा करना अहमद भाई को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस शिविर का 25 नवम्बर को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उदघाटन किया था। इस समारोह में गुजरात में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के प्रभारी रघु शर्मा, सांसद और मुमताज अहमद पटेल के अलावा जयपुर फुट के सचिव भूपेन्द्र राज मेहता और कार्यकारिणी के सदस्य गिरधारी सिंह बाफना भी उपस्थित थे।

सोनिया गांधी ने जयपुर फुट के अलावा, सरदार पटेल अस्पताल तथा हार्ट इंस्टीट्यूट के सहयोग के लिए भी धन्यवाद दिया।

बी.एम.वी.एस.एस. के सचिव भूपेन्द्र राज मेहता जो अंकलेश्वर में आयोजित विकलांग शिविर का संचालन कर रहे थे ने बताया कि शिविर में 133 लोगों को जयपुर फुट 70 पोलियोग्रस्त को कैलिपर्स, 275 को ट्राई साईकिल, 200 को व्हील चेयर, 140 को बैसाखी और 398 को शिविर में श्रवण यंत्र प्रदान किए गए और कुल 1216 लोगों को लाभान्वित किया गया।

एन.सी.सी. केडैट्स की नियमित फ्लाईंग शुरू

जयपुर, (कासं)। एनसीसी निदेशालय राजस्थान के उप महानिदेशक एयर कमोंडोर एल के जैन और एन सी सी समूह मुख्यालय जयपुर के तत्वावधान में 1 राज एयर स्क्वाड्रन एनसीसी, जयपुर द्वारा माईक्रोलाईट फ्लाईंग का आयोजन सांगानेर एयरपोर्ट पर किया गया। इस आयोजन में 1 राज एयर स्क्वाड्रन एनसीसी, जयपुर युनिट के सीनियर डिवीजन व विंग के कैडिटो ने इस मौके पर भाग लिया। यह माईक्रोलाईट स्लोवियन दो सीटर ट्रेनर एयर क्राफ्ट है। इसका भारतीय नाम "गरूड" दिया गया हैं यह माईक्रोलाइट फाईबर ग्लास कम्पोसीट सामग्री से बना हुआ है और यह 170 किलोमीटर प्रति घन्टे की स्पीड से उड़ान भरता है। 1 राज एयर स्क्वाड्रन एनसीसी, जयपुर में लगभग 02 वर्ष के लम्बे अन्तराल के बाद केडैटो को माईक्रोलाईट फ्लाईंग करवाई। 1 राज एयर स्क्वा. एनसीसी के कमान अधिकारी ग्रुप कैप्टन नीरज अम्बा के साथ कुल 20 कैडेट्स ने फ्लाईंग की। जिससे केडैटो में बड़ा उत्साह देखा गया। 1 राज एयर स्क्वा. एनसीसी के कमान अधिकारी ग्रुप कैप्टन नीरज अम्बा मिग - 21, मिग - 27, एमआई-37 हेलिकॉप्टर, चेतक, चीता हेलिकॉप्टर, एएलएच हेलिकॉप्टर जो कि प्रधानमंत्री ने देश को समर्पित किया हैं जिसके पाइलेट भी रह चुके हैं। माईक्रोलाईट फ्लाईंग केडैटो को एविऐशन क्षेत्रो में जाने के लिए प्रेरित करता हैं।

फसल बुवाई के लिए किसानों को पर्याप्त बिजली दें : मुख्यमंत्री

जयपुर, (का.सं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि रबी सीजन में फसलों की बुवाई को देखते हुए किसानों को बिजली की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि बिजली कम्पनियां कर्ज का बोझ कम करने एवं ट्रांसमिशन-डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए दीर्घकालीन कार्य योजना बनाएं।

गहलोत सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर ऊर्जा विभाग की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर किसानों को बूंद-बूंद सिंचाई एवं फव्वारा सिंचाई पद्धति अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए। उन्होंने इस संबंध में व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए।

बैठक में ऊर्जा राज्य मंत्री भंवर सिंह भाटी ने कहा कि "मुख्यमंत्री किसान मित्र ऊर्जा योजना" का किसानों को काफी लाभ मिल रहा है। सब्सिडी मिलने के कारण कई किसानों के बिजली के बिल शून्य हो गए हैं। चेयरमैन डिस्कॉम्स भास्कर ए सावंत ने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से बताया कि रबी सीजन 2021-22 में किसानों को पर्याप्त बिजली उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य योजना तैयार की गई है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा सुबोध अग्रवाल ने बताया कि कोयले की पर्याप्त आपूर्ति के लिए केन्द्र सरकार के अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित किया जा रहा है। बैठक में अधिकारियों ने बताया कि दिसंबर 2018 से अभी तक करीब ढाई लाख कृषि कनेक्शन दिये जा चुके हैं।

इस अवसर पर मुख्य सचिव निरंजन आर्य, प्रमुख शासन सचिव वित अखिल अरोरा, राजस्थान विद्युत उत्पादन निगम के सीएमडी आर के शर्मा, जयपुर डिस्कॉम के एमडी नवीन अरोड़ा, जोधपुर डिस्कॉम के एमडी अविनाश सिंघवी, अजमेर डिस्कॉम के एमडी वीएस भाटी सहित ऊर्जा विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पहले दिन 7 उम्मीदवारों ने दाखिल किए 8 नामांकन पत्र

जयपुर, (का.सं.)। प्रदेश के 4 जिलों में होने वाले जिला परिषद और पंचायत समिति सदस्यों के चुनाव के लिए नामांकन के पहले दिन 7 उम्मीदवारों ने 8 नामांकन पत्र दाखिल किए। ये सभी नामांकन पंचायत समिति सदस्यों के लिए प्राप्त हुए हैं। जिला परिषद सदस्यों के लिए पहले दिन किसी भी उम्मीदवार ने भी नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया।

चुनाव आयुक्त पी.एस. मेहरा ने कहा कि बारां, करौली, कोटा एवं श्रीगंगानगर जिलों में 106 जिला परिषद सदस्य, 568 पंचायत समिति सदस्य, 4 जिला प्रमुख एवं 4 उप जिला प्रमुख तथा 30 प्रधान एवं 30 उप प्रधानों के लिए आम चुनाव करवाया जाएगा। चारों जिलों की 973 ग्राम पंचायतों में सुगम मतदान के लिए कुल 4161 मतदान बूथ स्थापित किए जाएंगे। मेहरा ने कहा कि तीनों जिलों में आगामी 12, 15 और 18 दिसंबर को तीन चरणों में चुनाव करवाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि नाम निर्देशन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय 2 दिसंबर दोपहर 3 बजे तक रहेगी। नाम निर्देशन पत्रों की संवीक्षा 3 दिसंबर प्रात: 11 बजे से होगी, जबकि 4 दिसंबर दोपहर 3 बजे तक नाम वापस लिए जा सकेंगे। नाम वापसी के साथ ही चुनाव प्रतीकों का आवंटन एवं चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों की सूची का प्रकाशन कर दिया जाएगा।

प्रदेश में 3 लाख लोगों को लगी वैक्सीन

जयपुर (कासं)। प्रदेश में सोमवार को 3 लाख से ज्यादा लोगो को कोविड वैक्सीन लगी। इसके साथ ही अब तक 6 करोड़ 78 लाख से ज्यादा लोगों का टीकाकरण किया जा चुका है। केन्द्र सरकार की ओर से राज्य को पर्याप्त वैक्सीन मिलने के बाद टीकाकरण में तेजी आई है। इसके चलते आज 3 लाख 22 हजार 106 लोगों को वैक्सीन लगी। इनमें 51 हजार 418 लोगों को पहली तथा 2 लाख 70 हजार 668 लोगों को दूसरी डोज दी गई। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक 18 से अधिक उम्र वाले 42 हजार 90 लोगों को पहली तथा 2 लाख 5 हजार 84 लोगों को दूसरी डोज लगाई गई। इसके अलावा 45 से अधिक आयु वर्ग में 9300 लोगों को प्रथम तथा 64 हजार 377 लोगों को दूसरी डोज दी गई। राज्य में अब तक 6 करोड़ 78 लाख 50 हजार 112 लोगों का टीकाकरण किया जा चुका है, इनमें 4 करोड़ 34 लाख 22 हजार 260 लोगों को पहली डोज लगी है। जबकि 2 करोड़ 44 लाख 27 हजार 852 लोगों को दोनों डोज लग चुकी है।

रेजीडेंट डॉक्टरों की हड़ताल के कारण मरीज हुए परेशान

जयपुर। नीट पीजी काउंसलिंग में देरी के विरोध में रेजिडेंट डॉक्टर्स प्रदेशव्यापी हड़ताल पर चले गए हैं। इससे जयपुर के एसएमएस सहित विभिन्न अस्पतालों में इलाज के लिए आए मरीजों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। हांलाकि इस दौरान वरिष्ठ चिकित्सकों ने कमान संभाली, लेकिन मरीजों की संख्या को देखते हुए यह व्यवस्था नाकाफी रही।

रेजीडेंट्स का कहना है कि नीट की काउंसलिंग नहीं होने के कारण उन पर लगातार काम का बोझ बढ़ रहा है, इसके कारण वह अवसाद का शिकार हो रहे हैं। काउंसलिंग को केंद्र सरकार गंभीरता से नहीं ले रही है। रविवार को प्रदेश के रेजिडेंट चिकित्सकों ने ओपीडी का बहिष्कार कर सोमवार से अनिश्चितकालीन कार्य बहिष्कार पर जाने की चेतावनी दी थी। आंदोलन के अगले चरण में रेजिडेंट ओपीडी के साथ-साथ आईपीडी, एकेडमिक शेड्यूल और कक्षाओं का भी बहिष्कार करेंगे। केवल इमरजेंसी सेवाओं को चालू रखेंगे। जयपुर एसोसिएशन ऑफ रेजिडेंट डॉक्टर्स के अध्यक्ष अमित यादव ने बताया कि काउंसलिंग में हो रही देरी के चलते नया बैच अस्पतालों में नहीं आ पा रहा है। ऐसे में जहां 1000 रेजिडेंट चिकित्सकों की अस्पतालों में जरूरत है, वहां सिर्फ 600 ही काम कर रहे हैं। बाकी 400 रेजिडेंट का कार्य भी मौजूदा रेजिडेंट चिकित्सकों पर ही है। रेजीडेंट्स की हड़ताल के कारण अस्पतालों में व्यवस्थाएं चरमरा गई। हालांकि अस्पताल प्रशासन ने वैकल्पिक व्यवस्था की गई है। ओपीडी में सीनियर चिकित्सकों को लगाया गया। मरीजों की संख्या को देखते हुए यह नाकाफी इंतजाम नजर आए। वहीं कार्य बहिष्कार के कारण एसएमएस अस्पताल, जेके लोन अस्पताल, गणगौरी और जनाना अस्पताल सहित राज्य में अन्य सरकारी अस्पतालों में कार्य प्रभावित हुए।

अक्षय यादव शहर उपाध्यक्ष बने

जयपुर (कासं)। राजस्थान युवा यादव महासभा के जयपुर शहर उपाध्यक्ष पद पर अक्षय यादव को नियुक्त किया गया है। यह नियुक्ति महासभा के प्रदेशाध्यक्ष महेन्द्र कुमार यादव ने दी हैं। उन्हें राजस्थान युवा महासभा के कार्यों को आगे बढ़ाने और समाज की गतिविधियों और प्रतिष्ठा में वृद्धि के लिए कार्य करने का आव्हान किया गया है।

'राज्य में फसल बीमा पॉलिसी की संख्या एक करोड़ पार हुई'

कृषि मंत्री लालचंद कटारिया ने सोमवार को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथों को रवाना किया।

जयपुर। कृषि मंत्री लालचन्द कटारिया ने कहा कि राज्य सरकार के नवाचारों, निरन्तर प्रचार-प्रसार एवं किसानों को समय पर बीमा क्लेम का भुगतान करने से प्रदेश में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की लोकप्रियता में निरन्तर वृद्धि हुई है। राज्य में वर्ष 2020-21 में फसल बीमा पॉलिसियों की संख्या एक करोड़ से ऊपर पहुंच गई है।

कटारिया ने सोमवार को यहां अपने कार्यालय से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रचार रथों को रवाना करते हुए बताया कि राज्य में वर्ष 2018-19 में लगभग 78 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल का फसल बीमा हुआ था, जो बढ़कर 20-21 में करीब 1 करोड़ 13 लाख हैक्टेयर हो गया है। इसी प्रकार फसल बीमा पॉलिसियों की संख्या 2018-19 में 72 लाख से बढ़ते हुए 20-21 में 1 करोड़ 7 लाख हो गई है।

कृषि मंत्री ने बताया कि राज्य में पिछले 3 साल में 80 लाख से ज्यादा किसानों को लगभग 13 हजार करोड़ रुपए के बीमा क्लेम का भुगतान किया गया है। हनुमानगढ़ जिले के अलावा रबी 2020-21 तक के समस्त बीमा क्लेमों का भुगतान किया जा चुका है। उन्होंने राज्यांश प्रीमियम भुगतान की जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान सरकार ने अपने अब तक के कार्यकाल में गत सरकार के बकाया राज्यांश प्रीमियम के साथ-साथ रबी 2020-21 तक के लिए समस्त राज्यांश प्रीमियम का भुगतान बीमा कम्पनियों को कर दिया है। खरीफ 2021 के लिए राज्यांश प्रीमियम भुगतान प्रक्रियाधीन है। कृषि आयुक्त डॉ. ओमप्रकाश ने बताया कि राज्य में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 7 बीमा कम्पनियों द्वारा फसल बीमा का काम किया जा रहा है। खरीफ में 19 तथा रबी में 17 फसलों का बीमा जिलों में बोई गई फसलों के हिसाब से किया जा रहा है। रबी के लिए आगामी 25 दिसम्बर तक प्रदेशभर में 250 से ज्यादा वैनों के द्वारा लीफलेट वितरण, पोस्टर, होर्डिंग, किसान गोष्ठी से प्रचार करेंगे।

बीवीजी कंपनी की हड़ताल के कारण जयपुर में गंदगी के ढेर लगे, महापौर मुनेश व धाबाई ने चुप्पी साधी

प्रताप सिंह खाचरियावास ने कंपनी के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए कहा "बीवीजी कंपनी को नगर निगम पैसा देता हैं, उसे हड़ताल करके जयपुर में सफाई व्यवस्था बिगाड़ने का कोई हक नहीं हैं।"

जयपुर (कासं)। बीवीजी कंपनी की हड़ताल के कारण जयपुर में घर-घर कचरा संग्रहण बंद हैं। इस कारण परकोटा क्षेत्र, वीआईपी कॉलोनियों, मुख्य सड़कों और कॉलोनियों में कचरे के ढेर लगे पड़े हैं। इसके बावजूद महापौर मुनेश गुर्जर और शील धाबाई इस कंपनी पर कार्रवाई के बजाय चुप्पी साधे बैठी हैं।

अब कैबिनेट मंत्री और सिविल लाइंस विधायक प्रतापसिंह खाचरियावास ने बीवीजी कंपनी को जयपुर से बाहर का रास्ता दिखाने की बात कही है। इसके लिए खाचरियावास ने यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल से मुलाकात करने और नगर निगम के ही स्तर पर सफाई का काम छोटे-छोटे ठेके देकर शुरू करवाने की बात कही। वे आज दोपहर 12 बजे हैरिटेज नगर निगम में अफसरों की क्लास लेकर भी बदहाल सफाई पर चर्चा करेंगे।

सूत्रों के मुताबिक जयपुर में पिछले चार दिन से सफाई व्यवस्था पूरी तरह ठप्प पड़ी है। लोगों के घरों पर डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन के लिए हूपर नहीं पहुंच रहे। हालात ये हो गए है कि घरों से कचरा नहीं उठने के कारण लोग मजबूरन सड़कों पर ओपन डिपो पर कचरा फैंक रहे है, जिसके कारण शहर में जगह-जगह कचरे के ढेर लग गए हैं। जबकि बीवीजी कंपनी के पास डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन के अलावा सड़कों पर भी डिपो से कचरा उठाने का जिम्मा है। इस पूरे काम पर नगर निगम हर महीने 23 से 25 करोड़ रुपए खर्च भी कर रहा है। उसके बावजूद भी लोगों को सुविधा नहीं मिल रही।

जयपुर रेलवे स्टेशन के नजदीक शहर के किनारे लगा कचरे का यह ढेर 'स्वच्छता रैंकिंग में पिछड़ने की वजह साफ बयां कर रहा है। नगर निगम ने भले ही यहां दीवार पर स्वच्छता जागरूकता का स्लोगन लिखवा रखा है, लेकिन बीवीजी कंपनी की हड़ताल ने इस पूरे अभियान की धज्जियां उडा दी हैं। फोटो-राष्ट्रदूत

- खाचरियावास आज दोपहर 12 बजे हैरिटेज नगर निगम मुख्यालय में लेंगे अफसरों की बैठक, यूडीएच मंत्री से मुलाकात करके भी इस कंपनी पर कार्रवाई की मांग उठाएंगे
- प्रताप सिंह ने बिना नाम लिये दोनों मेयर पर निशाना साधते हुए कहा कि "पार्षद और महापौर चाहें किसी भी पार्टी के हों, लेकिन सफाई करवाना उनकी जिम्मेदारी हैं।"

मंत्री खाचरियावास ने बताया कि बीवीजी कंपनी को सफाई का ठेका दे रखा है। कंपनी ने उस काम को अपने स्तर पर ही शहर में छोटे-छोटे एरिया में सबलेट कर रखा है, इसके बावजूद हालात खराब है। बीवीजी कंपनी के प्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त है और जेल जा चुके है। उनकी मनमर्जी के कारण पार्षद तक परेशान है।

उन्होंने कहा कि पार्षदों की कोई सुनवाई नहीं होती। ऐसे में जो काम कंपनी कर रही है, वह काम अब नगर निगम के जरिए करवाएंगे। इस मामले पर मैं यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल से बात करूंगा और छोटे-छोटे टेन्डर के जरिए वार्डो में सफाई का काम ठेके पर देने की मांग उठाऊंगा। ताकि उन छोटे-छोटे ठेकेदारों पर नगर निगम के वार्ड कर्मचारी के साथ-साथ पार्षद भी मॉनिटरिंग कर सके और सफाई व्यवस्था को बेहतर करवा सके।

प्रताप सिंह ने बिना नाम लिये दोनों मेयर पर निशाना साधते हुए कहा कि "पार्षद और महापौर चाहें किसी भी पार्टी के हों, लेकिन सफाई करवाना उनकी जिम्मेदारी हैं।"

बताया जा रहा है कि जयपुर में बीवीजी कंपनी ने 9 करोड़ रुपए का बकाया भुगतान मांगते हुए हड़ताल की है। हालांकि आज दिन में नगर निगम प्रशासन से बातचीत होने और जल्द भुगतान होने का आश्वासन मिलने के बाद कंपनी के कर्मचारी वापस काम पर लौट आए। हड़ताल के कारण दो दिन से शहर का करीब 900 मीट्रिक टन से ज्यादा कचरा सड़कों पर पड़ा रहा, जिसे उठाने की कवायद शुरू हो रही हैं।

ऑनलाइन शिक्षा से सरकारी विद्यालयों के छात्रों के साथ अन्याय हुआ : आचार्य

बीकानेर, (कासं)। राजस्थान शिक्षक संघ (प्रगतिशील) का 60 वां जिला स्तरीय शिक्षक सम्मेलन पेंशनर समाज भवन में आयोजित किया गया। दो दिवसीय सम्मेलन के प्रथम दिन की अध्यक्षता अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के पूर्व जिलाध्यक्ष सत्यनारायण पंवार ने की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर विकास न्यास बीकानेर के पूर्व चेयरमैन एवं पूर्व महापौर नगर निगम बीकानेर हाजी मकसूद अहमद एवं विशिष्ट अतिथि संगठन के प्रदेश महामंत्री यतीश वर्मा थे। दो दिवसीय सम्मेलन के प्रथम दिन जिला मंत्री गोविन्द भार्गव ने संगठन का वार्षिक प्रतिवेदन पढ़ा। जिलाध्यक्ष आनंद पारीक ने उपस्थित शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षकों को अपने कर्तव्य का निर्वहन करना चाहिए। साथ ही शिक्षा जगत में नवाचारों पर भी अपने विचार रखे। प्रांतीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुभाष आचार्य ने ऑनलाइन शिक्षा पर कहा कि ऑनलाइन शिक्षा से सरकारी विद्यालयों के छात्रों के साथ अन्याय हुआ है।

साथ ही इससे निजी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों को भी नुकसान हुआ है। गत 2 वर्ष से कोरोना काल के कारण छात्रों की पढ़ाई बिल्कुल चौपट हो चुकी है। अत: राज्य सरकार को इस संबंध में भी कोई विचार करना चाहिए। प्रांतीय महामंत्री यतीश वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि सरकार को गुणवत्तापूर्वक शिक्षा के लिए शिक्षकों से अनावश्यक कार्य लिए जा रहे हैं।

आज प्रत्येक शिक्षक को ऑनलाइन काम करते-करते ऑफलाइन का समय ही नहीं मिलता है। वह अपनी कक्षा में भी मोबाइल पर ही काम करता रहता है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा में गुणात्मक सुधार की परिकल्पना करना असंभव है। सरकारी विद्यालयों में संसाधनों का अभाव है तथा दूरदराज के क्षेत्रों में नेटवर्क की समस्या भी रहती है। सरकार को चाहिए कि वह कोरोना को दृष्टिगत रखते हुए छात्रों की वार्षिक परीक्षा भी समय से पूर्व यथा मार्च तक करवा लेनी चाहिए। मुख्य अतिथि हाजी मकसूद अहमद ने अपने उद्बोधन में कहा कि आप लोगों की जो भी समस्याएं हैं उसे मैं राज्य सरकार तक पहुंचाऊंगा और आपकी समस्याओं का निदान कराने में हर वक्त आप लोगों के साथ हूं। अध्यक्ष भाषण में सत्यनारायण पवार ने कहा कि आज राजस्थान में ही नहीं संपूर्ण भारत में गत 2 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में एक ग्रहण सा लगा हुआ है जो आप शिक्षक ही इसे दूर कर सकते हैं। इसमें राज्य सरकार को भी आप लोगों को भी मदद करनी चाहिए। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें शिक्षा जगत से दीपक जोशी, मोहम्मद आरिफ, ओम आचार्य, आशाराम जोशी, मोहम्मद इलियास जोईया, अनिल वर्मा, सुभाष आचार्य, सत्यनारायण व्यास का माल्यार्पण, मोमेंटो ओर दुपट्टा ओढ़कर सम्मानित किया गया। शिक्षक संघ शेखावत के जिला शाखा का वार्षिक शिक्षक सम्मेलन का आगाज रा. उ. मा. वि. सादुल बीकानेर में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा सुरेन्द्र सिंह भाटी व मुख्य वक्ता विजय कुमार ऐरी, प्रो. राजकीय डूंगर महाविद्यालय तथा विशिष्ट अतिथि यशपाल पंवार प्रधानाचार्य राउमावि सार्दुल स्कूल रहे। शैक्षिक सम्मेलन की अध्यक्षता प्रदेश कार्यकारणी सदस्य रेवंत राम गोदारा ने की। मुख्य वक्ता विजय कुमार ऐरी ने नई शिक्षा नीति पर कहा कि कक्षा 1 से 5 तक प्ले स्कूल की तरह विद्यालय को चलाकर आर एस एस की शाखाओं द्वारा ज्ञान परोस देश की नई पौध के साथ खिलवाड करने की साजिष हो रही है।

बीकानेर में वरिष्ठ कर्मचारी नेता सत्यनारायण पंवार ने शिक्षक संघ प्रगतिशील के जिला स्तरीय सम्मेलन को संबोधित किया।

- शिक्षक संगठनों के जिला स्तरीय सम्मेलन में शिक्षा में नवाचार पर किया मंथन

कल्ला ने बीसूका की समीक्षा बैठक ली

हनुमानगढ़, (कासं)। प्रशासन गांवों व शहरों के संग अभियान के अन्तर्गत शत-प्रतिशत लोगों को मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से जोड़ने का कार्य करें। प्रशासन गांवों के संग अभियान के अंतर्गत गांवों के लोग अपने ही गांव में लगे शिविर का अधिक से अधिक लाभ लें।

शिविर में लोगों को पट्टे मिले, भूमिहीनों को जमीन मिले, विभिन्न तरह के प्रमाण-पत्र, खातेदारी इत्यादि लाभ मिले। प्रशासन गांवों व शहरों के संग अभियान के अन्तर्गत अधिकारीगण टीम भावना से कार्य करते हुए अधिक से अधिक लोगों को लाभान्वित करे। ये कहना है जिला प्रभारी मंत्री एवं शिक्षा मंत्री डॉ बी. डी. कल्ला का जो सोमवार को नोहर पंचायत समिति सभागार में आयोजित जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। डॉ बी. डी. कल्ला ने बैठक में प्रशासन गांवों व शहरों के संग अभियान के अलावा फ्लैगशिप योजनाओं, 15 सूत्री एवं 20 सूत्री कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए कहा कि हनुमानगढ़ जिला फलैगशिप स्कीम में अच्छा कार्य कर रहा है। 20 सूत्री कार्यक्रम में जो विभाग बी और सी कैटेगिरी में है वह अपनी परफोर्मेंस सुधारते हुए इसे ए कैटेगिरी में लाने का प्रयास करें। 15 सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत महात्मा गांधी नरेगा योजना के अन्तर्गत अल्पसंख्यक वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए।

सार-समाचार

डेरा सच्चा सौदा का धार्मिक आयोजन

श्रीगंगानगर, (कासं)। नूरे जलाल है छा गया, सतगुरु प्यारा आ गया, आज का दिन है कितना सुहाना, अज्ज जाए सतगुरुजी, बेपरवाह का जन्म भंडारा खुशियां मना रही संगत सारी... आदि भजन गाते श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा। मौका था डेरा सच्चा सौदा सिरसा के संस्थापक बेपरवाह साई शाह मस्ताना महाराज के अवतार दिवस पर आयोजित स्पेशल नामचर्चा व भंडारे का। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए जिलेभर के अलग-अलग ब्लॉकों से बसों के जरिए संगत को यहां लाया गया। महिला श्रद्धालुओं के लिए बनाया गया पंडाल इतना छोटा पड़ गया कि उन्हें रामलीला मैदान में बनी दर्शक दीर्घा में बैठना पड़ा। शाह सतनाम ग्रीन एस वेलफेयर फोर्स विंग श्रीगंगानगर ब्लॉक के जिम्मेदार अवतार कामरा ने बताया कि शाह मस्ताना के अवतार दिवस पर 40 क्विंटल आटा, 12 क्विंटल बूंदी, 10 क्विंटल दाल व 20 क्विंटल सब्जियों से 35 हजार संगत के लिए भंडारा तैयार किया गया था। भंडारा सहित अन्य व्यवस्थाओं में 1200 से ज्यादा सेवादार जुटे हुए थे। वहीं पुलिस ने भी व्यवस्थाएं बनाने में सहयोग दिया। बता दें कि वर्ष 2006 के बाद रविवार को सुखाड़िया सर्किल स्थित रामलीला मैदान में डेरा सच्चा सौदा का पहला बड़ा कार्यक्रम हुआ। सहायता गुरू की ओर से दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए जरूरतमंदों की सहायता का संदेश दिया गया। 130 परिवारों को 1 माह का राशन व 130 जरूरतमंदों को गर्म कंबल वितरित किए गए। साध-संगत के लिए भंडारे की व्यवस्था की गई। सेवा कार्य में पंडाल समिति लंगर व पानी समिति के साथ शाह सतनाम ग्रीन एस वेलफेयर फोर्स विंग के सेवादारों का विशेष योगदान रहा। नाम चर्चा में दोपहर 12 से 2 बजे तक साध-संगत के आने का सिलसिला लगातार जारी रहा। श्रद्धालु अपने वाहनों के अलावा बसों के जरिए नामचर्चा स्थल पर पहुंचे। सुबह 11 बजे से ही साध-संगत नामचर्चा स्थल पर पहुंचनी शुरू हो गई। साध-संगत ने हाथ खड़े कर मानवता की भलाई के काम लगातार जारी रखने का संकल्प दोहराया। नामचर्चा के अंत में पांच मिनट तक सिमरन किया गया। नाम चर्चा की समाप्ति पर साध-संगत को गुरु का प्रसाद वितरित किया गया।

ग्राम पंचायत भवन का उद्घाटन किया

बीकानेर, (कासं)। आपदा प्रबन्धन एवं सहायता विभाग मंत्री गोविन्द राम मेघवाल ने छतरगढ़ में सांसी समाज के सामुदायिक भवन के लिए विधायक निधि कोष से 5 लाख रुपए देने की घोषणा की। मंत्री मेघवाल ने कहा कि किसी भी समाज के आगे बढ़ने का आधार शिक्षा है अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाएं और उनके जीवन के साथ-साथ समाज का विकास सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि प्रजातंत्र की मजबूती के लिए सभी जाति धर्म के लोग भाईचारे से रहें। क्षेत्र में विकास के लिए हरसंभव प्रयास किया जाएगा। कैबिनेट मंत्री ने 4 एडब्लयूएम में ग्राम पंचायत भवन का उद्घाटन किया। इस भवन की चारदीवारी के लिए विधायक कोष से 5 लाख दिए जाने की घोषणा की। इस अवसर पर उमराव खां भाटी, नंदराम जाखड, पूर्णाराम थालोड, छगनलाल मेघवाल, ओम प्रकाश सिखवाल, हनुमान मेघवाल, आवा सरपंच खीयाराम, चन्द्र प्रकाश धतरवाल, अर्जुनराम खटीक, खारवाली सरपंच काले खां, सत्तासर सरपंच बरकत अली, भीम सिंह, सद्दाम हुसैन सहित ग्रामीण व पंचायत राज प्रतिनिधि उपस्थित थे। भामाशाह हनुमान मेघवाल का मंत्री ने साफा पहनाकर सम्मान किया। रामनिवास कूकणा, उरमूल डेयरी के चेयरमैन नोपाराम जाखड़ ने भी विचार व्यक्त किए। कैबिनेट मंत्री ने ग्राम पंचायत 1 के एम के 35 लाख रुपए की लागत से बने नवनिर्मित पंचायत भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जिला परिषद सदस्य सरिता चौहान, आशा देवी मेघवाल, पूगल प्रधान गौरव चौहान, सत्तासर सरपंच बरकत अली, सद्दाम हुसैन, उरमूल डेयरी के चेयरमैन नोपाराम जाखड, सम्पतराम, सहीराम गोदारा, जगदीश, पूर्णाराम थालोड़, हसन अली मौलवी, सरपंच रूघी, विकास अधिकारी पूगल राजेन्द्र जोईया उपस्थित थे। इस अवसर पर ग्राम पंचायत 1 के एम की ओर से कैबिनेट मंत्री मेघवाल का स्वागत किया। मंत्री ने कहा कि खाजूवाला विधानसभा क्षेत्र में शिक्षा, सड़क, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करवाया जायेगा। इस अवसर पर उपखण्ड अधिकारी छतरगढ सत्यनारायण सुथार, सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग के उप निदेशक एल. डी. पंवार भी थे।

फ्री इलाज के बदले वसूली राशि दिलाई

बीकानेर, (कासं)। सरकारी खर्च पर प्राईवेट हॉस्पिटल्स में इलाज के बाद भी अतिरिक्त फीस वसूली करने वाले अस्पतालों पर कार्रवाई शुरू हो गई है। मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के अधिकारियों ने बीकानेर के एक प्राईवेट अस्पताल में पहुंचकर छानबीन की तो चौंकाने वाले तथ्य सामने आये। यहां एक रोगी से कुछ दिन पहले ही फ्री इलाज के बावजूद आठ हजार रुपये वसूल लिए थे। बाद में ये राशि रोगी को वापस दिलाई गई। दरअसल मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के जाइंट सीईओ सौरभ स्वामी ने डॉक्टर तनवीर मालावत अस्पताल पहुंचे। यहां भर्ती एक रोगी का इलाज योजना के तहत फ्री हो रहा है। इसके बाद भी उससे आठ हजार रुपए वसूले गए थे। डीटीएम अस्पताल के सीसीयू में भर्ती सरदारशहर के इस रोगी की हृदय रोग से संबंधित एनजिओप्लास्टी फ्री की गई थी। भर्ती होने से चार दिवस पहले शुरुआती जांच के लिए 8000 रुपए व्यय हुए थे। जेसीईओ स्वामी ने बताया कि योजना के अंतर्गत भर्ती होने के 5 दिन पहले तथा 15 दिन बाद तक के सभी व्यय भी निशुल्क व कैशलेस शामिल है। इस प्रकार प्रबंधन से बात कर लाभार्थी को तत्काल 8000 रुपए गलत लिए गए। ये राशि रोगी को वापस दिलवाई गई। एम.एन. अस्पताल में दो रोगियों के नाम तो रिकार्ड में दर्ज थे लेकिन दोनों रोगी अस्पताल में नहीं थे। इन भर्ती रोगियों के नदारद होने पर जांच शुरू करने के आदेश दिए गए। निरीक्षण दल में शामिल योजना के संभाग नोडल अधिकारी नवल किशोर व्यास, कार्यक्रम अधिकारी बुद्धि वर्धन आजाद व डॉ आयुष वर्मा ने भर्ती रहकर इलाज ले रहे प्रत्येक मरीज की फाइल खंगाली। प्रत्येक लाभार्थी से गहन पूछताछ की और उपस्थित आमजन को योजना की जानकारी भी दी। इस दल ने दोनों अस्पतालों के बारे में जिला कलेक्टर नमित मेहता को रिपोर्ट दी। मेहता ने लापरवाही करने अथवा योग्य को सेवा निशुल्क ना देने वाले निजी अस्पतालों पर पेनल्टी चार्ज करने की बात कही।

घड़साना व अनूपगढ़ में कांग्रेस के प्रधान बनना तय : इंदौरा

अनूपगढ़, (कासं)। पंचायत समिति व जिला परिषद के चुनावों के मद्देनजर कांग्रेस पार्टी द्वारा टिकट वितरण की तैयारियों को लेकर स्थानीय व्यापार मंडल में बैठक का आयोजन किया।

बैठक में कांग्रेस पार्टी द्वारा नियुक्त किये गए संभाग प्रभारी व प्रदेश उपाध्यक्ष नसीम अख्तर व जिला प्रभारी प्रदेश सचिव जिया उर रहमान, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के राष्ट्रीय सचिव कुलदीप इंदौरा, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह मल्ली एवं घड़साना ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गोमती देवी रामकुमार टाक सहित बड़ी संख्या में पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। कुलदीप इंदौरा ने अपने संबोधन में कहा कि हजारों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता यहां पहुंचे हैं, जिससे यह निश्चित तौर पर स्पष्ट हो चुका है कि पंचायत समिति घड़साना व अनूपगढ़ में कांग्रेस के प्रधान बनना तय है। उन्होंने कहा कि जिस तरह से कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जोश है, जिला प्रमुख भी कांग्रेस का ही बनेगा।

दोनों प्रभारियों ने अपने संबोधन में कहा कि केन्द्र सरकार की जनविरोधी किसान, मजदूर, विरोधी नीतियों से आज हर वर्ग पीड़ित है। केन्द्र सरकार द्वारा आज हर सरकारी संस्था का निजीकरण किया जा रहा है। अपितु कांग्रेस पार्टी हमेशा किसानों, मजदूरों व छोटे दुकानदारों की हितेषी रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा गरीब मजदूर व छोटे व्यापारी वर्ग का भला सोचा है। इस बैठक में अनूपगढ़ विधानसभा के सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस के सदस्यों ने जिला परिषद व पंचायत समितियों के सदस्यों हेतु अपने समर्थकों के साथ प्रभारियों को आवेदन पेश किए। इस अवसर पर शैलेंद्र सिंह मल्ली, गोमती देवी रामकुमार टाक, भजनलाल कामरा, मनीराम सहारण, निर्मला गोदारा, दीवान चंद चुग, गोपाल डागला, हेतराम ज्यानी, हेतराम सिंगाठिया, गंगा विशन पूनिया, अमन चहल, कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

अनूपगढ़ में पंचायती राज चुनाव को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं की की बैठक को राष्ट्रीय सचिव कुलदीप इंदौरा ने संबोधित किया।

मतगणना को लेकर तीन शिक्षण संस्थाओं का अधिग्रहण

श्रीगंगानगर, (कासं)। पंचायती राज आम चुनाव 2021 के दौरान जिले में जिला परिषद सदस्य व पंचायत समिति सदस्य चुनाव के लिए जिला मुख्यालय पर तीन शिक्षण संस्थाओं का अधिग्रहण किया गया है।

जिला कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी जाकिर हुसैन ने बताया कि मतदान दलों को प्रशिक्षण देने के लिए सेठ गिरधारी लाल बिहाणी पीजी कॉलेज श्रीगंगानगर का ऑडिटोरियम व 12 बडे कमरों का 30 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक के लिए, मतदान दल रवानगी के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविधालय गंगानगर का 4 दिसम्बर से 19 दिसम्बर तक तथा चुनाव सामग्री संग्रहण एवं मतगणना के लिए श्री गुरूनानक खालसा उच्च माध्यमिक विधालय एवं महाविधालय गंगानगर का 9 दिसम्बर से 22 दिसम्बर तक के लिए लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 160 के अन्तर्गत अधिग्रहण किया गया है।

खेत में बनी डिग्गी में गिरने से बुजुर्ग की मौत

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिले के रायसिंहनगर इलाके के समेजा थाना क्षेत्र के गांव भोमपुरा में खेत में बनी पानी की डिग्गी में डूबने से बुजुर्ग की मौत हो गई।

हादसे के दौरान बुजुर्ग ट्रैक्टर पर सवार था तथा पास के खेत तक पानी पहुंचाने के लिए ट्रैक्टर के जरिए पानी खींचा जा रहा था। हादसे का शिकार हुआ बुजुर्ग ट्रैक्टर चला रहा था। इसी दौरान हादसा हुआ और बुजुर्ग डिग्गी में गिर गया। एसएचओ करतार सिंह ने बताया कि गांव का रामेश्वर लाल (52) देर रात भोमपुरा इलाके में बने एक खेत में पानी की डिग्गी पर ट्रैक्टर चला रहा था। ट्रैक्टर को ट्यूबवैल से जोड़ा गया था जिससे कुछ दूर स्थित अन्य खेत तक पानी पहुंचाया जा सके। रामेश्वर लाल यह ट्रैक्टर चलाने में जुटा था। वह जहां ट्रैक्टर चला रहा था उसके एक तरफ मिट्टी का ढेर और दूसरी तरफ पानी की डिग्गी थी। बीच की खाली जगह पर वह ट्रैक्टर चलाकर पानी खींच रहा था।

वह ट्रैक्टर पर बैठा था। इसी दौरान ट्रैक्टर फिसला और यह डिग्गी में गिर गया। इससे ट्रैक्टर सवार रामेश्वर लाल भी डिग्गी में गिर गया और उसकी मौत हो गई।

- खेत में ट्यूबवैल से पानी खींचने के लिए चला रहा था ट्रैक्टर, अचानक डिग्गी में गिर गया

गांव भोमपुरा के खेत में जहां हादसा हुआ, उससे कुछ दूरी पर अन्य खेत तक ट्यूबवैल से पानी पहुंचाया जा रहा था। रात में जब रामेश्वर लाल ट्रैक्टर सहित डिग्गी में गिर गया तो कुछ दूरी पर स्थित खेत में पानी का प्रेशर घट गया। इससे पास के खेत में पानी लगा रहे किसान कारण जानने के लिए रामेश्वर लाल वाले खेत में गए। वहां टॉर्च की रोशनी से देखा तो ट्रैक्टर के पहियों के निशान तो थे लेकिन ट्रैक्टर नजर नहीं आया। आसपास पता किया तो ट्रैक्टर डिग्गी में गिरने की जानकारी मिली। इस पर रामेश्वर लाल को भी डिग्गी में ढूंढा गया। कुछ देर बाद डिग्गी में उसका शव मिला। खेत मालिक ने सुबह पुलिस को सूचना दी।

पम्पों को न्यूनतम स्टॉक रखना होगा

श्रीगंगानगर, (कासं)। जिला कलेक्टर एवं निर्वाचन अधिकारी जाकिर हुसैन ने निर्वाचन जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्य के सुचारू संचालन के लिए पंचायज समिति व जिला परिषद सदस्यों के चुनाव के दौरान चुनाव कार्य में लगे वाहनों को सुगमता से पैट्रोल व डीजल एवं ऑयल आदि उपलब्ध हो, इसके लिए न्यूनतम स्टॉक सुरक्षित रखना होगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रत्येक पैट्रोल, डीजल पम्प फीलिंग स्टेशन अपने पास न्यूनतम एक हजार लीटर पैट्रोल, दो हजार लीटर डीजल तथा 200 लीटर ऑयल का स्टॉक सुरक्षित रखना होगा। सुरक्षित स्टॉक की बिक्री जिला मजिस्ट्रेट व डीएसओ द्वारा जारी परमिटों पर ही कर सकेंगे। प्रत्येक पम्प संचालक इस आदेश के प्रभावशील रहने तक पैट्रोल एवं डीजल पम्प ड्राई नहीं रहे, ऐसी व्यवस्था करेंगे।

जिले में स्थित प्रत्येक पम्प संचालक क्रेता को आवश्यक रूप से कैश मीमो जारी करेंगे। कैश मीमो में नाम, पता व वाहन का पंजीयन नम्बर अंकित करेंगे। यह आदेश केवल चौपहिया वाहनों पर ही लागू होंगे। ये आदेश 31 दिसम्बर तक प्रभावशील रहेंगे।

हनुमानगढ़ में वैक्सीनेशन आज

हनुमानगढ़, (कासं)। जिले में 30 नवम्बर को कोविड-19 वैक्सीनेशन आयोजित किया जायेगा।

आरसीएचओ डॉ. विक्रमसिंह ने बताया कि कई शहरों में कोरोना का संक्रमण बढ़ रहा है। ऐसे में सरकार द्वारा जल्द से जल्द राजस्थान के सभी निवासियों को कोविड की दोनों डोज लगवाने के लिए प्रयासरत हैं। निदेशालय से आमजन के लिए कोविड वैक्सीन निरंतर भिजवाई जा रही है, लेकिन जिले में अभी भी काफी संख्या में नागरिकों ने कोविड वैक्सीन की प्रथम व द्वितीय डोज नहीं लगाई है। उन्होंने कहा कि 18 वर्ष के अधिक आयु का कोई भी सीएचसी-पीएचसी पर जाकर वैक्सीन लगवा सकता है।

ट्रेन से कटा शव लेने गए पुलिस कर्मियों को कार ने टक्कर मारी

श्रीगंगानगर, (कासं)। शनिवार रात को करणपुर-श्रीगंगानगर ट्रेक पर ट्रेन के नीचे आने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। मृतक का शव को लेने गए पुलिस के जवानों पर एक कार चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए टक्कर मारकर घायल कर दिया।

घायल पुलिस कर्मियों को मेदांता में भर्ती करवाया गया। उनके पर्चा बयान पर गाड़ी के चालक पर लापरवाही से गाड़ी चलाने का मुकदमा दर्ज किया गया है। चालक को रात को ही शांति भंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया। सदर पुलिस ने शव को मौके पर पहुंचकर मोर्चरी में रखवाया। मृतक के भाई की रिपोर्ट पर मर्ग दर्ज की गई है। पोस्टमार्टम करवाया जायेगा।

एसएचओ कुलदीप चारण ने बताया कि गजसिंहपुर के निकट चक 2 बीबी ए निवासी 55 वर्षीय ओमप्रकाश नायक पुत्र प्रेमाराम 7 जैड भट्टा कॉलोनी में रहकर मजदूरी करता था। उसकी संदिग्ध परिस्थितियों में शनिवार रात पौन 11 बजे के करीब भट्टा कॉलोनी के पास ही ट्रेन के नीचे आने से मौत हो गई। ड्यूटी अधिकारी एएसआई राजेन्द्र स्वामी जाब्ते के साथ मौके पर गए और शव को ट्रैक से उठाकर जिला अस्पताल की मोर्चरी रखवाया। मृतक के भाई मोहनलाल ने आकर मर्ग दर्ज करवाई है। जब पुलिस घटनास्थल पर गई हुई थी, तब थाने के चालक जगदेव सिंह व कांस्टेबल सज्जन कुमार रोड पर सरकारी गाड़ी के पास खड़े थे। तभी कार चालक अमरीक सिंह ने लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए टक्कर मार दी। हादसे में दोनों कांस्टेबल घायल हो गए। इनको मेदांता अस्पताल में रात को ही भर्ती करवाया गया। इधर अमरीक सिंह को शांति भंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया है।

जल जीवन मिशन के तहत घर-घर कनेक्शन कार्य में गति लाई जायेगी : मेहता

बीकानेर, (कासं)। जिला कलेक्टर नमित मेहता ने कहा कि जल जीवन मिशन के तहत घर-घर कनेक्शन कार्य में गति लाई जाए तथा निर्धारित समय तक शत-प्रतिशत उपलब्धि सुनिश्चित की जाए।

मेहता सोमवार को जल जीवन मिशन की प्रगति समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने बताया कि अब तक जिले के 4 हजार 803 घरों में जल जीवन मिशन के तहत कनेक्शन किये गए हैं। जबकि 1 लाख 11 हजार 8 घरों को नल युक्त कनेक्शन से जोड़ना है। इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए दैनिक लक्ष्य निर्धारित करते हुए कार्य किया जाए। जिले के वंचित 368 विद्यालयों तथा 92 आंगनबाड़ी केन्द्रों में नल युक्त कनेक्शन प्राथमिकता से उपलब्ध करवाए जाएं।

उन्होंने कहा कि यह राज्य सरकार का महत्वपूर्ण अभियान है तथा उच्च स्तर पर इसकी नियमित समीक्षा होती है। इसके मद्देनजर इसके क्रियान्वयन में ढिलाई नहीं हो। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षण अभियंता बलबीर सिंह ने बताया कि जल जीवन मिशन के तहत जिले में 854 में से 832 गांवों के विलेज एक्शन प्लान तैयार कर लिए गए हैं। इसी प्रकार 621 गांवों में पानी समितियां तथा सभी 367 ग्राम पंचायतों में पंचायत बॉडी का गठन कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि आगामी दिनों में इसके क्रियान्वयन में और गति लाई जायेगी। बैठक में जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ओमप्रकाश विद्युत निगम के अधीक्षण अभियंता लाभ सिंह मान, वरिष्ठ भूजल वैज्ञानिक डॉ शंकर लाल सोनी, जिला एमएंडई सलाहकार (जेजेएम) योगेश बिस्सा मौजूद थे।

मेहता ने श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने मिशन की प्रगति की समीक्षा भी की। कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक के दौरान मेहता ने बताया कि जिले की बरसिंगसर, गाढ़वाला, लालमदेसर, पलाना, स्वरूपदेसर और उदयरामसर ग्राम पंचायतों में मिशन के तहत 30 करोड़ रुपए के 190 कार्य करवाए जाने हैं। इनमें से 155 कार्यों की स्वीकृति जारी कर दी गई हैं तथा 99 कार्य पूर्ण हो चुके हैं।

बीकानेर कलेक्टर नमित मेहता ने कलेक्ट्रेट सभागार में जल जीवन मिशन की प्रगति समीक्षा बैठक को संबोधित किया।

- अब तक जिले के 4803 घरों में जल जीवन मिशन के तहत कनेक्शन किये गए

'केमल इको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के एनआरसीसी के प्रयास'

बीकानेर, (कासं)। शुष्क क्षेत्र में उष्ट्र पालन का व्यवसाय इको-फ्रेंडली डवलपमेंट को बनाये रखने में महती भूमिका निभाता है। उष्ट्र प्रजाति से प्रतिबद्ध रूप से जुड़े इस केन्द्र के, केमल इको-टूरिज्म के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास, उष्ट्र प्रजाति के विकास एवं संरक्षण के दृष्टिकोण से निश्चित रूप से विशेष महत्वपूर्ण है। ये विचार आज राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र की विशिष्ट कमेटी के चेयरमैन डॉ. आर. के. सिंह, पूर्व कुलपति एवं निदेशक, भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जनगर एवं पूर्व निदेशक, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र हिसार ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर डॉ. सिंह के कर कमलों से केमल इको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए एनआरसीसी द्वारा निर्मित नयनाभिराम (1) जोधपुरी स्टोन पट्टिका पर पत्तियों की आकृति में रोशनी युक्त सौन्दर्यकरण बेल आकृति (2) जोधपुरी स्टोन निर्मित चलते हुए केमल पर सेंड युक्त लाईटिंग सेल्फी स्थलों का लोकार्पण किया गया। डॉ. सिंह ने केन्द्र निदेशक डॉ. साहू एवं एनआरसीसी परिवार को बधाई देते हुए यह अपेक्षा व्यक्त की है कि ऐसे प्रयासों से न केवल केन्द्र में भ्रमण हेतु पर्यटकों की रूचि बढ़ेगी बल्कि उष्ट्र पर्यटन व्यवसाय को एक नए आयाम में विकसित करने की सोच को बढ़ावा मिलेगा, जिससे ऊंटपालकों को आर्थिक लाभ हो सकेगा। केन्द्र के निदेशक डॉ. आर्तबन्धु साहू ने कहा कि ऊंट से जुड़ा यह अनुसंधान केन्द्र, अपनी वैश्विक पहचान रखता है।

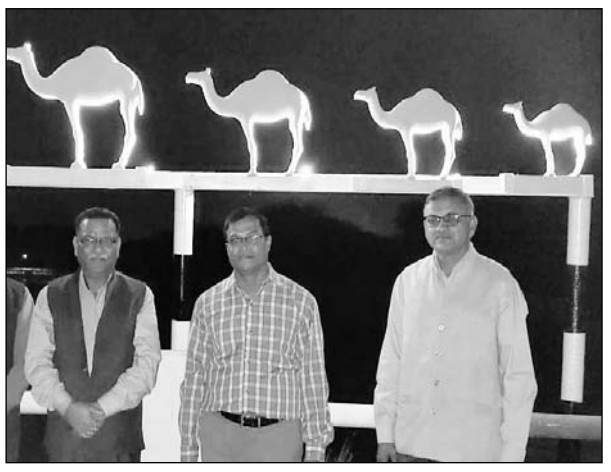

उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र बीकानेर में केमल ईको टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए नयनाभिराम स्थल का डॉ. आर. के. सिंह ने लोकार्पण किया।

‘मेरी काफ़ी आलोचना की गई है और मुझे जीवन भर रंगभेद का सामना करना पड़ा है। इसलिए यह अब मुझे परेशान नहीं करता है। यह दुर्भाग्य से हमारे देश में भी होता है।’

-एल शिवारामाकृष्णन

पूर्व भारतीय क्रिकेटर, रंगभेद को लेकर

आज का खिलाड़ी

रविचंद्रन अश्विन

भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने पहले टेस्ट मैच में न्यूजीलैंड की दूसरी पारी में टॉम लाथम को बोल्ड कर अपना 418वां अंतर्राष्ट्रीय विकेट लिया और इसके साथ ही वह भारत के महानतम ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह से आगे निकल गए। 35 वर्षीय अश्विन के इस मैच से पहले तक 413 विकेट थे। पहली पारी में तीन विकेट लेकर उन्होंने अपने विकेटों की संख्या 416 पहुंचा दी और कल दूसरी पारी में अपना पहला विकेट लेने के साथ ही उनके 417 विकेट हो गए थे। आज उन्होंने अपना दूसरा विकेट लिया और हरभजन से आगे निकल गए।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिस्टीन मोट्टरो ऐसी पहली महिला खिलाड़ी है जिसने एक ही ओलम्पिक में 6 स्वर्ण पदक जीते। उसने सियोल ओलम्पिक (1986) में तैराकी में यह रिकॉर्ड बनाया

रहाणे की लय को लेकर चिंतित नहीं, लेकिन आप उनके बल्ले से रन चाहेंगे : द्रविड

कानपुर, 29 नवंबर। भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य कोच राहुल द्रविड़ ने सोमवार को यहां कहा कि किसी और से ज्यादा टेस्ट उपकप्तान अजिंक्य रहाणे खुद बड़ा स्कोर खड़ा कर लय हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं और उनके लिए यह सिर्फ एक पारी की बात है।

नियमित कप्तान विराट कोहली की गैरमौजूदगी में टीम की कमान संभाल रहे रहाणे ने न्यूजीलैंड के खिलाफ यहां ड्रॉ टेस्ट में 35 और चार रन बनाये। इस साल 12 टेस्ट मैचों में उनका औसत 20 से भी कम का है।

द्रविड़ से जब पूछा गया कि क्या रहाणे की लय टीम के लिए चिंता का सबब है तो उन्होंने कहा, “ इसके लिए ज्यादा चिंतित होने की जरुरत नहीं है। जाहिर है कि आप चाहेंगे कि अजिंक्य आपके लिए अधिक रन बनाये, वह खुद भी ऐसा ही चाहेंगे।”

उन्होंने कहा, “ वह एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं और उन्होंने अतीत में भारत के लिए अच्छा प्रदर्शन किया है। वह उन लोगों में से एक है जिनके पास कौशल और अनुभव है। यह बस एक मैच की बात है , वह इसे जानते है और हम भी समझते है।”

मुंबई में खेले जाने वाले अगले टेस्ट मैच में कप्तान कोहली की वापसी होगी और ऐसे में क्या रहाणे को अंतिम 11 में जगह देने के लिए मैन ऑफ द मैच श्रेयस अय्यर को बाहर बैठाया जाएगा? द्रविड़ ने कहा, “ हमने तय नहीं किया है कि हमारी अंतिम एकादश क्या होगी और यह बहुत जल्दी है। कम से कम आज हमारा ध्यान इस मैच पर था। जब हम मुंबई जाएंगे तो हालात का जायजा लेंगे और लोगों की फिटनेस जांचेंगे. विराट कोहली भी साथ जुड़ेंगे।

भारत जीत से चूका, न्यूज़ीलैंड की आखिरी जोड़ी ने मैच कराया ड्रा

कानपुर, 29 नवंबर। लेफ्ट आर्म स्पिनर रवींद्र जडेजा (40 रन पर चार विकेट) और ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन (35 पर तीन विकेट) की कातिलाना गेंदबाजी की बदौलत न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत की झोली में लगभग आ चुका पहला टेस्ट मैच सोमवार को कम रोशनी और आखिरी कीवी जोड़ी के संघर्ष के चलते हार जीत के फैसले के बिना ड्रा समाप्त हो गया।

ग्रीनपार्क मैदान पर मैच के अंतिम दिन के पहले सत्र में भारतीय गेंदबाज को कोई सफलता नहीं मिली थी और मैच ड्रा की ओर खिसकता दिख रहा था मगर लंच और चायकाल के बीच मेजबान गेंदबाजों ने तीन अहम विकेट लेकर मैच को रोमांचक स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया जबकि चायकाल के बाद अश्विन और जडेजा ने सूझबूझ भरी गेंदबाजी कर मैच को भारत के पक्ष में पूरी तरह मोड़ दिया मगर पदार्पण टेस्ट खेल रहे रचिन रवीन्द्र 91 गेंदो पर 18 रनो की नाबाद पारी और 11वें नम्बर के बल्लेबाज एजाज पटेल (2 नाबाद, 23 गेंद) का विकेट भारतीय गेंदबाज अंत तक उखाड़ नहीं सके और भारतीय टीम दहलीज पर खड़ी जीत से दूर हो गयी।

क्रिकेट लीड भारत दो अंतिम कानपुर

भारत की पहली पारी के 345 रन के जवाब में न्यूजीलैंड की पहली पारी 296 रन पर सिमट गयी थी। 49 रन की बढ़त के साथ मेजबान टीम ने अपनी दूसरी पारी में सात विकेट पर 234 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा की और मेहमान टीम को जीत के लिये 284 रनो का लक्ष्य दिया था जिसके जवाब में खेल के अंत तक न्यूजीलैंड की टीम ने नौ विकेट पर 165 रन बना लिये थे। दोनो टीमों के बीच श्रृखंला का दूसरा और अंतिम मुकाबला मुबंई में खेला जायेगा।

इससे पहले न्यूजीलैंड ने अपने कल के स्कोर एक विकेट पर चार रन से आगे खेलना शुरू किया और पहले सत्र में बगैर कोई विकेट गंवाये 79 रन बना लिये थे। लंच के बाद पहली गेंद पर भारत को पहली सफलता नाइट वाच मैन विलियम समरवेल (36) के रूप में मिली जो उमेश यादव की गेंद पर लांग लेग पर खड़े शुभमन गिल के हाथों लपके गये। इस बीच सलामी बल्लेबाम टाम लाथम (52) ने मैच की दूसरी पारी में भी अर्धशतक बनाने का गौरव हासिल किया। अपनी अर्धशतकीय पारी में उन्होने 146 गेंद खेलकर तीन चौके लगाये। हालांकि लंच और चाय के बीच अश्विन ने लाथम और जडेजा ने नये बल्लेबाज रास टेलर (2) को आउट कर मेहमान टीम को दो और झटके दिये। लाथम का विकेट लेकर आश्विन हमवतन ऑफ स्पिनर हरभजन सिंह के 417 विकेटों से आगे निकल गए। चायकाल में न्यूजीलैंड का स्कोर चार विकेट पर चार विकेट पर 125 रन था।

चायकाल के बाद न्यूजीलैंड ने हेनरी निकल्स (1) को अक्षर पटेल ने पगबाधा आउट कर भारत को जीत की तरफ एक कदम और ढकेल दिया वहीं एक छोर पर डट कर खड़े कप्तान केन विलियम्स (24) को जडेजा ने अपनी गेंदों से खूब परेशान किया और आखिरकार उन्हे पगबाधा आउट कर मैच को सांस रोकने वाला बना दिया। वहीं बेहद सूझबूझ से गेंदबाजी कर रहे अश्विन ने विकेटकीपर बल्लेबाज टाम ब्लेंडल (2) को क्लीन बोल्ड किया। टाम ब्लेंडल के खाते में यह दो रन 38 गेंद खेलकर आये। बाद में जडेजा ने काइल जेमिसन (5) और टिम साउदी (4) को एलबीडब्लू आउट कर मैच को पूरी तरह भारत की झोली में डाल दिया था। मैच के अंतिम क्षणों में अंपायरों ने कम से कम छह बार लाइट मीटर से रोशनी की जांच की और यह भारतीय खेमे के साथ साथ प्रशंसकों के लिये भी मैच के ड्रॉ होने की अनहोनी होने का संकेत दे रही थी और आखिरकार कीवी पारी की 98वे ओवर की समाप्ति पर अंपायरों ने खराब रोशनी का हवाला देते हुये विकेट की गिल्लियां बिखेर दी और इसी के साथ भारत की जीत की उम्मीदों का भी तुषारापात हो गया।

स्कोर बोर्ड

भारत पहली पारी 345 रन
न्यूजीलैंड पहली पारी 296

भारत दूसरी पारी	रन	गेंद	4	6
सात विकेट पर 234 रन पारी घोषित				
लाथम बो अश्विन	52	146	3	0
यंग पगबाधा अश्विन	02	6	0	0
सोमरविले का शुभमन बो उमेश	36	110	5	0
विलियम्सन पगबाधा बो जडेजा	24	112	3	0
टेलर पगबाधा बो जडेजा	02	24	0	0
निकोल्स बो अक्षर	01	4	0	0
ब्लंडेल बो अश्विन	02	38	0	0
रवींद्र अविजित	18	91	2	0
जैमिसन पगबाधा बो जडेजा	05	30	0	0
साउदी पगबाधा बो जडेजा	04	8	1	0
पटेल अविजित	02	23	0	0

अतिरिक्त : 17
कुल : 98 ओवर में नौ विकेट पर 165 रन
गेंदबाजी : अश्विन 30-12-35-3, पटेल 21-12-23-1, यादव 12-2-34-1, इशांत 7-1-20-0, जडेजा 28-10-40-4

शुभमन गिल बो जैमिसन	01	3	0	0
पुजारा का ब्लंडेल बो जैमिसन	22	33	3	0
अजिंक्या रहाणे बो एजाज पटेल	04	15	1	0
श्रेयस का ब्लंडेल बो साउदी	65	125	8	1
जडेजा पगबाधा बो साउदी	00	2	0	0
आश्विन बो जैमिसन	32	62	5	0
रिधिमान साहा अविजित	61	126	4	1
अक्षर पटेल अविजित	28	67	2	1

अतिरिक्त : 04
कुल : 81ओवर में सात विकेट पर 234 रन पारी घोषित
गेंदबाजी:-टिम साउदी 22-2-75-3, काइल जैमिसन 17-6-40-3, एजाज पटेल 17-3-60-1, रचिन रवींद्र 9-3-17-0, सोमरविले 16-2-38-0

भारत के दक्षिण अफ्रीका दौरे पर सीएसए प्रमुख ने कहा: सब कुछ पटरी पर है

जोहानसबर्ग, 29 नवम्बर। क्रिकेट साउथ अफ्रीका की भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के साथ सकारात्मक बातचीत चल रही है और उन्हें भरोसा है कि भारत का दौरा प्लान के मुताबिक होगा। हालांकि देश के शीर्ष महामारी वैज्ञानिकों में से एक डॉक्टर सलीम अब्दुल करीम ने उम्मीद जताई है कि देश में इस सप्ताह के अंत तक 10,000 से ज़्यादा केस रोज के आने शुरू होने लगेंगे। सीएसए ने बीसीसीआई को गोटंग और द वेस्टर्न केप में होने वाले बायो बबल माहौल को लेकर संतुष्टि दी है। सीएसए के कार्यकारी सीईओ फ़ोलेक्सी मोसेकी ने कहा, ''हमारी बीसीसीआई के साथ बातचीत चल रही है और वह यहां आने के लिए उत्सुक हैं। हमारी सरकार हमारी मदद करना चाहती है और हम अपने भारतीय समकक्षों को आश्वस्त करना चाहते हैं कि सब कुछ पटरी पर है।'' गोटंग प्रांत में पहला और दूसरा टेस्ट खेला जाना है और यहीं पर सबसे ज़्यादा केस देखने को मिल रहे हैं और उम्मीद है आने वाले समय में द वेस्टर्न केप में दिखने लगेंगे। सीएसए ने पिछले साल गर्मियों में श्रीलंका और पाकिस्तान की सफलता पूर्वक मेज़बानी की थी और ऑस्ट्रेलिया की मेज़बानी करने की भी तैयारी कर रहे थे। लेकिन द वेस्टर्न केप ज़्यादा सफल नहीं रहा है। पिछले साल दिसंबर में इंग्लैंड ने अपने केपटाउन के होटल में कोविड केस निकलने के बाद दौरे को रद्द कर दिया गया था। सीएसए ने तब से बबल को और सख्त किया है, जहां खिलाड़ियों को बिना किसी कारण के होटल से बाहर जाने की इजाज़त नहीं थी।

मोसेकी ने कहा, ''हमने दो बायो बबल बनाने की तैयारी की थी। हमने इंग्लैंड दौरे से बहुत कुछ सीखा है। जब हम इस दौरे की तैयारी कर रहे थे तो हमने मैचों की संख्या को देखते हुए गोटंग और केप टाउन के लिए तैयारी की है। प्लान यही है कि जोहानसबर्ग से केपटाउन तक चार्टर फ्लाइट का इंतज़ाम होगा। इस नए वेरियंट के आने से पहले भी यही प्लान था।'' जहां तक चीज़े अभी तक पहुंची हैं, सीएसए ने अभी तक दौरे को कहीं और या किसी ओर समय कराने का प्लान नहीं बनाया है। इसकी जगह, उम्मीद यह है कि भारत से सीरीज़ सही समय पर होगी और इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया की सीरीज़ नहीं होने से हुए नुकसान की भरपाई की जाएगी। मोसेकी ने कहा, ''अगर यह दौरा नहीं होता है, तो इससे हम एक खराब स्थिति में पहुंच जाएंगे। हमें कुछ प्रोग्राम रोकने पड़ेंगे। हम एक या दो सालों में एक अलग स्थिति में पहुंच जाएंगे।''

नए कोरोना वैरिएंट से चिंतित फिलेंडर स्वदेश लौटे

चटगांव, 29 नवंबर। पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम के गेंदबाजी सलाहकार वर्नोन फिलेंडर यहां जारी बंगलादेश के दौर के बीच ही दक्षिण अफ्रीका लौटेंगे।

फिलेंडर ने दक्षिण अफ्रीका में नए कोरोना वायरस वैरिएंट के कारण यहां जाने वाली उड़ानों पर लग रहे प्रतिबंध के चलते बंगलादेश के खिलाफ मौजूदा टेस्ट मैच के चौथे दिन सोमवार को चटगांव से दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरने का फैसला किया। समझा जाता है कि फिलेंडर को वैसे भी बंगलादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के अंत में स्वदेश लौटना था, लेकिन अब हवाई यात्रा को लेकर बिगड़ती स्थिति के कारण उन्हें अपनी योजना बदलनी पड़ी है।

उल्लेखनीय है कि पश्चिमी अफ्रीका में पाए गए कोरोना वायरस के ऑमिक्रोन वैरिएंट ने पहले ही दक्षिण अफ्रीका में क्रिकेट को प्रभावित कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका और जिम्बाब्वे में हो रहा महिला विश्व कप 2022 का क्वालिफायर टूर्नामेंट भी रद्द कर दिया गया है। यहां तक कि नीदरलैंड और दक्षिण अफ्रीका की वनडे सीरीज भी रद्द हो गई है।

वहीं भारत ए टीम इस समय दक्षिण अफ्रीका में है और उसका दौरा फिलहाल आगे बढ़ने के लिए तैयार है। भारत की सीनियर पुरुष टीम भी अगले महीने की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका के लिए उड़ान भरने वाली है, जहां वह मेजबान दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन टेस्ट, तीन वनडे और चार टी-20 मैच खेलेगी, हालांकि इस दौरे को लेकर भी अभी संदेह बना हुआ है।

पाकिस्तान को जीत के लिए 93 रन की जरूरत

चटगांव, 29 नवम्बर। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शाहीन आफरीदी (32 रन पर पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी से पाकिस्तान ने बंगलादेश को पहले क्रिकेट टेस्ट मैच के चौथे दिन सोमवार को दूसरी पारी में 157 रन पर समेट दिया। पाकिस्तान को जीत के लिए 202 रन का लक्ष्य मिला जिसका पीछा करते हुए पाकिस्तान ने अपने सलामी बल्लेबाजों के बीच 109 रन कीओपनिंग साझेदारी के दम पर अपने लिए जीत की उम्मीद जगा ली है। मैच में एक दिन का खेल शेष है और पाकिस्तान को अभी जीत के लिए 93 रन की जरूरत है। बंगलादेश को पहली पारी में 44 रन की बढ़त हासिल हुई थी लेकिन दूसरी पारी में बंगलादेश ने लड़खड़ाती शुरुआत करते हुए अपने चार विकेट मात्र 39 रन तक गंवा दिए थे और आज चौथे दिन उसकी पारी 157 रन पर सिमट गयी। पहली पारी में शतक बनाने वाले लिटन कुमार दास ने दूसरी पारी में भी जज्बा दिखाया और 89 गेंदों में छह चौकों की मदद से सर्वाधिक 59 रन बनाये। आफरीदी ने 15 ओवर में 32 रन देकर पांच विकेट झटके जबकि अपना तीसरा मैच खेल रहे ऑफ स्पिनर साजिद खान ने 33 रन पर तीन विकेट और तेज गेंदबाज हसन अली ने 52 रन पर दो विकेट लिए। 202 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पाकिस्तान के ओपनरों आबिद अली और अब्दुल्लाह शफीक ने टीम को ठोस शुरुआत दी और स्टंप्स तक ओपनिंग साझेदारी में 109 रन जोड़ डाले।

निसंका का अर्धशतक, श्रीलंका की ठोस शुरुआत

गाले, 29 नवम्बर । पथुम निसंका (नाबाद 61) के शानदार अर्धशतक से श्रीलंका ने वेस्ट इंडीज के खिलाफ दूसरे क्रिकेट टेस्ट के खराब मौसम से प्रभावित पहले दिन सोमवार को 34.4 ओवर में एक विकेट के नुकसान पर 113 रन बना लिए। निसंका और कप्तान दिमुथ करुणारत्ने ने पहले विकेट के लिए 106 रन की शतकीय साझेदारी की। करुणारत्ने 90 गेंदों में छह चौकों की मदद से 42 रन बनाकर रोस्टन चेज को उनकी गेंद पर ही कैच थमा बैठे। निसंका ने 109 गेंदों पर नाबाद 61 रन में चार चौके और एक छक्का लगाया। निसंका के साथ ओशादा फ़र्नांडो 10 गेंदों में दो रन बनाकर क्रीज पर हैं।

समय होता तो मैच ख़त्म कर देते : अश्विन

कानपुर, 29 नवम्बर। भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने न्यूज़ीलैंड के खिलाफ पहला टेस्ट मैच पांचवें और अंतिम दिन सोमवार को ड्रा हो जाने के बाद कहा कि हम चीज़ों को नियंत्रण में रख रहे थे और अच्छी जगह पर गेंदबाज़ी कर रहे थे। हम जानते थे कि अगर हमारे पास समय होता तो हम मैच को ख़त्म कर देते। लेकिन इस पूरे टेस्ट मैच में यही सिलसिला रहा है और ख़राब रोशनी के कारण खेल जल्दी समाप्त हुआ है।

आश्विन ने मैच के बाद कहा ,टेस्ट क्रिकेट में आपको सिर्फ़ चार ओवर गेंदबाज़ी नहीं करनी होती। यह एक लंबा प्रारूप है और मैं इसे खेलते रहना चाहता हूं। हरभजन सिंह से आगे जाना एक अच्छी बात है। जब से राहुल भाई कोच बने हैं, उन्होंने यही कहा है कि आप जितने भी रन बना लो या विकेट ले लो, 10 साल बाद आपको यह याद नहीं रहेगा, सिर्फ़ यादें रह जाएगी। ग्रीन पार्क की पिच के लिए ऑफ स्पिनर ने कहा,हमेशा पिच के बारे में सवाल उठाए जाते है लेकिन अंतिम सेशन के आख़िरी ओवर तक मैच का जाना एक अच्छी बात है। एक नया खिलाड़ी आकर इस तरह से मैच बचाता है वह बहुत अच्छी बात है। टेलएंडरों को आउट करना आसान नहीं होता।

श्रीलंका महिला टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव

हरारे, 29 नवम्बर। श्रीलंका महिला क्रिकेट टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव पायी गयी हैं। श्रीलंका क्रिकेट ने रविवार को बताया कि ज़िम्बाब्वे में विश्व कप क्वालीफ़ायर में हिस्सा लेने वाली श्रीलंका महिला टीम की छह खिलाड़ी कोरोना पॉज़िटिव पाई गई हैं। दक्षिण अफ्रीका में कोरोना का नया वेरियंट पाए जाने के बाद शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने ज़िम्बाब्वे में चल रहे क्वालीफ़ायर टूर्नामेंट को रद्द कर दिया था। हालांकि अभी यह सामने नहीं आया है कि पॉज़िटिव पाई गईं खिलाड़ी ओमिक्रॉन वेरियंट से संक्रमित हैं या नहीं। वेस्टइंडीज़ बनाम श्रीलंका का मुक़ाबला, श्रीलंका सहायक स्टाफ़ के सदस्य के कोविड पॉज़िटिव पाए जाने के बाद रद्द कर दिया गया था। इसी के बाद आईसीसी ने क्वालीफ़ायर को रद्द करने का फ़ैसला किया। श्रीलंका क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ऐश्ली डीसिल्वा ने बताया कि टीम अभी भी ज़िम्बाब्वे में है और उन्हें जल्द से जल्द वापस श्रीलंका लाया जाएगा। जो खिलाड़ी पॉज़िटिव पाई गईं हैं, उन्हें तब तक वहीं रहना होगा जब तक उनका टेस्ट निगेटिव नहीं आ जाता है। डॉक्टर टीम के साथ थे, जो उनकी देखरेख के लिए वहां मौजूद रहेंगे। टीम में जो खिलाड़ी संक्रमित नहीं हुईं हैं, वे जल्द ही वापस लौट सकती हैं। उन्हें श्रीलंका पहुंचने पर क्वारंटीन रहना होगा, क्योंकि श्रीलंकाई सरकार ने ओमिक्रॉन वेरियंट को देखते हुए अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिणी देशों से आने वाले यात्रियों के लिए यह ज़रूरी नियम बनाया है।

हमने जीतने की पूरी कोशिश की लेकिन वे बेहतर क्रिकेट खेले : रहाणे

कानपुर, 29 नवम्बर। भारतीय कप्तान अजिंक्या रहाणे ने पहला टेस्ट रोमांचक अंदाज में ड्रा समाप्त होने के बाद सोमवार को कहा कि हमने मैच जीतने के लिए पूरी कोशिश की, लेकिन उन्होंने बेहतर क्रिकेट खेला।

रहाणे ने मैच के बाद ग्रीन पार्क में कहा,जिस तरह आज हम दूसरे सत्र में वापस आए और विकेट चटकाये , वह बेहतरीन था। उमेश और इशांत दोनों ने बेहतरीन गेंदबाज़ी की और हमारे स्पिनर तो विश्व स्तरीय हैं हीं।

अक्षर और साहा कल अच्छी बल्लेबाज़ी कर रहे थे, उससे पहले श्रेयस और अश्विन की साझेदारी भी महत्वपूर्ण थी। हम कल चार ओवर गेंदबाज़ी करना चाहते थे, जो हमने किया। श्रेयस के लिए मैं बहुत ख़ुश हूं। वह घरेलू क्रिकेट में लंबे समय से अच्छा कर रहे थे।

कप्तान ने मुंबई में होने वाले दूसरे और अंतिम टेस्ट के लिए कहा कि विराट कोहली के मुंबई टेस्ट में आने के बाद जो भी बदलाव होगा, उस पर टीम प्रंबधन निर्णय लेगा।

भारतीय महिला फुटबॉल टीम चिली से 0-3 से हारी

मनौस, 29 नवंबर। भारतीय महिला फुटबॉल टीम यहां ब्राजील के मनौस में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल टूर्नामेंट के अपने दूसरे मैच में चिली से 0-3 से हार गई। टूर्नामेंट में यह उसकी लगातार दूसरी हार है।

मैच में हालांकि भारतीय टीम ने कड़ी चुनौती पेश की। चिली ने शुरुआती बढ़त हासिल करने के लिए 12वें मिनट में गोल का मौका दिया, लेकिन भारतीय गोलकीपर एम लिंथोइंगंबी देवी ने शानदार बचाव करते हुए गोल होने से रोका। इसके बाद हालांकि स्ट्राइकर मारिया उरुतिया ने 14वें मिनट में गोल दाग कर टीम को 1-0 की बढ़त दिलाई। इस गोल के साथ चिली ने खेल पर नियंत्रण बनाया और इसे अंत तक बरकरार रखा।

पहले हाफ में दूसरा गोल नहीं हुआ और चिली के पास 1-0 की बढ़त रही। भारतीय गोलकीपर लिंथोइंगंबी देवी के अच्छा बचाव करते हुए चिली के हर एक प्रयास को विफल किया। दूसरे हाफ में भारतीय टीम काफी आक्रामक और खतरनाक दिखी। परिणामस्वरूप 66वें मिनट में भारत ने मनीषा और सब्सीट्यूट खिलाड़ी डेंगमेई ठोस की मदद से गोल का मौका बनाया, जिसे चिली की गोलकीपर क्रिस्टियनी एंडलर ने विफल कर दिया। कुछ मिनट बाद भारत को फाउल के जरिए गोल दागने का मौका मिला, जिसे मनीषा ने खेला, लेकिन 30 वर्षीय एंडलर ने इसे भी रोक दिया। उल्लेखनीय है कि भारतीय टीम अब अपना आखिरी मैच गुरुवार को वैनेजुएला के खिलाफ खेलेगी।

सात्विक और चिराग की जोड़ी ने वर्ल्ड टूर फाइनल्स के लिए किया क्वालीफाई

दुनिया की 11वें नंबर की जोड़ी सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बुधवार से शुरू हो रहे सीजन के आखिरी बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल्स में जगह बना ली है। सात्विक और चिराग इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे थे। जापान के अकिरा कोगा और ताइची सेइतो के भी सेमीफाइनल में हारने के बाद उन्होंने जगह बनाई। उन्होंने जापानी जोड़ी को रोड टू बाली रेस में पछाड़ा। उन्हें कट में प्रवेश

दुनिया की 11वें नंबर की जोड़ी सात्विक साइराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने बुधवार से शुरू हो रहे सीजन के आखिरी बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर फाइनल्स में जगह बना ली है। सात्विक और चिराग इंडोनेशिया ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचे थे। जापान के अकिरा कोगा और ताइची सेइतो के भी सेमीफाइनल में हारने के बाद उन्होंने जगह बनाई। उन्होंने जापानी जोड़ी को रोड टू बाली रेस में पछाड़ा। उन्हें कट में प्रवेश के लिए सेमीफाइनल में दुनिया की नंबर एक जोड़ी मार्कस एफ गाइडोन और केविन एस को हराना था लेकिन वे 16-21, 18-21 से हार गएअकिरा और ताइची भी जापान के ताकुरो होकी और युगो कोबायाशी से हार गए जिससे भारतीय जोड़ी को जगह मिल गई। चिराग ने इंस्टाग्राम पर लिखा,हम पहली बार वर्ल्ड टूर फाइनल्स खेलेंगे। दुनिया की शीर्ष आठ जोड़ियों के खिलाफ खेलने को लेकर रोमांचित हूं।

रामकुमार रामनाथन ने जीता पहला एटीपी चैलेंजर खिताब

मनामा, 29 नवंबर। भारतीय टेनिस खिलाड़ी रामकुमार रामनाथन ने यहां एटीपी80 मनामा टूर्नामेंट में रूस के एवगेनी कार्लोवस्की को हराकर अपना पहला एटीपी चैलेंजर एकल खिताब जीता।

टूर्नामेंट में छठी वरीयता प्राप्त रामनाथन ने कार्लोवस्की को 68 मिनट तक चले मुकाबले में 6-1, 6-4 से हराकर खिताब अपने नाम किया। रामनाथन ने युगल स्पर्धा में अर्जुन काधे के साथ चुनौती दी, लेकिन उन्हें सेमीफाइनल में नूनो बोर्गेस और फ्रांसिस्को कैब्रल की पुर्तगाली जोड़ी से 6-3, 1-6, 10-7 से हार का सामना करना पड़ा। उन्होंने टूर्नामेंट के पहले दौर में यूक्रेन के व्लादिस्लाव ओरलोव, दूसरे दौर में क्रोएशिया के ड्यूज अजदुकोविक को हराया, जबकि क्वार्टर फाइनल में पुर्तगाल के गोंकालो ओलिवेरा को पछाड़ा और सेमीफाइनल में ग्रेट ब्रिटेन के जे क्लार्क को पराजित किया। उल्लेखनीय है कि 27 वर्षीय रामनाथन 2009 में पेशेवर टेनिस खिलाड़ी बने थे और तब से उन्होंने छह बार चैलेंजर फाइनल खेला, लेकिन हर बार हार का सामना किया। उन्होंने इस साल जुलाई में कैरी चैलेंजर्स में आखिरी चैलेंजर फाइनल खेला था।

बीसीसीआई ने सीवीसी मामले को सॉलिसिटर जनरल के पास भेजा

नयी दिल्ली, 29 नवंबर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की ओर से सीवीसी स्पोर्ट्स मामले को भारत के सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता के पास भेजे जाने की जानकारी सामने आई है, जो केंद्र सरकार से न जुड़े होने वाले मामलों में बोर्ड का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मौजूदा जानकारी के मुताबिक सॉलिसिटर जनरल ने इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है, लेकिन समझा जाता है कि उन्होंने बीसीसीआई को अन्य कानूनी राय लेने की सलाह दी है, हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की जा सकती है कि क्या बोर्ड सच में अन्य राय ले रहा है या नहीं, पर मामले से जुड़े जानकारों ने संकेत दिया है कि कानूनी विशेषज्ञों की एक समिति के साथ इस मसले को जल्द ही सुलझा लिया जाएगा।

समझा जाता है कि अगर इस मामले में थोड़ी और देर होती है तो मौजूदा आठ आईपीएल टीमों के लिए खिलाड़ियों के रिटेंशन की समय सीमा, जो कि 30 नवंबर है, को एक हफ्ते के लिए बढ़ाया जा सकता है, ताकि नई फ्रेंचाइजियों अहमदाबाद और लखनऊ दोनों को इतने ही दिनों में अपने खिलाड़ियों के चयन का समय मिल सके।

उल्लेखनीय है कि सीवीसी स्पोर्ट्स, जिसने 5625 करोड़ रुपए में अहमदाबाद फ्रेंचाइजी का स्वामित्व हासिल किया था, को अभी तक बीसीसीआई से मंजूरी पत्र प्राप्त नहीं हुआ है। यह भी समझा जाता है कि अमेरिकी कंपनी बीसीसीआई को यह समझाने की कोशिश कर रही है कि ब्रिटेन की सट्टेबाजी कंपनी में उसका निवेश अवैध नहीं है।

बीसीसीआई के सीवीसी स्पोर्ट्स मुद्दे को सॉलिसिटर जनरल के पास भेजने के पीछे आईपीएल के पूर्व अध्यक्ष ललित मोदी की टिप्पणियों को कारण माना जा रहा, जिसमें उन्होंने ब्रिटेन की एक सट्टेबाजी कंपनी में सीवीसी स्पोर्ट्स के निवेश पर सवाल उठाया था। परिणामस्वरूप अब गतिरोध इस बात को लेकर है कि क्या सीवीसी को स्वामित्व देने का निर्णय भारत में कानूनी जांच के योग्य होगा और क्या सीवीसी का ब्रिटेन की सट्टेबाजी कंपनी में निवेश इसमें बाधा है।

म्यांमार की एक गुफा में भगवान बुद्ध की 9000 मूर्तियां हैं। इनमें से कुछ तो सैंकड़ों साल पुरानी हैं। असल में यहाँ भक्तों ने भगवान बुद्ध को प्रसन्न करने के लिए मूर्तियाँ रखी हैं। पिंडाया क्षेत्र अपनी लाइम स्टोन गुफाओं के लिए विख्यात है। इन्हीं में से एक है उपरोक्त श्वे यू मिन केव (गोल्डन केव)। मूर्तियों में कोई एल्बैस्टर (सिलखड़ी) से बनी है, कोई सागवान की लकड़ी या मार्बल से, कोई पत्थर या सीमेंट से तो कोई कांसे से। गुफा के दरवाजे पर है श्वे यू मिन पैंगोडा। इस मठ के प्रार्थना कक्ष, अर्थात् ताज़ोंगा का निर्माण बौद्ध संत यू खांती ने किया था, जिसने मैन्डले हिल में भी कई धार्मिक स्मारक बनाए हैं। गुफा में भगवान बुद्ध की दो मूर्तियां ऐसी हैं जिनसे पसीना निकलता है। स्थानीय लोगों के अनुसार किसी कारण से सिर्फ इन दो मूर्तियों पर ही पानी नजर आता है, और श्रद्धालुओं में इनका पसीना पोंछने की होड़ लगी रहती है। गुफा के 490 फुट लम्बे पैंदल मार्ग के अंत में एक साइन पोस्ट के नीचे से लोग काली मिट्टी ले जाते हैं, यह जगह है ब्लैक क्ले हिलॉक। पिंडाया क्षेत्र की यही जगह ऐसी है जहाँ की मिट्टी काली है। लोग इसे पवित्र मानते हैं और इसका इस्तेमाल बुरी आत्माओं को भगाने के लिए करते हैं। गुफा में, छत से पानी टपकने के कारण चूने के कई स्तंभ, स्टलैंग्माइट, बन गए हैं, जिन पर प्रहार करने से घंटे की ध्वनि निकलती है। पिंडाया गुफा के नामकरण की कहानी भी बड़ी रोचक है। कहते हैं एक बार सात राजकुमारियाँ इस गुफा में आराम कर रही थीं कि तभी एक दैत्याकार मकड़ी ने दरवाजे को जाल से ढक दिया। राजकुमारियाँ मदद के लिए चिल्लाने लगीं तो उनकी आवाज वहां पास ही मौजूद एक राजकुमार ने सुन ली। इनमें से सबसे बड़ी व बुद्धिमान राजकुमारी ने कहा कि अगर राजकुमार ने उनकी मदद की तो सबसे छोटी व सबसे सुंदर राजकुमारी का विवाह उससे कर देंगे। राजकुमार ने तीर चलाकर मकड़ी को मार दिया, फिर वह चिल्लाया "पिंगु-या", अर्थात् मकड़ी मर गई। गौरतलब है कि म्यांमार में मकड़ी को पिंगु कहते हैं। इस कारण ही गुफा का नाम पिंगुया पड़ गया, बाद में इसे ही पिंडाया कहा जाने लगा।

गहलोत सरकार सुन नहीं रही इसलिए प्रियंका गांधी से मिलने यू.पी.पहुंचे राजस्थान के बेरोजगार युवा

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ के अध्यक्ष उपेन यादव ने कहा कि, हमने लखनऊ में कांग्रेस कार्यालय के बाहर भूख हड़ताल शुरु कर दी है

लखनऊ/नई दिल्ली, 29 नवम्बर। राजस्थान की राजधानी जयपुर के शहीद स्मारक पर कई दिनों से हड़ताल, शर्टलैस आंदोलन, मंत्रियों को गुलाब भेंट करने और भूख हड़ताल पर जाने के बाद अब राजस्थान के बेरोजगार युवकों ने लखनऊ में कांग्रेस कार्यालय के बाहर धरना शुरू कर दिया है। यह युवक कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी से मुलाकात की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि, राजस्थान की गहलोत सरकार उनकी नहीं सुन रही है।

राजस्थान बेरोजगार एकीकृत महासंघ (आर.बी.ई.एम.) के बैनर तले आयोजित इस धरना का उद्देश्य राजस्थान में अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार पर बेरोजगारों की मांगों को पूरा कराना है। इनकी प्रमुख मांग सरकारी नौकरियों में नियुक्ति है। इसके लिए भर्ती परीक्षाएं पहले ही आयोजित की जा चुकी हैं। राज्य सरकार की नौकरियों के लिए रिक्तियों की संख्या में वृद्धि और प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न पत्र लीक करने वालों के खिलाफ गैर-जमानती कानून तैयार करने की भी मांग कर रहे हैं।

धरने में शामिल होने पहुंचे आर.बी.ई.एम. के अध्यक्ष उपेन यादव ने कहा कि, हमने लखनऊ में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के बाहर धरने के बाद अब भूख हड़ताल शुरू कर दी है। हम पिछले 47 दिनों से जयपुर में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम प्रियंका गांधी से मिलना चाहते हैं। कांग्रेस ने घोषणा की है कि वह उत्तर प्रदेश में 20 लाख नौकरियां देगी। 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले हमने कांग्रेस को समर्थन दिया था, लेकिन हमसे किए गए वादे पूरे नहीं किए गए।

इससे पहले आरबीईएम ने कहा था कि वह प्रियंका गांधी समेत अपने नेताओं की रैलियों में उत्तर प्रदेश चुनाव में कांग्रेस का विरोध करेगी। उपेन यादव ने कहा कि राजस्थान में कांग्रेस की सरकार है। इसके बावजूद वे बेरोजगार युवाओं से किए गए वादों को पूरा नहीं कर रहे हैं और इसके बजाय उत्तर प्रदेश के लोगों से बड़े-बड़े वादे कर रहे हैं। पहले पार्टी को राजस्थान में किए गए अपने वादों को पूरा करना चाहिए।

- **उपेन यादव ने कहा कि, यू.पी. में कांग्रेस ने सरकार बनने पर 20 लाख नौकरियां देने का वादा किया है, इससे पहले राजस्थान में भी कुछ इसी तरह का वादा किया गया था, लेकिन अब सरकार अपने वादे को पूरी तरह से भूल गई है।**
- **उपेन यादव ने कहा कि, हम पिछले 47 दिनों से जयपुर में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। हम प्रियंका गांधी से मिलना चाहते हैं।**

मुख्यमंत्री गहलोत के नवनियुक्त सलाहकार विधायक दानिश अबरार 23 नवंबर को प्रदर्शनकारियों के पास पहुंचे और बातचीत की।

हालांकि, सहमति नहीं बनने पर प्रदर्शनकारी 26 नवंबर को उत्तर प्रदेश के लिए रवाना हो गए और लखनऊ पहुंचकर उन्होंने यू.पी. कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर उनके साथ बदसलूकी करने का भी आरोप लगाया।

बिना बहस के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सरकार ने कहा कि विपक्ष इन कानूनों को निरस्त करने की मांग करता आया है और सरकार अब इसके लिए तैयार है तो बहस की जरुरत नहीं है। सूत्रों ने बताया कि मोदी सरकार गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड के आगामी विधानसभा चुनावों को देखते हुए विपक्ष को कोई मौका नहीं देना चाहती, इसलिए वह शीतकालीन सत्र की अधिक इच्छुक नहीं है।

मोदी सरकार के नये भारत के लोकतंत्र का नमूना: उमर अब्दुल्ला

उमर अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि, संसद सत्र के पहले ही दिन बिना चर्चा के कृषि कानूनों की वापसी को हर कोई एक "नमूना" ही

श्रीनगर, 29 नवंबर (वार्ता)। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कृषि कानून वापस लेने के मुद्दे पर केंद्र सरकार पर हमला बोला है और कहा है कि संसद में बिना चर्चा कराये कृषि कानूनों को वापस लेने 'नये भारत के नये लोकतंत्र का नमूना' है।

उल्लेखनीय है कि 25 दिनों तक चलने वाले संसद के शीतकालीन सत्र के पहले दिन सोमवार को लोकसभा और राज्यसभा में बिना चर्चा कराए तीनों कृषि कानूनों को रद्द कर दिया गया।

उमर ने कहा कि, संसद सत्र जारी रहने के दौरान लोकसभा में बिना चर्चा कराये कृषि कानूनों को रद्द किया जाना 'नये भारत के नये लोकतंत्र का नमूना' है। उन्होंने ट्वीट कर कहा, बिना चर्चा के प्रस्ताव पास तथा बिना चर्चा के कानून रद्द। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कृषि संबंधी तीनों कानूनों को सरकार द्वारा संसद में वापस लेने को किसान और मजदूरों की जीत बताया है लेकिन कहा कि बिना चर्चा कराए ये तीनों कानून वापस लेकर सरकार ने यह साफ कर दिया है कि संसद में चर्चा से उसे डर लगता है।

गांधी ने यहां संसद भवन में संवाददाताओं से कहा कि वह जानना चाहते हैं कि सरकार ने जब कृषि संबंधी तीनों कानून वापस लिये तो इन पर चर्चा कराने से उसे किस बात का डर है। उनका कहना था कि सरकार जानती है कि उसने गलत काम किया है, इसलिए वह इस कानून को लेकर संसद में चर्चा कराने से भयभीत थी और उसने चर्चा नहीं कराने का रास्ता चुनकर इन कानूनों को वापस ले लिया। उन्होंने कहा कि वह जानते हैं कि सरकार ने किसानों की ताकत के सामने झुककर कृषि संबंधी तीनों कानून वापस लेने का फैसला लिया है लेकिन उनकी पार्टी इस मुद्दे पर चर्चा कराना चाहती थी ताकि यह भी पता चलता कि इस कानून को लाने के पीछे कौन सी ताकत थी।

वे तीन, चार पूंजीपति कौन हैं जो इन कानूनों के माध्यम से किसान की मेहनत पर हाथ मारने के लिए इस कानून के पीछे सख्ती से खड़ी थी। गांधी ने कहा कि इन कानूनों को वापस लेने की घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसानों से माफी मांगी थी। उनका कहना था कि प्रधानमंत्री का लोगों से माफी मांगने से स्पष्ट है कि उन्होंने गलती मान ली है कि सात सौ किसानों की मौत के लिए वही जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि मोदी अपनी गलती स्वीकार कर रहे हैं इसलिए उन्हें अब किसानों को मुआवजा देना चाहिए।

- **उमर अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि, अभी 25 दिन सत्र और चलेगा तो फिर सरकार को इतनी जल्दबाजी किस बात की थी।**
- **राहुल गांधी ने भी कहा है कि, केन्द्र सरकार को संसद में चर्चा कराये जाने से डर लगता है, कहीं उनकी पोल -पट्टी ना खुल जाये।**

यू-टर्न से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अंतिम दिन की घटनाओं से संबंधित है, जब विपक्ष के सांसदों ने विरोध किया था, सदन के वैल में चले गये थे, मेजों पर खड़े हो गए थे तथा सिक्योरिटी स्टाफ एवं मार्शलों के साथ उनकी धक्कामुक्की भी हो गई थी।

यह निलम्बन धारा 56 के तहत था लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि निलम्बन अगले सत्र तक नहीं पहुँचाया जा सकता। निलम्बन उसी दिन तक ही किया जाना चाहिये था, जिस दिन सत्र समाप्त हो रहा था।

यह भी कहा जा रहा है कि किन्हें निलंबित किया जाये तथा किन्हें छोड़ा जाये-इसका चयन सरकार ने सोच विचार कर किया है। उदाहरणार्थ, आप सांसद संजय सिंह, जो मेज पर नाचे थे, छोड़ दिये गये हैं। प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि उन्हें निलंबित क्यों नहीं किया गया?

जाहिर है कि सरकार विरोध के स्वर को तथा कृषि कानूनों की वापसी की प्रतिक्रिया को खामोश कर देना चाहती थी क्योंकि प्रधानमंत्री इन कानूनों की जबरदस्त तारीफ करते हुये, कह रहे थे कि यह भारत में अब तक का सबसे अच्छा काम है तथा ये कानून कृषि क्षेत्र में किस तरह से क्रांतिकारी परिवर्तन कर देंगे। सूत्रों का कहना है कि प्रधानमंत्री द्वारा लिये गये "यू टर्न" से बड़ी अप्रसन्नता है, क्योंकि सरकार के हर व्यक्ति से यह कहा गया था था कि वह चर्चा के बिना पारित हुये इन विधेयकों का हर तरह से बचाव करे, इनके पक्ष में ही बोले। ये विधेयक जिस तरह बिना चर्चा कराये पारित हुये थे, ठीक उसी तरह चर्चा कराये बिना ही आज वापस ले लिये गये। विपक्षी नेताओं ने निलम्बन की भर्त्सना की है तथा इस मुद्दे को रणनीति का रूप देने के लिये, कल विपक्ष की मीटिंग होगी। वे राज्यसभा के सभापति से कहेंगे कि निलम्बन वापस लिया जाये तथा अगर ऐसा नहीं किया जाता तो विपक्षी सम्पूर्ण विपक्ष का आव्हान करेंगी कि पूरे सत्र के लिये राज्यसभा का बहिष्कार किया जाये। क्या लोकसभा में ऐसी ही कार्यवाही होगी, यह भी अभी स्पष्ट नहीं है। लेकिन यह सुनिश्चित है कि इस निलम्बन के कारण संसद की गाड़ी पटरी से उतर जायेगी, क्योंकि विपक्ष इस पर उग्र प्रतिक्रिया देगा तथा वह हर संभव हथियार को काम में लेते हुये, इसका प्रतिकार करेंगे।

सैन्ट्रल विस्टा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने कहा कि यदि राज्यों ने प्रदूषण कम करने के लिए केन्द्र के एयर क्वालिटी कमीशन के दिशा-निर्देशों को पूर्णतया लागू नहीं किया तो उसे एक टास्क फोर्स के गठन के लिए बाध्य होना पड़ेगा। सी.जे.आई. ने मौखिक टिप्पणी की कि "यदि राज्य कार्रवाई करने में असमर्थ हैं तो हमें एक स्वतंत्र टास्क फोर्स के गठन को बाध्य होना पड़ेगा।

बैंच, जिसमें जस्टिस डी.वाय. चन्द्रचूड़ और जस्टिस सूर्यकांत भी शामिल थे, ने उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब को भी निर्देश दिए कि वे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में प्रदूषण को नियंत्रित करने के आदेश की अनुपालना के लिए शपथ-पत्र पेश करे।

बैंच ने कहा कि "हम प्रत्येक राज्य से यह पूछेंगे कि उन्होंने दिशा निर्देशों पर क्या क्रियान्विती की है, अन्यथा हमें एक स्वतंत्र टास्क फोर्स के गठन को बाध्य होना पड़ेगा।

उन पर क्रियान्विती करनी ही होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो टास्क फोर्स का गठन ही एकमात्र रास्ता है। बैंच ने टिप्पणी की कि "शीर्ष अदालत ने इस पर जोर दिया था कि निर्देश जारी किए जा चुके हैं और प्रशासन को उम्मीद थी कि सब कुछ अच्छा होगा, लेकिन हकीकत में इसका रिज़ल्ट ज़ीरो है।"

कैप्टन अमरिंदर सिंह की सांसद पत्नी परनीत कौर भी कांग्रेस छोड़ेंगी

सांसद परनीत कौर ने अपने ट्विटर अकाउन्ट की डी.पी. से कांग्रेस शब्द हटाया

चंडीगढ़, 29 नवम्बर। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह की पत्नी और सांसद परनीत कौर ने कांग्रेस छोड़ सकती हैं। परनीत कौर ने अपने पति कैप्टन अमरिंदर सिंह की नवगठित पार्टी पंजाब लोक कांग्रेस ज्वाइन करने के संकेत दिए हैं। उन्होंने अपन ट्विटर अकाउंट की डिसप्ले पिक्चर (डीपी) से कांग्रेस शब्द हटाते हुए कैप्टन फॉर 2022 लिख दिया है। परनीत कौर द्वारा ऐसा करना एक तरह पंजाब कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी द्वारा उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी करने का इनडायरेक्ट तरीके से जवाब देना भी माना जा रहा है।

पंजाब कांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी ने पिछले दिनों परनीत कौर को नोटिस जारी कर सात दिनों में जवाब देने को कहा था। हरीश चौधरी ने परनीत कौर पर कांग्रेस विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया था। बता दें कि कैप्टन अमरिंदर सिंह के कांग्रेस से इस्तीफा देने के बाद भी परनीत कौर ने चुप्पी साध रखी थी और कांग्रेस में बने रहने या फिर इसे छोड़ने को लेकर अब तक कुछ नहीं कहा है। इस दौरान वह पटियाला के पार्षदों की बैठक से लेकर कई जगह नजर आ चुकी है। इस दौरान पार्षदों ने कैप्टन के पक्ष में नारेबाजी की थी। इसके बाद पटियाला के मेयर संजीव शर्मा बिट्टू के खिलाफ पार्षदों के अविश्वास प्रस्ताव संबंधी मामले में भी परनीत कौर ने राज्य सरकार की समर्थक पार्षदों के खेमे की खिलाफत की। परनीत कौर की इन गतिविधियों के चलते पंजाब कांग्रेस प्रभारी हरीश चौधरी ने बीती 24 नवंबर को उन्हें नोटिस जारी किया था। नोटिस में कहा गया था कि स्पष्ट करें कि वह मीडिया में ऐसे संकेत क्यों दे रही हैं कि वह अपने पति के साथ हैं। अब परनीत कौर द्वारा अपने ट्वीटर अकाउंट से कांग्रेस शब्द हटाकर कैप्टन फार 2022 लिखकर सांसद द्वारा एक तरह से हरीश चौधरी द्वारा जारी नोटिस का अप्रत्यक्ष रूप से जवाब देना माना जा रहा है।

- **पंजाब कांग्रेस के प्रभारी हरीश चौधरी ने पिछले दिनों परनीत कौर को नोटिस जारी कर सात दिनों में जवाब देने को कहा था। हरीश चौधरी ने परनीत कौर पर कांग्रेस विरोधी गतिविधियों का आरोप लगाया था।**
- **परनीत कौर द्वारा ऐसा करना एक तरह से हरीश चौधरी द्वारा उन्हें दिए गए कारण बताओ नोटिस का इनडायरैक्ट जवाब भी माना जा रहा है।**

ट्विटर के सी.ई.ओ.जैक डॉर्सी ने अपना पद छोड़ने का ऐलान किया

न्यूयॉर्क, 29 नवम्बर। ट्विटर के चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर (सी.ई.ओ.) जैक डोर्सी ने अपना पद छोड़ने का ऐलान कर दिया है। डोर्सी के बाद अब पराग अग्रवाल को ट्विटर को नया सी.ई.ओ. नियुक्त किया गया है। डोर्सी ने कंपनी के कर्मचारियों को लिखे एक पत्र में कहा है कि, कंपनी को-फाउंडर और सी.ई.ओ. तक की भूमिका निभाने के बाद लगभग 16 साल के बाद मैंने फैसला किया है कि आखिरकार मेरे लिए जाने का समय आ गया है।

ट्विटर ने सोमवार को घोषणा की कि कंपनी के मुख्य तकनीकी अधिकारी पराग अग्रवाल जैक डोर्सी की जगह लेंगे। सोशल मीडिया कंपनी ने बयान में कहा कि निदेशक मंडल ने सर्वसम्मति से पराग अग्रवाल की सी.ई.ओ. और बोर्ड के सदस्य के रूप में नियुक्ति को तत्काल प्रभाव से मंजूरी दे दी है। पराग अग्रवाल पिछले एक दशक से ट्विटर से जुड़े हुए हैं। एक विशेष सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में ट्विटर जॉइन किया था और फिर चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर बने। ट्विटर से पहले पराग अग्रवाल माइक्रोसॉफ्ट, याहू और ए.टी. एंड टी. लैब्स के साथ काम कर चुके हैं।

- **ट्विटर ने पराग अग्रवाल को कंपनी का नया सी.ई.ओ. नियुक्त किया है।**

राजस्थान का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

फूल भेंट करना। इनके अलावा, यह ग्रुप भूख-हड़ताल भी कर चुका है। अन्य चीजों के अन्तर्गत इस ग्रुप की माँग है कि ज्यादा नौकरियाँ निकाली जायें तथा ऐसा कानून बनाया जाये कि प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्न पत्र लीक करने के जिम्मेदार लोगों की गैर-जमानती गिरफ्तारी की जा सके।

तमिलनाडु में बाढ़ से अब तक 59 लोगों की मौत

चेन्नई, 29 नवंबर (वार्ता)। तमिलनाडु में भारी बारिश के कारण दीवार गिरने से एक और व्यक्ति की मौत होने के बाद सोमवार को मृतकों की संख्या बढ़कर 11 हो गयी। राज्य में अभी तक बारिश और बाढ़ से कुल 59 लोगों ने जान गंवाई है।

राज्य के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री के.के.एस.एस.आर. रामचंद्रन ने बारिश की स्थिति की समीक्षा के बाद पत्रकारों से कहा कि कुड्डालोर जिले से मौत की खबर सामने आयी है।

उन्होंने कहा कि राज्य में पूर्वोत्तर मानसून की शुरुआत से अभी तक बारिश और बाढ़ से 59 लोगों की मौत हुयी है और मृतकों के परिजनों को सहायता के रूप में 2.36 करोड़ रुपये की राहत राशि दी गयी है। रामचंद्रन ने कहा कि 13 घायलों को 55900 रुपये की राशि सहायता के तौर पर दी गयी है। जानकारी के अनुसार, राज्यभर में अभी तक 5600 मुर्गे और 209 मवेशियों की मौत हुयी है और 1074 झोपड़ियां और 189 घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गये और 65 झोपड़ियां पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयीं।

उन्होंने कहा कि राज्य में 2783 मवेशियों की मौत के लिये मुआवजे के रूप में 2.84 करोड़ रुपये दिये गये हैं और 24810 क्षतिग्रस्त झोपड़ियों के लिये 10.17 करोड़ रूपये जारी किये गये हैं। प्रभावित परिवारों को मुआवजा देने के लिये सरकार त्वरित कदम उठा रही है। बारिश और बाढ़ से प्रभावित करीब 15000 से अधिक लोगों को तिरुवल्लूर, चेंगलपेट, कांचीपुरम, विल्लुपुरम, कुड्डालोर, नागपट्टिनम, तंजावुर, पुदुकोट्टई, पेरम्बलुर, अरियालुर, रानीपेट, थुतुकुडी, रामनाथपुरम, त्रिची, तिरुपट्टूर, तिरुवन्नामलाई और वेल्लोर जिलों के 182 राहत शिविरों में रखा गया था।

चेन्नई में 1503 लोगों को 13 राहत शिविरों में रखा गया था, जहां उन्हें भोजन और दवा मुहैया करायी गयी। मुख्यमंत्री एम. के स्टालिन चेंगलपेट और कांचीपुरम जिलों के बाढ़ प्रभावित इलाकों और शहर के कुछ इलाकों का दौरा किया। उन्होंने राहत शिविरों में जाकर लोगों को राहत सामग्री प्रदान की।

- **सोमवार को वर्षा जनित हादसों में 11 लोगों की मौत हो गई, जबकि 48 लोगों की मौत पहले ही हो चुकी है।**

भाजपा ने कैसे त्रिपुरा में सूपड़ा साफ किया...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भूमिका की निभाने की बड़ी व्याकुलता से तलाश कर रही थीं, ने अपनी उपस्थिति दर्शाने के लिए त्रिपुरा को लक्ष्य बनाया था।

ममता की मौजूदगी सिर्फ पश्चिम बंगाल में हैं और वर्ष 2024 के आगामी लोकसभा चुनावों में वे स्वयं को संयुक्त विपक्ष के चेहरे के रूप में देखना चाहती हैं। कथित चुनाव रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने उनके सपनों को पंख को पर दिए हैं।

दुर्भाग्य से उनके पंख औंधे मुंह आकर गिरे और चुनावी जीत के बाद वे फिर स्वयं को प्रधानमंत्री पद के दावेदारों के रूप में पेश करने की उम्मीद कर रही हैं।

कभी-कभी उन्हें प्रधानमंत्री बनने का भ्रम होता आया है। उन्होंने अपने विश्वस्त प्रशंसक डेरेक ओ'ब्रायन के जरिए यह विचार भी प्रस्तुत करवाया कि बदलाव के लिए "एक बंगाली को प्रधानमंत्री होना चाहिए।"

लेकिन इसे फलीभूत करने के लिए उन्हें पश्चिम बंगाल की अपेक्षा अन्य राज्यों में भी अपनी पार्टी की उपस्थिति दर्शाने की जरूरत है। उनकी पार्टी सिर्फ एक स्थानीय पार्टी है। एक राष्ट्रीय पार्टी की मान्यता प्राप्त करने के लिए उन्हें कम से कम कुछ अन्य राज्यों में उपस्थिति की जरूरत है। उन्होंने अपने प्रचंड अहं, यानी की प्रशांत किशोर के साथ विचार-विमर्श कर एक रणनीति बनाई थी, जिसमें उन्होंने सोचा कि त्रिपुरा एक सॉफ्ट टार्गेट है।

ममता का मानना था कि बंगालियों की उनके प्रति सतत निष्ठा को देखते हुए वे पश्चिम बंगाल के बाहर हर कहीं बंगालियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। त्रिपुरा के बंगाली उन्हें सत्ता में लाने के लिए बड़ी संख्या में वोट देंगे।

ममता बनर्जी अपनी पार्टी के पक्ष में लिखने के लिए बंगाल से सौ से अधिक पत्रकारों को साथ लेकर गई गई क्योंकि बंगाल में भी ऐसा ही कर रहे हैं। त्रिपुरा ने उनके विरूद्ध राज्य में राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के आरोप लगाकर उलझा दिया।

मुख्यमंत्री विप्लब देव भी तृणमूल कार्यकर्ताओं को अपने राज्य से बाहर खदेड़ने और उनकी गतिविधियों को अवरूद्ध करने में सक्रिय रहे हैं। शिकायतों से कम ही फायदा हुआ।

वास्तव में, विप्लब देब ने वैसे ही पैंतरे अपनाएं जैसे कि ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में अपनाए थे। तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के साथ वैसा ही सुलूक किया गया, जैसा कि पश्चिम बंगाल में भाजपा के साथ किया गया। त्रिपुरा भाजपा ने इस संदर्भ में केन्द्रीय नेतृत्व के दिशा-निर्देशों की अनदेखी तक की।

त्रिपुरा नगर पालिका चुनाव भाजपा के लिए कुछ सबक लेकर आए हैं। पार्टी यहां इतनी सीटें जीती हैं जितनी उसने कहीं भी नहीं जीती।

तृणमूल कांग्रेस ने नगर पालिका चुनावों में सीटें जीतने को लेकर एक मजबूत प्रयास किया था, लेकिन अंत में उसे एक ही सीट मिल सकी।

औंधे मुंह गिरी तृणमूल ने चुनाव में गड़बड़ी और हिंसा के आरोप लगाए हैं।

उसने यह भी दावा किया है कि पार्टी ने वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव ने पूर्व राज्य में अपना खाता खोल लिया है।

उसका मानना था कि स्थानीय पार्टी होने के कारण उसे प्रचण्ड विजय मिल सकती है क्योंकि उसे पूरी छूट मिलती है तथा वह चुनाव सुधार निर्णीत पड़ौसी पश्चिम बंगाल में केन्द्रीय नेतृत्व का भारी नेतृत्व कुछ विपरीत प्रतिक्रिया ही उत्पन्न कर सका।

त्रिपुरा में भाजपा का प्रदर्शन अन्य राज्यों के चुनावों के लिए निश्चित रूप से उत्साहवर्धक है। हौंसले को अब ऊंची उड़ान भरनी चाहिए।

राष्ट्रपति की सुरक्षा में तैनात 7 पुलिसकर्मी करोना पॉजिटिव

देहरादून, 29 नवम्बर (वार्ता)। उत्तराखंड के दो दिवसीय भ्रमण पर आए राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की सुरक्षा व्यवस्था में नियुक्त राज्य पुलिस के गढ़वाल परिक्षेत्र के सात कार्मिकों में करोना संक्रमण होने की पुष्टि होने के बाद उन्हें क्वारंटीन कर दिया गया है। इससे एक दिन पहले सेना के तीन जवानों में भी करोना का संक्रमण मिला था। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, राष्ट्रपति के ऋषिकेश गंगा तट पर आरती और उनके वहीं रात्रि विश्राम के कारण गढ़वाल परिक्षेत्र के विभिन्न जनपदों से पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई थी। इसलिये 250 कार्मिकों का कोविड-19 का परीक्षण किया गया। इनमें से सात के करोना संक्रमित होने की रिपोर्ट रविवार को मिली।

दोनों सदनों ने पांच ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सितम्बर 2020 में बने तीन विवादास्पद कानूनों को वापस लेने के लिये पेश किया गया था। लोकसभा अपरान्ह 2 बजे पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई।

यह विधेयक लोकसभा में पूर्वान्ह काल में ही पारित हो गया था तथा इसी प्रकार से राज्यसभा में यह अपरान्ह काल में पारित हो गया। कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह ने विधेयक पेश करते हुये कहा कि इस विधेयक पर चर्चा की कोई जरुरत ही नहीं है क्योंकि सत्तारूढ़ दल तथा विपक्षी दल- दोनों ही पक्ष कृषि कानूनों को वापस लिये जाने से सहमत हैं।

विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन के दौरान मरने वाले 700 किसानों का मुद्दा उठाया।

उन्होंने सरकार का मखौल उड़ाते हुये कहा कि उसे इन कानूनों को वापस लेने की अक्ल सवा साल बाद, अब जाकर आई है और भी इसलिये कि उसने हाल ही में हुये उपचुनावों में माहौल देख लिया था तथा सरकार को डर था कि इन कानूनों के चलते, एन.डी.ए. पाँच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनाव हार जायेगा।

उप सभापति हरिवंश ने खड़गे का भाषण बीच में ही रोक दिया, ताकि कृषि मंत्री संबंधित विधेयक पर चर्चा कराये बिना मतदान करा सकें। हरिवंश ने कहा कि खड़गे का जोर भी इसी बात पर था कि सभी सदस्य कृषि कानूनों की वापसी का स्वागत ही कर रहे हैं, विरोध कोई भी नहीं कर रहा है क्योंकि इनकी वापसी किसानों के हित में है।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने बहस कराये जाने से इंकार कर दिया, क्योंकि सदन में व्यवस्था नाम की चीज नहीं थी।

विपक्षी सदस्य ये नारे लगाते हुये "वैल" में चले गये थे कि दिल्ली की सीमाओं पर एक साल तक चले शांतिपूर्ण आंदोलन के दौरान मरने वाले किसानों को श्रद्धांजलि दी जाये।

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: घूघरा घाटी, जयपुर रोड, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स: 0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908